सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 22 अप्रैल, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 229, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

केरल में कांग्रेस जीती तो सीएम पद का चेहरा कौन होगा?

आनंद कोचुकुडी

अगर कांग्रेस राज्य में सत्ता में आती है तो केरल का मुख्यमंत्री कौन होगा। यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट यानी यूडीएफ में जीत की संभावना को देखते हुए यह सवाल केरल की राजनीतिक चर्चाओं में चल रहा है। एर्नाकुलम जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मोहम्मद शियास, जो विपक्ष के नेता वी. डी. सतीशन के करीबी हैं, ने यह कहकर विवाद शुरू कर दिया कि अगला मुख्यमंत्री एर्नाकुलम जिले से होना चाहिए यानी सतीशन। इसके बाद कांग्रेस के अलग-अलग गुटों के नेताओं ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया दी, जबकि सतीशन ने खुद इस टिप्पणी को हल्का करके दिखाया'।

इसके बाद कन्नूर के सांसद के सुधाकरन ने फेसबुक पर के. सी. वेणुगोपाल का समर्थन किया और सतीशन पर संगठनात्मक अनुभव की कमी का आरोप लगाया। इसके बाद केरल में वेणुगोपाल के कई समर्थकों ने सोशल मीडिया पर अपने नेता की तारीफ की। नतीजों की औपचारिक घोषणा में अभी दो हफ्ते से ज्यादा का समय है, लेकिन सतीशन, वेणुगोपाल और रमेश चेन्निथला सभी मुख्यमंत्री पद की दौड़ में जुट गए हैं।

कांग्रेस, इस बार अल्पसंख्यक समुदायों के अपने पक्ष में आने से उत्साहित होकर, राज्य में एक लंबी अवधि का फैसला लेना चाहती है। कांग्रेस के नजरिए से, इस समय केरल के लिए सबसे उपयुक्त मुख्यमंत्री शशि थरूर होंगे, क्योंकि वे लगभग सभी जरूरी शर्तें पूरी करते हैं।

लेकिन चुने हुए विधायकों को सांसदों जैसे थरूर या के. सी. वेणुगोपाल पर स्वाभाविक बढ़त मिलती है। इसलिए कांग्रेस हाईकमान के लिए ऐसे किसी व्यक्ति को चुनना मुश्किल होगा जिसे दो उपचुनावों का सामना करना पड़े। चयन सतीशन और चेन्निथला के बीच किसी संभावित समझौते पर निर्भर करेगा।

लेकिन किसी भी हालत में चेन्निथला पीछे नहीं हटेंगे। सतीशन भी बिना लड़ाई के नहीं हटेंगे। इसलिए अंत में कांग्रेस हाईकमान को ही फैसला लेना पड़ेगा। योग्यता की बात करें तो सतीशन का दावा मजबूत है। विपक्ष के नेता के रूप में उन्होंने आगे बढ़कर नेतृत्व किया और जमात-ए-इस्लामी से लेकर मार्क्सवादी दल छोड़ने वालों तक अलग-अलग ताकतों का गठबंधन बनाया।

लेकिन सतीशन की एक कमजोरी भी है। वे नायर सर्विस सोसाइटी यानी एनएसएस या श्री नारायण धर्म परिपालना यानी एसएनडीपी योगम के लिए स्वीकार्य विकल्प नहीं हैं।

कांग्रेस तभी भारतीय यूनियन मुस्लिम लीग यानी आईयूएमएल पर अपनी निर्भरता कम कर सकती है, जब वह हिंदू वर्ग को या कम से कम नायर वोट बैंक को फिर से अपने साथ जोड़ ले। यह भाजपा के राज्य में बढ़ते प्रभाव के कारण जरूरी हो गया है। हिंदू मतदाता कांग्रेस को छोड़कर हिंदुत्व पार्टी की ओर चले गए हैं। कई कांग्रेस नेता अनजाने में जमात-ए-इस्लामी जैसी भाषा का उपयोग करने लगे हैं। उदाहरण के लिए, 24 न्यूज पर एक पोस्ट चुनावी बहस में कांग्रेस के प्रवक्ता राजू पी. नायर ने कहा कि अल्पसंख्यक सांप्रदायिकता की तुलना बहुसंख्यक सांप्रदायिकता से नहीं की जा सकती। उन्होंने आरएसएस की आलोचना की लेकिन इस्लामवाद पर नरम रुख अपनाया। केरल में मार्क्सवादी दल ऐसा विरोधाभास दिखा सकते हैं लेकिन कांग्रेस नहीं। वे भूल रहे हैं कि यूडीएफ पारंपरिक रूप से ईसाई, नायर और मुस्लिम गठबंधन है, जिसमें हर वर्ग की अहम भूमिका है। नायर मुख्यमंत्री बनने से हिंदू वोट के और नुकसान की समस्या हल हो सकती है। लेकिन इसके बावजूद पार्टी को तिरुवनंतपुरम कॉर्पोरेशन में अपनी स्थिति मजबूत करनी होगी।

तिरुवनंतपुरम शहर में नायर समुदाय का दबदबा है। और उनमें से कई खुद को गर्वित हिंदू मानते हैं, जबकि राज्य के बाकी हिस्सों में लोग अपनी पहचान को कम दिखाते हैं।

हाल ही में वे भाजपा को वोट दे चुके हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उन्हें कांग्रेस वापस नहीं ला सकती। उनमें से कई अभी भी खुले और उदार राजनीतिक सोच रखते हैं। नायर मतदाताओं में भरोसा जगाने के लिए कांग्रेस को ऐसे नेता को आगे रखना होगा जो उनके नेता के रूप में भी दिखे और ईसाई और मुस्लिम समुदायों के लिए भी स्वीकार्य हो।

इसके लिए सबसे उपयुक्त नाम के. मुरलीधरन हो सकते हैं, जो के करुणाकरण के बेटे हैं। करुणाकरण को केरल का हिंदू हृदय सम्राट कहा जाता था, लेकिन वे पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष सोच वाले व्यक्ति भी थे।

मुरलीधरन कठिन वट्टियूरकावु सीट से चुनाव लड़ रहे हैं, जहां उनका मुकाबला मौजूदा सीपीआई (एम) विधायक वी. के. प्रशांत और भाजपा की आर. श्रीलेखा के साथ त्रिकोणीय है। 68 साल की उम्र में मुरलीधरन अभी भी अपने राजनीतिक जीवन के चरम पर हैं, हालांकि वे मुख्यमंत्री पद के प्रमुख दावेदारों में शामिल नहीं हैं।

कांग्रेस ने अपना हिंदू वोट बैंक वामपंथ और भाजपा को तब खोना शुरू किया जब 2005 में के. करुणाकरण पार्टी से बाहर चले गए और बाद में कांग्रेस में वापस आ गए, लेकिन उनके बेटे मुरलीधरन को 2010 में उनके निधन के बाद ही पार्टी में वापसी का मौका मिला। तब केपीसीसी अध्यक्ष रमेश चेन्निथला ने उन्हें पार्टी में वापस आने से रोके रखा।

केरल में स्थानीय निकाय चुनाव से पहले सीपीआई(एम) ने नरम हिंदुत्व की नीति अपनाई, क्योंकि उसका एझावा वोट बैंक लोकसभा चुनाव में भाजपा की ओर जा रहा था। इसी पृष्ठभूमि में ग्लोबल अयप्पा सम्मेलन हुआ, लेकिन सबरीमाला सोना चोरी कांड ने इसकी चमक कम कर दी। इसके बाद दो तरह के नाराज हिंदू मतदाता सामने आए।

पहला वर्ग चाहता था कि पिनराई विजयन को हराया जाए और इसके लिए वह किसी भी ऐसे दल को वोट देने को तैयार था, जो उन्हें हरा सके, और इस मामले में वह कांग्रेस थी। दूसरा वर्ग, विजयन से नाराज होने के बावजूद, वामपंथ को इसलिए वोट देना चाहता था ताकि यूडीएफ की सरकार न बन सके, क्योंकि उन्हें इसमें आईयूएमएल गठबंधन से डर था।

मुरलीधरन का चयन रमेश चेन्निथला के लिए बहुत मुश्किल होगा, जिनका 2011 में भी दावा था। लेकिन यह भी संदेह है कि क्या चेन्निथला की राजनीति शैली अब केरल में पुरानी हो चुकी है। इस बीच के सी वेणुगोपाल कथित तौर पर अपना दांव इस बात पर लगा रहे हैं कि चेन्निथला और सतीशन के बीच समझौता नहीं होगा, जिससे संसदीय दल में उनके पक्ष में संख्या बल रहेगा। दिल्ली में कई कांग्रेस दिग्गज भी राहुल गांधी को उनके करीबी के प्रभाव से मुक्त कराने के लिए उन्हें केरल भेजना चाहेंगे।

केरल की राजनीति में कांग्रेस को पांच साल बाद भी प्रासंगिक बने रहने के लिए प्रदर्शन करना होगा और सिर्फ अल्पसंख्यक एकजुटता पर निर्भर नहीं रहना होगा। कई राज्यों में वह केवल इसी पर टिक गई है। उसे वह हिंदू वोट बैंक वापस लाना होगा जो उसने भाजपा को दे दिया था।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

शरद की सुबह

हँसी का रंग हरा होता है
जहाँ-जहाँ भी हरापन है
तेरे ही खिलखिलाने की अनुगूँज है वहाँ-वहाँ
कल्पना का रंग होता है आसमानी
जहाँ तक पसरा हुआ है आसमान
तेरी कल्पनाओं के दायरे में आता है...
ज़िद का रंग होता है बहुत गहरा
इतना कि एक बार जिस चीज़
की रट लगा लेती है तू
हमारी किसी भी समझाइश का रंग
चढ़ता ही नहीं उस पर
और रोने का रंग...?
वह तो किसी रंग जैसा
होता ही नहीं
क्योंकि जब रोती है तू
रंगों के चेहरे पड़ जाते हैं फीके
रंग जो हमेशा
भरपूर चटखीलेपन में
जीना चाहते हैं
चाहते हैं पृथ्वी भर हरापन
क्योंकि तेरी हँसी का रंग
हरा होता है।

- हेमंत देवलेकर

संघ उवाच, विज्ञान और धर्म दोनों से नहीं मिली शांति

मोहन भागवत बोले- राजा से विज्ञान तक सब मॉडल फेल

चीफ ने कहा-दुनिया अब भारत के ज्ञान से उम्मीद लगा रही

अगरतला (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने मंगलवार को कहा कि 2000 साल तक शासन, धर्म और विज्ञान के अलग-अलग प्रयोगों के बाद अब दुनिया भटक गई है और भारत के ज्ञान की ओर देख रही है। उन्होंने यह बात त्रिपुरा के मोहनपुर में धार्मिक कार्यक्रम में कही। भागवत मां सौंदर्य चिन्मयी मंदिर के प्रतिष्ठा और कुंभाभिषेक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

भागवत ने कहा कि पहले सत्ता राजा को दी गई, लेकिन बाद में राजा ही जनता का शोषण करने लगा। इसके बाद लोगों ने भगवान को सर्वोच्च मानकर धर्म बनाए, लेकिन इससे भी खून-खराबा नहीं रुका। विज्ञान के दौर में भी मानव की समस्याएं खत्म नहीं हुईं। लोगों ने कहा कि हम वैज्ञानिक हैं, जब तक भगवान लैब में नहीं दिखेगा, हम नहीं मानेंगे। इसके बाद विज्ञान का दौर आया। कई सुविधाएं और आराम मिले, लेकिन संतोष नहीं आया। आज भी दुनिया में दुख है, परिवार टूट रहे हैं, अपराध बढ़ रहे हैं। युद्ध शुरू होते हैं तो रुकते नहीं। विकास जितना बढ़ रहा है, पर्यावरण उतना ही नष्ट हो रहा है। अब 2000 साल के इन प्रयोगों के बाद दुनिया भटक रही है और भारत के ज्ञान की ओर उम्मीद से देख रही है। उन्होंने इसे भारत का कर्तव्य बताया और कहा कि यही भारत के जीवन का उद्देश्य है। कार्यक्रम में त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा और अन्य गणमान्य लोग भी मौजूद थे।

27 को एमपी विधानसभा का विशेष सत्र

नारी शक्ति वंदन पर होगी चर्चा, अधिसूचना जारी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश विधानसभा का विशेष सत्र 27 अप्रैल को बुलाया गया है। विधानसभा सचिवालय की ओर से इसे लेकर अधिसूचना जारी कर दी गई है। इस विशेष सत्र में 'नारी शक्ति वंदन' से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की जाएगी।

इससे पहले रविवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विशेष सत्र बुलाने की जानकारी दी थी। उन्होंने कहा था कि महिलाओं से जुड़े इस महत्वपूर्ण विषय पर विधानसभा में विस्तृत चर्चा की जाएगी।

गौरतलब है कि इससे पहले सोमवार को भोपाल में भाजपा द्वारा 'नारी शक्ति वंदन' के समर्थन में आक्रोश रैली भी निकाली गई थी। इस रैली के माध्यम से पार्टी ने महिलाओं के अधिकारों के समर्थन में अपनी बात रखी।

पारिवारिक संस्कृति व प्रेम, शांति, सद्भावना रथ को मुख्यमंत्री ने दिखाई हरी झण्डी

प्रेम, शांति और विश्व बंधुत्व का संदेश लेकर गांव-गांव तक पहुंचेगा दिव्य रथ, एक वर्ष तक चलेगा जन जागरण अभियान

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रीवा में ब्रह्मकुमारी संस्थान द्वारा संचालित किए जा रहे पारिवारिक संस्कृति व प्रेम, शांति एवं सद्भावना रथ को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह अभियान समाज में प्रेम, शांति और भाईचारे की भावना को सशक्त करेगा तथा प्रदेश में सकारात्मक परिवर्तन लाएगा। प्रेम, शांति और विश्व बंधुत्व का संदेश लेकर गांव-गांव तक भ्रमण करने वाले रथ से एकता, प्रेम, सद्भावना व नशामुक्ति का संदेश जन-जन तक पहुंचेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जनजागृति रथ में स्थापित 12 ज्योतिर्लिंगों के दिव्य स्वरूपों की पूजा-अर्चना की।

रीवा के राजनिवास सर्किट हाउस में उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने ब्रह्मकुमारी संस्थान द्वारा चलाए जा रहे जन जागरण अभियान की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह पावन और आध्यात्मिक कार्य प्रदेश में विश्व बंधुत्व की भावना जागृत करने में

सहायक सिद्ध होगा। ब्रह्मकुमारी संस्थान की भोपाल जोन की डायरेक्टर बीके निर्मला के निर्देशन में जन जागरण अभियान अंतर्गत ज्योतिर्लिंग रथ रीवा जिले में महाशिवरात्रि 2027 तक भ्रमण करेगा। कार्यक्रम में जिला भाजपाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र गुप्ता सहित ब्रम्हकुमारी संस्थान के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

आज सीएम करेंगे गोपालपुर भेड़ाघाट स्थित विश्वात्मा इंस्टिट्यूट का उद्घाटन

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर के गोपालपुर भेड़ाघाट स्थित विराट हॉस्पिस प्रांगण में बुधवार शाम 5 बजे विश्वात्मा इंस्टिट्यूट ऑफ़ रेडियोथेरेपी और ट्रीटमेंट का उद्घाटन होगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कैबिनेट मंत्री राकेश सिंह करेंगे। विशिष्ट अतिथियों में राज्यसभा सांसद श्रीमती सुमित्रा वाल्मिक, सांसद आशीष दुबे, सांसद डॉ. राजेश मिश्रा, महापौर जगत बहादुर सिंह अनु और विधायक नीरज सिंह शामिल होंगे।गौ सेवक प्रकोष्ठ के संयोजक पेज खान मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

सबरीमाला मंदिर मामले में सुप्रीम कोर्ट के सवाल पर वकील का जवाब

भगवान अयप्पा ब्रह्मचारी इसलिए पूजा की प्रथा भी वैसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को सबरीमाला अयप्पा मंदिर के मुख्य पुजारी से पूछा कि क्या संविधान उस भक्त की मदद के लिए आगे नहीं आएगा जिसे देवता को छूने की इजाजत नहीं है। सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी तब आई जब मुख्य पुजारी ने कहा कि कोई भक्त पूजा के लिए मंदिर जाता है, तो वह देवताओं की विशेषताओं के विपरीत नहीं हो सकता। वकील ने कहा भगवान अयप्पा ब्रम्हचारी हैं इसलिए यह प्रथा है। नौ जजों की संविधान पीठ धार्मिक स्थलों पर महिलाओं के साथ होने वाले

भेदभाव से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई कर रही है, जिसमें केरल के सबरीमाला मंदिर का मामला भी शामिल है।

साथ ही, पीठ कई धर्मों द्वारा पालन की जाने वाली धार्मिक स्वतंत्रता के दायरे और विस्तार पर भी सुनवाई कर रही है। इस पीठ में चीफ जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस बीवी नागरत्ना, एमएल सुंदरेश, अहसानुद्दीन अमनुल्लाह, अरविंद कुमार, ऑगस्टीन जॉर्ज महीस, प्रसन्ना बी वराले, आर महादेवन और जॉयमाल्य बागची शामिल हैं। मुख्य पुजारी की ओर से पेश हुए वरिष्ठ वकील वी गिरि ने दलील दी कि किसी मंदिर में होने वाले समारोहों और रीति-रिवाजों की प्रकृति उस धर्म का एक अभिन्न अंग होती है, और इसलिए उसे एक धार्मिक प्रथा माना जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसी प्रथा जारी रखना, जो एक अनिवार्य धार्मिक प्रथा है, पूजा के अधिकार का ही एक हिस्सा होगा।

गोम्मतगिरी रोड पर टैक्सी सवार दंपत्ति को लूटा, बदमाश ने ड्राइवर से टैक्सी छीनी

थाने पर टैक्सी एक्सीडेंट की शिकायत लिखी गई, लूट की कोशिश की घटना को टाला

इंदौर। आज दोपहर करीब तीन बजे गोम्मतगिरी रोड पर टैक्सी में सवार दो सवारियों के साथ लूटपाट की कोशिश हुई। घटना के अनुसार बदमाश ने टैक्सी ड्राइवर को धक्का देकर गाड़ी से बाहर कर दिया। बाद में टैक्सी दुर्घटनाग्रस्त हो गई और वह बदमाश भाग गया। टैक्सी में सवार पति पत्नी के साथ मारपीट भी हुई और उन्हें तीखे हथियार से घायल भी किया गया।

घटनाक्रम के अनुसार अनिल त्रिवेदी (66 वर्ष) और उनकी पत्नी दोपहर करीब ढाई बजे दिल्ली से इंदौर एयरपोर्ट पहुंचे थे। वहां उन्होंने जो टैक्सी पहले से बुक की थी, वह किसी कारण कैंसिल हो गई। कोई अन्य टैक्सी उपलब्ध नहीं थी, ऐसी स्थिति में वहां खड़े दो लोगों ने प्राइवेट टैक्सी का कहा और महालक्ष्मी नगर जाने को राजी हो गए। पति-पत्नी टैक्सी में सवार होकर महालक्ष्मी नगर के लिए निकले। लेकिन, सुपर कॉरिडोर के ट्रैफिक पॉइंट पर जब टैक्सी रुकी, तो एक बदमाश ने टैक्सी ड्राइवर को कहा कि आगे जा रही बस ने उसकी मां को टक्कर मार दी है, मुझे बस तक छोड़ दो। वह बस गांधी नगर की तरफ गई है। ड्राइवर के मना करने पर बदमाश ने टैक्सी की चाभी निकाल ली। जब ड्राइवर चाभी लेने बाहर आया, तो बदमाश ने उसे धक्का दे दिया और टैक्सी लेकर गांधी नगर की तरफ चल दिया।

उस बदमाश ने दोनों सवारियों को बार-बार यह कहा कि मुझे उस बस तक जाना है। लेकिन वह बस के रुकने पर भी टैक्सी से नहीं उतरा और धीरे-धीरे गाड़ी चलाता रहा। दंपत्ति ने बताया कि हम भी उसकी चाल को नहीं समझे। जब हमने विरोध करना शुरू किया तो उसने पेंचकस से हम दोनों पर हमला करना शुरू किया। हमको धमका कर हमारा पर्स मोबाइल और घड़ी आगे की सीट पर रखवा ली। वह एक हाथ से गाड़ी चलाता रहा और हम पर हमले करता रहा। गोम्मतगिरी के आगे उतार पर अचानक गाड़ी का बैलेंस बिगड़ा और वह सड़क के नीचे उतरकर खंभे से टकरा गई। इसके बाद वह बदमाश दरवाजा खोलकर पीछे की सीट पर आ गया और हम पर हमला किया और धमकाया। लेकिन, इस बीच हमारे चिल्लाने पर वहां से निकल रहे कुछ लोगों ने बदमाश को बाहर निकालकर पकड़ लिया। इस बीच दंपत्ति ने अपने परिवार को फोन कर दिया तो वे लोग भी आ गए। इस घटनाक्रम में यह स्पष्ट हुआ कि वह बदमाश और ड्राइवर दोनों मिले थे और इसीलिए यह घटना हुई।

जब घायल पति-पत्नी गांधीनगर थाने पर मामले की शिकायत करने गए तो वहां कहा गया कि हम सिर्फ टैक्सी के एक्सीडेंट की एफआईआर दर्ज करेंगे, लूटपाट की नहीं। वहां मौजूद टीआई उमेश यादव ने मामले को गंभीरता से नहीं लिया और एफआईआर नहीं लिखी। घायल पति-पत्नी अरबिंदो अस्पताल में भर्ती हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 22 अप्रैल 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

प्रदेश में तेज गर्मी, मैहर में 5वीं तक स्कूल बंद

भोपाल समेत 9 शहरों में गर्म लू चलने का अलर्ट, इंदौर-ग्वालियर में पारा 42 डिग्री के पार

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में भीषण गर्मी पड़ रही है। लोग घर से बहुत जरूरी होने पर ही निकल रहे हैं। लड़कियां धूप से बचने के लिए मुंह पर कपड़ा बांधकर निकल रही हैं। मध्यप्रदेश में गर्मी का असर अब दिन के साथ-साथ रातों में भी साफ दिखने लगा है। कई शहरों में तापमान 42 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच गया है। मौसम विभाग ने भोपाल समेत 9 जिलों में पहली बार 'वॉर्म नाइट' का अलर्ट जारी किया है।

इसी बीच भीषण गर्मी को देखते हुए मैहर जिले में प्री-प्राइमरी से कक्षा 5वीं तक के सभी स्कूलों में 21 अप्रैल से 30 अप्रैल 2026 तक अवकाश घोषित कर दिया गया है। मैहर कलेक्टर बिदिशा मुखर्जी ने यह आदेश बच्चों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए जारी किया है। यह आदेश शासकीय, अशासकीय, सीबीएसई और केंद्रीय विद्यालयों सहित सभी मान्यता प्राप्त स्कूलों पर लागू रहेगा। वहीं कक्षा 6वीं से 12वीं तक की कक्षाएं सुबह 7:30 से 12:30 बजे तक पूर्ववत जारी रहेंगी और शिक्षक दोपहर 1:30 बजे तक स्कूल में उपस्थित रहेंगे। पहले से तय परीक्षाएं और अन्य कार्यक्रम यथावत रहेंगे। मैहर में मंगलवार को तापमान 41 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि अधिकतम 42 डिग्री तक पहुंचने का अनुमान है।

मौसम विभाग के अनुसार, जब रात का न्यूनतम तापमान सामान्य से काफी ज्यादा हो जाता है, तो उसे 'वॉर्म नाइट' कहा जाता है। यह स्थिति तब बनती है जब रात का तापमान सामान्य से 4.5 से 6.4 डिग्री सेल्सियस तक अधिक हो और दिन का तापमान 40 डिग्री या उससे ऊपर बना रहे। इससे रात में भी गर्मी से राहत नहीं मिलती और मौसम असामान्य रूप से गर्म बना रहता है।

सांसद अमृतपाल की फिर गिरफ्तारी के आसार

- एनएसए खत्म होने से पहले डिब्रूगढ़ पहुंची अमृतसर पुलिस

अमृतसर (एजेंसी)। पंजाब के खडूर साहिब से सांसद अमृतपाल सिंह की गिरफ्तारी को लेकर हलचल तेज हो गई है। पंजाब पुलिस की एक विशेष टीम असम के डिब्रूगढ़ सेंट्रल जेल पहुंच चुकी है, जहां अमृतपाल सिंह फिलहाल एनएसए के तहत बंद हैं। अमृतपाल सिंह की

एनएसए हिरासत 22 अप्रैल को समाप्त हो रही है। सूत्रों के अनुसार जैसे ही उनकी नजरबंदी खत्म होगी अमृतपाल सिंह को अजनाला मामले में गिरफ्तार करके स्थानीय अदालत में पेश किया जाएगा, जहां से रिमांड लिया जाएगा। इसके बाद मुकदमे की कार्रवाई शुरू होने की संभावना है। अमृतपाल सिंह को अप्रैल 2023 में मोगा के रोड़े गांव से गिरफ्तार किया गया था। इससे पहले फरवरी 2023 में अजनाला पुलिस थाना पर हमले का मामला सामने आया था, जहां वे अपने समर्थकों के साथ मिलकर बैरिकेड्स तोड़कर थाने में दाखिल हुए थे और एक साथी को छुड़ाने के लिए पुलिस से झड़प भी हुई थी। हथियारों के साथ थाने पर धावा बोला। इस मामले में अमृतपाल सिंह समेत कुल 41 लोगों के खिलाफ हत्या के प्रयास, सरकारी कर्मचारियों पर हमला, आपराधिक साजिश और दंगा जैसे गंभीर आरोप दर्ज किए गए हैं। पुलिस के मुताबिक, अमृतपाल इस केस के मुख्य आरोपी हैं और उनकी गिरफ्तारी के बाद ट्रायल की प्रक्रिया तेज की जाएगी।

पीएम मोदी के खिलाफ खरगे फिर हुए 'बेकाबू'

कांग्रेस चीफ ने की आपत्तिजनक टिप्पणी- वे एक आतंकवादी हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लेकर बहुत ही आपत्तिजनक बयान दिया है। खरगे ने पीएम मोदी को 'आतंकवादी' बताया है। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव प्रचार के आखिरी दिन कांग्रेस अध्यक्ष ने एआईएडीएमके के एनडीए में शामिल होने के खिलाफ इस तरह की भाषा का इस्तेमाल किया है। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव के लिए 23 अप्रैल को मतदान होना है। मंगलवार को चुनाव प्रचार का आखिरी दिन है। पार्टी के प्रचार के सिलसिले में चेन्नई पहुंचे कांग्रेस अध्यक्ष ने एक प्रेस कांफ्रेंस में पीएम मोदी को लेकर इस तरह की भाषा का इस्तेमाल किया है।

लोकतंत्र कमजोर कर रहा है एआईएडीएमके

मल्लिकार्जुन खरगे ने आगे कहा, ...और ये लोग (एआईएडीएमके)उनके साथ शामिल हो रहे हैं, इसका मतलब है कि ये लोग लोकतंत्र को कमजोर कर रहे हैं....। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि आपको ऐसा नेता चाहिए, जो बीजेपी के सामने न झुके और लड़ने के लिए तैयार रहे जैसे कि एमके स्टालिन। आज एआईएडीएमके ने अपनी पहचान खो दी है। यह बीजेपी का मूक-गुलाम पार्टनर बन गया है। यह तमिलनाडु की हितों की रक्षा नहीं कर सकता, क्योंकि यह पीएम मोदी का गुलाम बन चुका है। इसके बाद खरगे ने पीएम मोदी को 'आतंकवादी' बताने वाले अपने बयान पर सफाई देने की कोशिश की। उन्होंने कहा, वे (पीएम मोदी) लोगों और राजनीतिक दलों को डरा रहे हैं। मैंने उन्हें कभी भी आतंकवादी नहीं कहा...मेरे कहने का मतलब क्या है...मैं स्पष्ट करना चाहता हूं..कि मोदी हमेशा धमकाते हैं। ईडी, आईटी और सीबीआई जैसे संस्थान उनके हाथों में हैं। वह परिसीमन को भी अपने हाथों में लेना चाहते हैं। इससे पहले मल्लिकार्जुन खरगे 2023 के कर्नाटक विधानसभा चुनाव में प्रधानमंत्री की तुलना 'जहरीले सांप' से भी कर चुके हैं। 2022 में गुजरात विधानसभा चुनाव के दौरान खरगे ने पीएम मोदी की तुलना 'रावण' से करते हुए पूछा था कि आपके रावण की तरह 100 मुख हैं क्या।

'जल' रहे हैं मैदानी इलाके

गर्मी हुई बेकाबू

- मध्य प्रदेश में पहली बार रात में लू का अलर्ट जारी
- महाराष्ट्र-छत्तीसगढ़ में गर्मी का कहर, पारा हुआ हाई
- शहरों में ट्रैफिक पुलिस की ड्यूटी का समय बदला

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के मैदानी इलाकों में तेज गर्मी जारी है। राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, ओडिशा और दिल्ली में कई जगह पारा 44 डिग्री पार पहुंच गया है। कई जगह लू का भी अलर्ट है। मध्य प्रदेश के भोपाल में पहली बार रात में लू चलने की चेतावनी दी गई है। भोपाल, छिंदवाड़ा, मंडला, नर्मदापुरम, ग्वालियर, रतलाम और छतरपुर समेत 16 जिलों में लू चलने के आसार हैं। उत्तर प्रदेश में प्रयागराज में 44.4 डिग्री के साथ देश में सबसे गर्म रहा। गर्मी को देखते हुए 8वीं तक के

स्कूलों का टाइम बदल दिया गया है। झारखंड में भी आज से स्कूलों के समय में बदलाव किया है। महाराष्ट्र के गोंदिया और छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में सोमवार को पारा 43 डिग्री दर्ज हुआ।

राजस्थान में सड़कें सुनसान, टूरिस्ट हुए गायब

प्रदेश में सोमवार को 12 शहरों में तापमान 40 डिग्री से ऊपर रहा। बाड़मेर, जैसलमेर से ज्यादा गर्मी कोटा में रही, जहां पारा 42 डिग्री पर पहुंचा। जयपुर, फलोदी में दिन के साथ रात में भी तेज गर्मी है। उदयपुर और अजमेर में टूरिस्ट घट गए हैं। कोटा के हॉस्पिटल्स में हीट स्ट्रोक के मरीजों के लिए बेड रिजर्व किए गए हैं। प्रदेश में पहली बार वॉर्म नाइट का अलर्ट है। आईएमडी के मुताबिक मंगलवार की रात भोपाल समेत 9 शहरों में रात में भी तेज गर्मी रहेगी। इससे पहले रविवार-सोमवार की रात में भोपाल, छिंदवाड़ा, मंडला और नर्मदापुरम में गरम रात रही।

केरलम में पटाखा फैक्ट्री में ब्लास्ट, 13 की मौत

10 शव बरामद, 3 लोगों के शरीर के हिस्से बिखरे मिले, 40 मजदूर काम कर रहे थे

त्रिशूर (एजेंसी)। केरलम के त्रिशूर जिले में मंगलवार दोपहर 3.30 बजे पटाखा फैक्ट्री में ब्लास्ट हुआ। हादसे में 13 लोगों की मौत हो गई। फैक्ट्री में कई लोग झुलस गए। घायलों को आसपास के अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के मुताबिक, मौके से 10 शव मिले, जबकि 3 लोगों के शरीर के हिस्से मिले है। 5 घायलों की हालत गंभीर है। 17 लोगों को मामूली चोटें आई हैं। पटाखे खेतों के बीच बने शेड में बनाए जा रहे थे। हादसे के समय करीब 40 लोग मौजूद थे। फायर ब्रिगेड, पुलिस और रेस्क्यू टीमें मौके पर पहुंचीं, लेकिन रुक-रुक कर विस्फोट होने से रेस्क्यू में दिक्कत आई।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने तमिलनाडु के नमक्कल जिले के राशिपुरम एवं तिरूपुर जिले के अविनाशी विधानसभा में रोड शो एवं जनसभा को किया संबोधित

'यह चुनाव परिवारवाद के खिलाफ और नारियों के सम्मान के लिए है'

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंगलवार को तमिलनाडु के नमक्कल जिले के राशिपुरम विधानसभा से एनडीए प्रत्याशी डॉ. प्रेम कुमार एवं तिरूपुर जिले के अविनाशी विधानसभा में केंद्रीय मंत्री व एनडीए प्रत्याशी डॉ. एल मुरूगन के समर्थन में रोड शो एवं अविनाशी विधानसभा में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि तमिलनाडु की बहनें नारी शक्ति वंदन अधिनियम का विरोध करने वाली कांग्रेस व डीएमको को सबक सिखाएं। तमिलनाडु की जनता का उत्साह बता रहा है कि यहां विकास व सुशासन का कमल खिलेगा। नारी शक्ति वंदन अधिनियम का विरोध कर कांग्रेस और डीएमके पार्टी ने देशभर के साथ तमिलनाडु की बहनों का भी अधिकार छीना है। तमिलनाडु विधानसभा का यह चुनाव परिवारवाद से खिलाफ और नारी सम्मान के समर्थन का है। जनता का उत्साह बता रहा है कि तमिलनाडु परिवर्तन के लिए तैयार है। भाजपा

तमिलनाडु में ऐतिहासिक बहुमत से सरकार बनाएगी।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम का विरोध करके डीएमके और कांग्रेस ने तमिलनाडु की बहनों के विकास का रास्ता रोका है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में विकास और सुशासन का माहौल बना हुआ है। उसकी झलक आज तमिलनाडु में दिखाई दे रही है। कांग्रेस सहित संपूर्ण विपक्षी दलों ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम का विरोध किया, देश की जनता उससे आक्रोशित है। तमिलनाडु में निश्चित रूप से कमल खिलेगा और सुखद परिणाम सामने आएंगे। प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन से एनडीए को विजय प्राप्त होगी और तमिलनाडु में एनडीए की सरकार बनेगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नारी सम्मान के लिए लड़ाई लड़ी है। गरीब और आम आदमी मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री बने, यह एनडीए की सोच है।

भारत की आंतरिक सुरक्षा करेगा 'प्रज्ञा'!

गृह मंत्रालय को मिला एआई से लैस सैटेलाइट सिस्टम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की आंतरिक और समुद्री सुरक्षा को और अधिक मजबूत बनाने की दिशा में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने दो अहम उपलब्धियां हासिल की हैं। इसके तहत गृह मंत्रालय को एक आधुनिक सैटेलाइट सिस्टम सौंपा गया है, जबकि भारतीय नौसेना के लिए एक खास एयर ड्रॉपेबल कंटेनर का सफल परीक्षण किया गया है। देश की आंतरिक सुरक्षा एजेंसियों को और अधिक चुस्त और आधुनिक बनाने के लिए गृह मंत्रालय को प्रज्ञा नामक स्वदेशी सैटेलाइट इमेजिंग सिस्टम सौंपा गया है। सोमवार को गृह मंत्रालय के कर्तव्य भवन-3 में आयोजित एक समारोह के दौरान डीआरडीओ के सचिव समीर वी. कामत ने केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन को यह सिस्टम सौंपा।

सुरक्षा एजेंसियों को रीयल-टाइम निर्णय लेने में करेगा मदद

इस अत्याधुनिक सिस्टम को डीआरडीओ की प्रयोगशाला सेंटर फॉर आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस एंड रोबोटिक्स द्वारा पूरी तरह से भारत में विकसित किया गया है। इसकी खासियत की बात करें तो यह सिस्टम आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस पर आधारित है। यह सुरक्षा एजेंसियों को रीयल-टाइम निर्णय लेने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करेगा।

भारतीय नौसेना के लिए एडीसी-150 का सफल परीक्षण

आंतरिक सुरक्षा के साथ-साथ समुद्री सीमाओं की सुरक्षा और राहत कार्यों को तेज करने के लिए डीआरडीओ और भारतीय नौसेना ने संयुक्त रूप से स्वदेशी एयर ड्रॉपेबल कंटेनर एडीसी-150 के चार सफल इन-फ्लाइट परीक्षण किए हैं। यह परीक्षण 21 फरवरी से 1 मार्च के बीच गोवा के तट पर विभिन्न कठिन परिस्थितियों में भारतीय नौसेना के विमान से किया गया। यह कंटेनर 150 किलोग्राम तक का पेलोड (सामान/राहत सामग्री) हवा से गिराने (एयर-ड्रॉप) में सक्षम है।

बंगाल में अब बाइक रैली पर भी ईसी का शिकंजा

पीछे भी बैठे तो खैर नहीं, चुनाव आयोग ने लगाया प्रतिबंध!

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में स्वतंत्र, निष्पक्ष और भयमुक्त चुनाव सुनिश्चित करने के लिए राज्य के मुख्य चुनाव अधिकारी के कार्यालय ने मोटरसाइकिल के उपयोग पर कड़े प्रतिबंध लगाये हैं। आयोग द्वारा 20 अप्रैल को जारी अधिसूचना के अनुसार, मतदान से 48 घंटे पहले किसी भी प्रकार की बाइक रैली की अनुमति नहीं होगी। आयोग के सूत्रों के अनुसार, यह देखा गया है कि चुनाव प्रचार समाप्त होने के बाद भी राजनीतिक दल बाइक रैलियां निकालते हैं, जिनके जरिए कई मामलों में मतदाताओं को डराने-धमकाने की कोशिश की जाती है।

संकरी गलियों से कैश या शराब ले जाने पर लगेगी रोक

सीईसी के दफ्तर के एक अधिकारी ने बताया कि राजनीतिक पार्टियां कभी-कभी संकरी गलियों और उप-गलियों से कैश या शराब ले जाने के लिए मोटरसाइकिलों का इस्तेमाल करती हैं, जहां आमतौर पर मुख्य सड़कों पर चार-पहिया वाहनों पर नजर रखने वाली चौकियां नहीं होतीं। उनके अनुसार, इन पाबंदियों का मकसद मतदाताओं को प्रलोभन देने के इस तरीके को खत्म करना और बिना किसी हिंसा के चुनाव का माहौल सुनिश्चित करना है।

सहकारिता मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने नरेला क्षेत्र के संबंध में नगर निगम अधिकारियों की बैठक ली।

दिव्यांग बच्चों को स्कूल से निकालने पर हाईकोर्ट सख्त

चीफ जस्टिस ने कहा- भेदभाव बर्दाश्त नहीं, DEO को तलब कर मांगी रिपोर्ट

जबलपुर। जबलपुर के जबलपुर में दिव्यांग बच्चों को स्कूल से बाहर किए जाने के मामले में हाईकोर्ट ने सख्त रुख अपनाया है। कोर्ट ने साफ कहा कि बच्चों के साथ किसी भी तरह का भेदभाव न सिर्फ गलत है, बल्कि किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं किया जाएगा। मामला शहर के विजडम वैली स्कूल और जीडी गोयनका स्कूल से जुड़ा है। इन पर आरोप है कि स्पेशल (दिव्यांग) बच्चों को स्कूल से बाहर किया जा रहा था। शिकायत सामने आने के बाद इस मुद्दे पर जनहित याचिका दायर की गई। सोमवार को हुई सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस संजीव सचदेवा की डिवीजन बेंच ने तत्काल प्रभाव से दिव्यांग बच्चों को निकाले जाने पर रोक लगा दी। साथ ही जिला शिक्षा अधिकारी (DEO) को आदेश दिया कि जबलपुर के सभी स्कूलों में पढ़ रहे विशेष बच्चों को लेकर विस्तृत रिपोर्ट पेश की जाए। मामले की अगली सुनवाई 29 अप्रैल तय की गई है।

छात्रा का सुसाइड नोट- आई एम सॉरी पापा

पेपर अच्छे नहीं गए थे, मुझे अभी शादी नहीं करनी थी, झाबुआ में मालगाड़ी के सामने कूदी

झाबुआ (नप्र)। झाबुआ जिले के थांदला रोड रेलवे स्टेशन के पास सोमवार शाम एक युवती ने मालगाड़ी के सामने कूदकर आत्महत्या कर ली। युवती की पहचान मेघनगर तहसील के सजेली नानिया साथ निवासी विमला (23) पिता कालू हेलोत के रूप में हुई।

घटना सोमवार शाम करीब 4:45 बजे हुई, जब मालगाड़ी अप ट्रैक से गुजर रही थी। टक्कर इतनी भीषण थी कि युवती की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलते ही जीआरपी पुलिस मेघनगर की टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने क्षत-विक्षत शव को कब्जे में लेकर पंचनामा बनाया। तलाशी में युवती के पास से सुसाइड नोट बरामद हुआ।

लिखा- तुमको शादी की इतनी जल्दी हो रही

सुसाइड नोट में युवती ने माता-पिता को संबोधित करते हुए लिखा कि उसके पेपर अच्छे नहीं गए थे। घरवाले शादी की जल्दी में थे और वह अभी शादी नहीं करना चाहती थी। युवती ने अपनी मौत के लिए खुद को जिम्मेदार ठहराया।

पेड़ों के आसपास से हटेगी सीसी रोड

एनजीटी का आदेश- 1 मीटर जगह खुली रखना अनिवार्य ; लहारपुर डैम में सीवेज नहीं मिलेगा

भोपाल (नप्र)। भोपाल में पेड़ों के आसपास से सीमेंट क्रांकीट सड़कें हटाने के आदेश नेशनल ग्रीन ट्रब्नल (एनजीटी) ने दिए हैं। मंगलवार को जारी आदेश के मुताबिक, पेड़ों के चारों ओर 1 मीटर जगह खुली रखना अनिवार्य होगा। एनजीटी ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण में जीवन जीना संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत मौलिक अधिकार है। एक अन्य मामले में लहारपुर डैम से सीवेज नहीं मिलने के आदेश भी दिए गए हैं। दोनों ही मामलों में एनजीटी की केंद्रीय क्षेत्रीय पीठ ने यह निर्णय सुनाया है। पेड़ों के मामले में न्यायमूर्ति शियो कुमार सिंह, विशेषज्ञ सदस्य सुधीर कुमार चतुर्वेदी की बैंच ने पाया कि भोपाल के बाबूलाल गौर मार्ग, अवधपुरी में सड़क निर्माण के दौरान पेड़ों के चारों ओर कांक्रीट कर दिया गया। जिससे जड़ों तक हवा और पानी का प्रवाह बाधित हो रहा है और पेड़ों की वृद्धि प्रभावित हो रही है।

एनजीटी ने विभिन्न पर्यावरणीय कानून, सुप्रीम कोर्ट के निर्णयों एवं शहरी हरियाली संबंधी दिशा-निर्देशों का हवाला देते हुए कहा कि अत्यधिक कांक्रीटकरण से भूजल पुनर्भरण कम होता है। तापमान बढ़ता है और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।भोपाल में पेड़ों को बचाने के लिए पर्यावरणविद् पिछले दो साल में कई आंदोलन कर चुके हैं।

सरकार को अब यह करना होगा- शहरी विकास विभाग मध्य प्रदेश को निर्देश दिए हैं कि निर्माण कार्यों के दौरान पेड़ों के चारों ओर कम से कम 1 मीटर खुली जगह रहें। भोपाल नगर निगम सड़क किनारे पेड़ों के चारों ओर एक मीटर खुली मिट्टी बनाए रखें।

नगर निगम, पीडब्ल्यूडी एवं एनएचएआई पेड़ों पर लगे सभी बोर्ड, विज्ञापन एवं बिजली के तार तुरंत हटाए। वहीं, पेड़ों की सुरक्षा के लिए व्यवस्था करें। साथ ही नगर निगम को ट्री डिजीज सर्जरी यूनिट स्थापित करने पर भी विचार करने को कहा है।

लहारपुर डैम में सीवेज प्रवाह रोकने के लिए सख्त निर्देश

दूसरे मामले, में एनजीटी ने भोपाल ने लहारपुर डैम में प्रदूषण के गंभीर मामले पर स्वतः संज्ञान लिया है। एक रिपोर्ट के अनुसार, बाग मुगालिया स्थित लहारपुर डैम में बिना उपचारित सीवेज का प्रवाह हो रहा है। जिससे डैम का पानी जहरीला और उपयोग के अयोग्य हो गया है। इस दूषित पानी का उपयोग लगभग 2,500 एकड़ कृषि भूमि में सिंचाई के लिए किया जा रहा है, जो जनस्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा है।

एनजीटी की गठित संयुक्त समिति ने निरीक्षण के दौरान पाया कि कई नालों से सीवेज सीधे डैम में जा रहा है। पानी काला, दुर्गंधयुक्त और झागयुक्त पाया गया, जो प्रदूषण का संकेत है।एनजीटी ने कहा कि बिना उपचारित सीवेज का किसी भी जल स्रोत में प्रवाह स्वीकार्य नहीं है और इसके लिए संबंधित निकाय जिम्मेदार हैं।

यह निर्देश

- भोपाल नगर निगम डैम में गिरने वाले सभी नालों की पहचान कर बिना उपचारित सीवेज का प्रवाह तुरंत रोका जाए।
- संबंधित प्राधिकरणों को सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट या विकेंद्रीकृत उपचार प्रणाली स्थापित करने के निर्देश दिए गए हैं।
- जल संसाधन विभाग को डैम के चारों ओर हरित पट्टी विकसित करने का निर्देश दिया गया है।
- नगर निगम को ठोस अपशिष्ट प्रबंधन योजना लागू करने तथा जन जागरूकता अभियान चलाने के लिए कहा गया है।
- मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को जल गुणवत्ता की नियमित निगरानी करने और उल्लंघन पर कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं।

बीजेपी विधायक प्रीतम लोधी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की

एसडीओपी आयुष जाखड़ के समर्थन में उतरा आईपीएस एसोसिएशन

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में पिछोर विधानसभा सीट से बीजेपी विधायक प्रीतम लोधी ने करैरा एसडीओपी आयुष जाखड़ के खिलाफ मोर्चा खोल रहा है। साथ ही आईपीएस अधिकारी आयुष जाखड़ को धमकी दी है कि आपके आवास में गोबर भर दूंगा। अब आईपीएस एसोसिएशन एसडीओपी आयुष जाखड़ के समर्थन में उतर आया है।

गरिमा के विपरीत है भाषा- दरअसल, मध्य प्रदेश आईपीएस एसोसिएशन ने कहा है कि पिछोर विधायक प्रीतम लोधी के द्वारा करैरा एसडीओपी आयुष जाखड़ के संबंध सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल है। इस वीडियो में अभद्र, अमर्यादित और धमकी भरी भाषा का प्रयोग किया गया है, वह अत्यंत निंदनीय और सार्वजनिक जीवन की गरिमा के विपरीत है।

अधिकारियों के मनोबल पर पड़ता है प्रभाव- आईपीएस एसोसिएशन ने कहा है कि नवनियुक्त पुलिस अधिकारी एवं उनके परिवार के प्रति की गई अपमानजक टिप्पणियां अमर्यादित और अशोभनीय है। यह आचरण एक जनप्रतिनिधि के पद की मर्यादा के विपरीत है। साथ ही प्रशासनिक तंत्र और समस्त अधिकारियों के मनोबल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

ज्ञातव्य है कि विधायक प्रीतम लोधी के बेटे दिनेश लोधी ने थार से पांच लोगों को मारी थी टक्कर। करैरा पुलिस ने विधायक के बेटे के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। करैरा एसडीओपी आयुष जाखड़ ने विधायक के बेटे से पूछताछ की थी। इसके बाद विधायक प्रीतम लोधी ने अमर्यादित भाषा में धमकी दी। विधायक प्रीतम लोधी ने बेटे से पूछताछ के बाद धमकी भरे लहजे में एसडीओपी आयुष जाखड़ को कहा था कि करैरा तुम्हारे डैडी की नहीं है। मेरा बेटा करैरा में ही रहेगा और यही से चुनाव लड़ेगा। प्रीतम लोधी ने फिर दूसरे वीडियो में कहा था कि अगर एसपी स्पष्टीकरण नहीं देंगे तो एसडीओपी के बंगले में 10000 लोगों के साथ जाकर गोबर भर दूंगा। साथ ही धमकाते हुए कहा था कि हमारा इतिहास नहीं जानते हैं।

भाषा को संयमित रखें- वहीं, एसोसिएशन ने कहा कि जनप्रतिनिधियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने आचरण एवं भाषा को संयमित और मर्यादित रखें। इस प्रकार की अमर्यादित भाषा और धमकीपूर्ण व्यवहार किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में स्वीकार्य नहीं है। यह प्रशासनिक तंत्र की निष्पक्षता को आहत करता है। एमपी आईपीएस एसोसिएशन इस कृत्य की कड़े शब्दों में निंदा करता है।

न्यू मार्केट में लेंसकार्ट शोरूम घेरा, तिलक-कलावा पर बवाल

हिंदू संगठनों ने कर्मचारियों को तिलक लगाया, बोले- सनातन का अपमान, नहीं सहेगा हिंदुस्तान

भोपाल (नप्र)। भोपाल के न्यू मार्केट रोशनपुरा में ड्रेस कोड के खिलाफ लेंसकार्ट शोरूम के बाहर हिंदू उत्सव समिति के कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने कर्मचारियों को तिलक लगाया, मंत्रोच्चार के साथ कलावा बांधा। कहा- सनातन का अपमान, नहीं सहेगा हिंदुस्तान। हिंदू उत्सव समिति के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी ने कहा कि संगठन लेंसकार्ट के बहिष्कार का आह्वान कर रहा है। यह हिंदुस्तान है, यहां तिलक, कलावा और बिंदी का सम्मान होना चाहिए। अगर कंपनी ने इन पर रोक लगाने की कोशिश की, तो इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

सनातन धर्म के प्रतीकों का अपमान हुआ

उन्होंने कॉरपोरेट कंपनियों से कहा- सनातन धर्म के प्रतीकों का अपमान हुआ, तो सख्त विरोध किया जाएगा। भले ही कंपनी के सीईओ पीयूष बंसल ने माफी मांगी हो, लेकिन संगठन इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं है। अगर हमने कंपनी को ऊंचाइयों तक पहुंचाया है, तो जरूरत पड़ने पर उसे नीचे भी ला सकते हैं।

सिंदूर-कलावा पर रोक स्वीकार्य नहीं- संत समिति

मध्य प्रदेश संत समिति के अध्यक्ष महाराज अनिल आनंद ने कहा कि कथित गाइडलाइन में महिलाओं को सिंदूर और कलावा पहनकर आने से रोकने की बात कही गई है, जो स्वीकार्य नहीं है। उनके मुताबिक भारत में सनातन परंपराओं का सम्मान होना चाहिए। किसी भी कंपनी को धार्मिक प्रतीकों पर रोक लगाने का अधिकार नहीं है।

कर्मचारियों का दावा- कभी नहीं रोका गया- विवाद के बीच शोरूम के कर्मचारी मनीष भमारे ने कहा कि उन्हें कभी तिलक या कलावा पहनने से नहीं रोका गया। उन्होंने बताया कि नवरात्रि में वे तिलक और कलावा लगाकर काम पर आए थे। उनके अनुसार कंपनी की ओर से ऐसी कोई पाबंदी नहीं बताई गई। उन्हें प्रदर्शन से डर नहीं है और व्यक्तिगत तौर पर कोई समस्या नहीं हुई है।

कंपनी की सफाई- सभी धर्मों का सम्मान- विवाद बढ़ने के बाद कंपनी के सीईओ पीयूष बंसल ने कहा कि लेंसकार्ट सभी धर्मों का सम्मान करता है और कर्मचारियों को अपने धार्मिक प्रतीक पहनने की पूरी आजादी है। हालांकि, विरोध कर रहे संगठन इस सफाई से संतुष्ट नहीं हैं। आंदोलन जारी रखने के संकेत दिए हैं।

बहिष्कार का ऐलान, कंपनी को चेतावनी

हिंदू उत्सव समिति के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी ने कहा कि संगठन लेंसकार्ट के बहिष्कार का आह्वान कर रहा है। उनका कहना है कि भारत में तिलक, कलावा और बिंदी का सम्मान होना चाहिए। यदि कंपनी ने इन पर रोक लगाने की कोशिश की, तो इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म के प्रतीकों का अपमान हुआ तो सख्त विरोध किया जाएगा। कंपनी के सीईओ पीयूष बंसल की माफी स्वीकार नहीं है। अगर हमने कंपनी को ऊंचाइयों तक पहुंचाया है, तो जरूरत पड़ने पर नीचे भी ला सकते हैं।

सोशल मीडिया से शुरू हुआ विवाद

पूरा मामला सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक कथित पॉलिसी डॉक्यूमेंट से शुरू हुआ। इसमें दावा किया गया कि कर्मचारियों को बिंदी, तिलक और कलावा पहनने से रोका गया है, जबकि हिजाब और पगड़ी को कुछ शर्तों के साथ अनुमति दी गई है। इसी कथित भेदभाव को लेकर विवाद बढ़ा।

एक्टिविस्ट शेफाली वैद्य ने एक्स (ट्विटर) पर स्क्रीनशॉट साझा कर कंपनी से सवाल किया कि जब हिजाब की अनुमति है, तो बिंदी और कलावा पर रोक क्यों। इसके बाद यह मुद्दा वायरल हुआ और कंपनी को लेकर तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आईं।

'ग्रुमिंग गाइड' पर भी सवाल

सोशल मीडिया पर एक 'ग्रुमिंग गाइड' वायरल हुई, जिसमें महिला कर्मचारियों को बिंदी या क्लचर लगाने की अनुमति नहीं होने और कलावा या रिस्ट बैंड पर रोक का दावा किया गया। वहीं हिजाब और पगड़ी को कुछ शर्तों के साथ अनुमति देने की बात कही गई। इससे विवाद और गहरा गया।

कुप्रथा की बेड़ियाँ तोड़ मुख्य धारा से जुड़ रही हैं बेटियां

नीमच जिले का 'पंख' अभियान बना सशक्तिकरण की मिसाल

भोपाल। जब इरादें फौलादी हों और प्रशासन का साथ मिले, तो सदियों पुरानी बेड़ियाँ भी टूट जाती हैं।' नीमच जिला प्रशासन की अभिनव पहल 'पंख अभियान' आज बांछड़ा समुदाय की उन बेटियों के लिए उम्मीद का उजाला बनकर उभरा है, जो कभी सामाजिक बहिष्कार और पीढ़ीगत मजबूरियों के अंधेरे में खोई हुई थीं।

कु-प्रथा की बेड़ियों से सम्मान के शिखर तक

बांछड़ा समुदाय ऐतिहासिक रूप से आर्थिक अभाव और कुछ शोषणकारी सामाजिक कु-प्रथाओं के कारण हाशिए पर रहा है। यहाँ की बालिकाओं के लिए 'देह-व्यापार' जैसी मजबूरियाँ उनके भविष्य के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा थीं। लेकिन 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' की मूल भावना को धरातल पर उतारते हुए नीमच जिला प्रशासन ने 'पंख' अभियान के माध्यम से इस अभिशाप को गरिमा में बदलने का बीड़ा उठाया है।

वर्दी पहनने का सपना हो रहा साकार

अभियान की सबसे बड़ी उपलब्धि 'सशक्त वाहिनी' योजना है। जहाँ कल तक इन गलियों में असुरक्षा का साया था, आज वहाँ की 14 बेटियाँ पुलिस और अर्धसैनिक बलों में भर्ती होने के लिए पसीना बहा रही हैं। प्रशासन इन्हें न केवल निःशुल्क शैक्षणिक मार्गदर्शन दे रहा है, बल्कि शारीरिक प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें देश सेवा के लिए तैयार कर रहा है। यह केवल एक प्रशिक्षण नहीं, बल्कि उनके आत्मसम्मान की बहाली है।

आर्थिक आजादी : हुनर से बदली हाथों की लकीरें

केवल शिक्षा ही नहीं, बल्कि 'पंख अभियान' आर्थिक स्वावलंबन का भी सेतु बना है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में 30 महिलाओं और बालिकाओं को ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (RSETI) के माध्यम से मुख्यधारा से जोड़ा गया है। पशुपालन, बकरी पालन, सिलाई, ब्यूटी पार्लर और मसाला प्रसंस्करण जैसे कार्यों के प्रशिक्षण ने उन्हें 'मजबूरी की कमाई' से निकालकर 'मेहनत की कमाई' की ओर मोड़ दिया है।

जमीनी स्तर पर बदलाव का ढांचा- बदलाव केवल बातों में नहीं, बल्कि आंकड़ों में भी नजर आ रहा है। प्रशासन ने बांछड़ा बाहुल्य ग्रामों में 26 आंगनवाड़ी केंद्रों में विशेष 'सहायता केंद्र' स्थापित किए गए। अड़तालिस स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों के माध्यम से अंतिम पंक्ति की महिला तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाई गईं। पच्चीस जागरूकता सत्र और करियर मार्गदर्शन के माध्यम से समुदाय की सोच में सकारात्मक बदलाव लाया गया।

सामूहिक प्रयास, सुखद परिणाम- इस अभियान में विभिन्न विभागों और स्वयंसेवी संस्थाओं का समन्वय देखने को मिल रहा है। 'पंख' अभियान ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि सही दिशा और संवेदनशीलता के साथ प्रयास किए जाएं, तो कोई भी समुदाय पिछड़ा नहीं रहता। अभियान का उद्देश्य केवल सहायता प्रदान करना नहीं, बल्कि बांछड़ा समुदाय की बेटियों के भीतर उस आत्मविश्वास को जगाना है कि वे अपनी नियति खुद लिख सकें। आज ये बेटियाँ भय और मजबूरी के दायरे से बाहर निकलकर शिक्षा और रोजगार के नए आसमान में उड़ान भर रही हैं।

पीएम आवास योजना से सुनीता के जीवन में आई खुशहाली, पक्के घर में संवर रहा बच्चों का भविष्य

प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. यादव का जताया आभार

भोपाल(नप्र)। इंदौर जिले के राऊ नगर परिषद की रहने वाली 36 वर्षीय सुनीता तंवर के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) वरदान साबित हुई है। वर्षों तक एक जर्जर कच्चे मकान में असुरक्षा और टपकती छत के बीच रहने वाली सुनीता को योजना के तहत 2.50 लाख रुपये की आर्थिक सहायता प्राप्त हुई, जिससे उन्होंने अपना पक्का घर बनाने का सपना पूरा किया। अब उनका परिवार असुरक्षा के साये से निकलकर एक सुरक्षित और सम्मानजनक माहौल में खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहा है। सुनीता की जीवनशैली में पक्के घर के निर्माण से क्रांतिकारी सुधार आया है। सब्जी की दुकान चलाकर परिवार का पालन-पोषण करने वाली सुनीता बताती हैं कि घर सुरक्षित होने से उनके तीनों बच्चों– शिवानी, राहुल और प्रिंस की पढ़ाई के लिए बेहतर वातावरण मिला है। अब बरसात के दिनों में पढ़ाई और नींद खराब होने का डर नहीं रहता। इस पक्के घर ने न केवल उनके परिवार के स्वास्थ्य में सुधार किया है, बल्कि समाज में उनका आत्मविश्वास और गौरव भी बढ़ाया है। सुनीता तंवर अपनी इस सफलता के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का हृदय से आभार व्यक्त करती हैं। आवास के साथ उन्हें आयुष्मान कार्ड और लाड़ली बहना योजना जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं का भी लाभ मिल रहा है। वे कहती हैं कि सरकार की इन दूरदर्शी योजनाओं ने उनके जैसे कई गरीब परिवारों के सिर पर न केवल छत दी है, बल्कि उनके बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की नींव भी रखी है।

तमिलनाडु के चुनावी मैदान में उतरे सीएम यादव, कांग्रेस और डीएमके के गठजोड़ पर किया प्रहार

भोपाल (नप्र)। पश्चिम बंगाल के बाद तमिलनाडु के चुनावी मैदान में सीएम मोहन यादव प्रचार के लिए उतरे हैं। उन्होंने रोड शो के दौरान कहा कि तमिलनाडु में कहीं दूसरी 'अम्मा' जे. जयललिता न उभर आए, इस आशंका के चलते कांग्रेस और डीएमके जैसी विपक्षी पार्टियों ने गठजोड़ कर 'नारी शक्ति वंदन विधेयक' को सदन में रोकने का काम किया। इसे तमिलनाडु सहित पूरे देश की बहनों और जनता ने देखा है। ये वे दल हैं, जो नहीं चाहते हैं कि गरीब परिवारों की बेटियां आगे बढ़ें। इसके साथ ही सीएम ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हृदय में तमिलनाडु और तमिल संस्कृति का विशेष स्थान है और आज राज्य के विकास के लिए संकल्पित होकर केंद्र सरकार निरंतर सहयोग प्रदान कर रही है।

भोपाल में कांग्रेस आईटी सेल के 3 वर्कर्स हिरासत में

वसुंधरा राजे का कथित पत्र वायरल किया, राजस्थान लेकर जाएगी पुलिस, जीतू पटवारी बोले- झुकेंगे नहीं

भोपाल (नप्र)। राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के एक कथित पत्र को सोशल मीडिया पर पोस्ट करने पर एमपी कांग्रेस आईटी सेल के 3 कार्यकर्ता पुलिस हिरासत में हैं। इनमें निखिल, बिलाल और इनाम शामिल हैं। इसकी जानकारी कांग्रेस सांसद विवेक तन्खा ने फेसबुक के माध्यम से दी है।

कांग्रेस सांसद विवेक तन्खा ने फोन पर भास्कर को बताया कि पुलिस ने शुरू में कांग्रेस आईटी सेल के 7 कार्यकर्ताओं को उठाया था, लेकिन बाद में उन्हें रिहा कर दिया। इसके बाद तीन कार्यकर्ताओं को 27 घंटों से हिरासत में रखा गया है। हमारी लीगल टीम दोपहर 1:30 बजे हाई कोर्ट में याचिका दायर करने वाली है।

विवेक तन्खा ने बताया- 30 घंटे से ज्यादा हो गए। साइबर पुलिस ने कार्यकर्ताओं को बिना किसी वाजिब कारण के हिरासत में रखा है। उन्होंने मुख्यमंत्री और डीजीपी को टैग करते हुए कहा कि एमपी पुलिस की इस कार्रवाई से उन्हें आश्चर्य और निराशा हुई है।

महिला आरक्षण की आड़ में अवैध परिसीमन के लिए षड्यंत्र के संकेत

वहीं कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा कि उन्होंने वसुंधरा राजे का पत्र ध्यान से पढ़ा है। इसमें महिला आरक्षण की आड़ में अवैध परिसीमन के संभावित षड्यंत्र के गंभीर संकेत मिलते हैं। उनके मुताबिक, यह मामला भाजपा के भीतर डर और बौखलाहट को भी दर्शाता है।

'फर्जी पत्र' बताने के बाद कार्रवाई पर सवाल- तन्खा ने आगे लिखा- वसुंधरा राजे की तथाकथित ट्वीट, जिसे लाखों लोगों ने देखा और साझा किया। 15-16 अप्रैल से सार्वजनिक रूप से प्रसारित हो रही थी। बाद में 18 अप्रैल को शाम लगभग 8 बजे इसे फर्जी पत्र बताया गया। ऐसे में इस आधार पर हिरासत में लेना उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि पत्र को सोशल मीडिया पर साझा करने के लिए तीन कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर एफआईआर दर्ज की गई है। पटवारी ने चुनौती देते हुए कहा कि कार्रवाई करनी है तो उन पर की जाए, कार्यकर्ताओं पर नहीं। वे और पूरी पार्टी अपने कार्यकर्ताओं के साथ मजबूती से खड़ी है। न डरेंगे, न झुकेंगे।

राजस्थान लेकर जाएगी पुलिस- मामले में कांग्रेस मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक ने कहा- कार्यकर्ताओं के नाम बताना अभी उचित नहीं है। उनके परिजन उनके साथ हैं। राजस्थान पुलिस उन्हें अपने साथ ले जाने की तैयारी में है। वह स्वयं पुलिस कमिश्नर के पास गए थे। उन्होंने बताया कि कमिश्नर ने तीन-चार थानों में फोन कर जानकारी लेने की कोशिश की, लेकिन डिप्टी कमिश्नर को भी पूरी जानकारी नहीं थी। मुकेश नायक के अनुसार, डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि राजस्थान पुलिस इस मामले में कोई स्पष्ट जानकारी साझा नहीं कर रही है।

कांग्रेस प्रवक्ता ने भी उठाए सवाल

कांग्रेस प्रवक्ता अभिनव बारोलिया ने कथित पत्र को सोशल मीडिया पर साझा करते हुए लिखा कि वसुंधरा राजे के एक महत्वपूर्ण पत्र ने बीजेपी को कटघरे में खड़ा कर दिया है। महिला आरक्षण की आड़ में चल रहे पूरे षड्यंत्र को उजागर किया है।

'सब पर एफआईआर करो या सच्चाई स्वीकार करो'

उन्होंने सवाल उठाया कि जब वही पत्र लाखों लोगों ने साझा किया है, तो कार्रवाई केवल चुनिंदा लोगों पर ही क्यों की जा रही है। उन्होंने कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि वसुंधरा राजे ने पहले आवेश में आकर पत्र लिखा और बाद में पार्टी में कार्रवाई की आशंका के चलते उससे पीछे हट गईं।अभिनव बारोलिया ने कहा कि अगर पत्र में लिखी बातें गलत हैं तो सभी पर एफआईआर दर्ज की जानी चाहिए। अगर सही हैं तो सच्चाई को दबाना बंद किया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि उन पर भी एफआईआर दर्ज की जाए।

संपादकीय

मप्र: बेलगाम भाजपा नेता

मध्यप्रदेश में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के कुछ नेता जिस तरह सार्वजनिक रूप से दबंगई दिखा रहे हैं और कानून व्यवस्था को चुनौती दे रहे हैं, वह खुद सरकार और उसके रसूख को ही चुनौती है। ऐसे में मामलों में पार्टी और जिम्मेदार लोगों का मौन कई सवाल खड़े करता है। क्योंकि जो सबकी आंखों के सामने हो रहा है, वह आम जनता को कौड़ी मोल समझने की निर्दय मानसिकता और सत्ता का मद है। पिछले कुछ सालों में ऐसी घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। इसी कड़ी में ताजा घटनाक्रम पिछोर के भाजपा विधायक प्रीतम लोधी का वायरल हुआ, वह वीडियो है, जिसमें वो एसडीओपी को ही सीधे धमकाते दिख रहे हैं। प्रीतम वीडियो में साफ कह रहे हैं कि वे करैरा के एसडीओपी के बंगले को 10 हजार लोगों को ले जाकर गोबर से भरवा देंगे। वो यह भी कहते सुनाई दे रहे हैं कि मेरा मुक्का पहले ढाई किलो का था, अब यह ढाई सौ किलो का हो गया है। गौरतलब है कि हाल में प्रीतम के बेटे दिनेश लोधी ने अपने थार वाहन से पांच लोगों को टक्कर मार दी थी। इसकी व्यापक प्रतिक्रिया हुई थी। इस मामले में पुलिस की सख्ती से नाराज होकर प्रीतम ने यह वीडियो जारी कराया है। बकौल प्रीतम उन्हें बताया जा रहा है कि उनके उद्दंड पुत्र के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिल्ली से आ रहे हैं। दरअसल, हाल ही में प्रीतम के बेटे ने थार वाहन से पांच लोगों को टक्कर मार दी थी। इस मामले में वो पुलिस की सख्ती से वे नाराज हो गए। उनका कहना है कि उन्हें बताया जा रहा है कि इस मामले में दिल्ली से निर्देश आ रहे हैं। ये निर्देश दिल्ली से ही क्यों आ रहे हैं? कौन दे रहा है? विधायक लोधी ने अपने बेटे की करतूत पर क्षमा मांगने की जगह पार्टी नेतृत्व से 15 दिनों के भीतर स्पष्टीकरण मांगा है। इस बारे में जब मीडिया ने पार्टी प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल से सवाल किया तो उनका जवाब था कि पार्टी ने इसका संज्ञान लिया है। ऐसे तत्वों पर पार्टी कोई कार्रवाई करेगी या नहीं, इस बारे में वो मौन रहे। वैसे राज्य में प्रीतम लोधी की दबंगई का यह कोई पहला मामला नहीं है। इसके पहले खंडवा में भाजपा नेता लवकुश राठौर पर अपनी थार से एक कार को टक्कर मारकर हत्या करने का आरोप लगा, जिसे शुरू में सड़क हादसा माना जा रहा था, लेकिन बाद में जांच में हत्या का खुलासा हुआ। सतना के नागौद इलाके में भाजपा मंडल अध्यक्ष पुलकित टंडन पर एक महिला के साथ सरेआम मारपीट करने का आरोप लगा। इसी तरह अशोकनगर में भाजपा नेता लक्ष्मीनारायण यादव पर रात के अंधेरे में एक महिला के घर में घुसकर बदसलूकी और मारपीट करने का आरोप लगा। सागर जिले बीजेपी के एक नेता ने ढाबे पर अंधाधुंध फायरिंग की। भाजपा विधायक नरेंद्र कुशवाहा द्वारा भिंड में कलेक्टर को मुक्का दिखाने और मऊगंज विधायक प्रदीप पटेल द्वारा पुलिस के खिलाफ धरना देने के मामले सामने आए हैं। विपक्षी कांग्रेस ने इसे राज्य में सत्तारूढ़ पार्टी के नेताओं को 'गुंडागर्दी का लाइसेंस' बताया है। सवाल ये है कि भाजपा नेता क्या अब सत्ता के मद में शिष्टाचार और नैतिक मर्यादाओं को भी भूल गए हैं। वैसे भी प्रीतम लोधी की भाषा सीधे-सीधे राज्य के मुख्यमंत्री को भी चुनौती है, क्योंकि गृह विभाग उन्हीं के पास है और पुलिस की साख कायम रखने की जिम्मेदारी भी उन्हीं की है। उम्मीद की जाए कि सरकार पार्टी के ऐसे उद्दंड तत्वों के साथ सख्ती से साथ पेश आएगी। खामोशी से ही सही, जनता सब देख रही है।

नजरिया

अवधेश कुमार

लेखक दिल्ली निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

महिला आरक्षण की फिर वही परिणति क्यों?

यानी कुल 528 लोकसभा सदस्य उपस्थित थे तो 352 सदस्यों का समर्थन चाहिए था वैसे उपस्थिति से 34 ज्यादा सांसदों ने सरकार के पक्ष में वोट डाला। अगर सामान्य विधेयक होता तो पारित हो गया होता। 1996 से महिलाओं को लोकसभा और राज्य की विधानसभा में आरक्षण देने का मामला लटका हुआ है और विरोधी किसी न किसी बहाने इसमें अड़चन डालते आ रहे हैं। किसी का तर्क कुछ भी हो निष्कर्ष यही है वही प्रक्रिया फिर दोहराई गई है। अब इसमें गुणात्मक अंतर यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार ने सितंबर 2023 में नारी शक्ति वंदन अधिनियम के नाम से 33त्न महिलाओं के आरक्षण का कानून संसद द्वारा पारित करवा लिया है। इसलिए उसको लागू तो होना है। किंतु अब विधेयक के गिर जाने से 2029 लोकसभा चुनाव में यह लागू नहीं हो सकता।

लगभग 12 वर्षों के शासनकाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के लिए यह पहला अवसर है जब कोई विधेयक पारित होने से लोकसभा में वंचित रह गया। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने घोषणा किया कि विधेयक के पक्ष में 298 तथा विरोध में 230 मत पड़े। हालांकि सदन के बहुमत में विधायक के पक्ष में वोट डाला किंतु संविधान संशोधन विधेयक होने के कारण दो तिहाई बहुमत यानी चाहिए था और इसलिए यह पारित नहीं हो सका। यानी कुल 528 लोकसभा सदस्य उपस्थित थे तो 352 सदस्यों का समर्थन चाहिए था वैसे उपस्थिति से 34 ज्यादा सांसदों ने सरकार के पक्ष में वोट डाला। अगर सामान्य विधेयक होता तो पारित हो गया होता। 1996 से महिलाओं को लोकसभा और राज्य की विधानसभा में आरक्षण देने का मामला लटका हुआ है और विरोधी किसी न किसी बहाने इसमें अड़चन डालते आ रहे हैं। किसी का तर्क कुछ भी हो निष्कर्ष यही है वही प्रक्रिया फिर दोहराई गई है। अब इसमें गुणात्मक अंतर यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार ने सितंबर 2023 में नारी शक्ति वंदन अधिनियम के नाम से 33 प्रतिशत महिलाओं के आरक्षण का कानून संसद द्वारा पारित करवा लिया है। इसलिए उसको लागू तो होना है। किंतु अब विधेयक के गिर जाने से 2029 लोकसभा चुनाव में यह लागू नहीं हो सकता। इसके लिए हमें 2034 की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

दरअसल, 2023 के अधिनियम में यह प्रावधान था कि अगली जनगणना और फिर परिसीमन हो जाने के बाद इसे लागू किया जाएगा। तब अनुमान यह था कि जनगणना और परिसीमन की प्रक्रिया 2029 तक पूरी हो चुकी होगी इसलिए इसे लागू करने में समस्या नहीं होगी। चूंकि यह पूरी नहीं हुई तो नरेंद्र मोदी सरकार ने इसे संविधान संशोधन के जरिए तत्काल लागू करने का रास्ता चुना। पूरे प्रकरण का कठोर सच यह है कि इन तीनों विधेयकों में ऐसा कुछ नहीं था जिसको आशंका की दृष्टि से देखा जाए और जिसका इस सीमा तक विरोध हो कि काले झंडे और काले बिल्ले तक पार्टियां व सांसद लगा लें। इनमें संविधान (131वां संशोधन) विधेयक, 2026 लोकसभा की सीटों की अधिकतम संख्या को बढ़ाकर 850 करने का प्रावधान करता था जिनमें राज्यों के लिए 815 और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए 35 सीटें थीं। दूसरा,परिसीमन विधेयक, 2026 नई जनगणना के आधार पर निर्वाचन क्षेत्रों के पुनर्निर्धारण के लिए परिसीमन आयोग के गठन का प्रावधान करता था। और तीसरा,केंद्र शासित प्रदेश कानून (संशोधन) विधेयक, 2026 दिल्ली, जम्मू-कश्मीर और पुडुचेरी जैसे केंद्र शासित प्रदेशों में महिला आरक्षण लागू करने के लिए था। विपक्ष का मुख्य विरोध पहले विधेयक से था। वस्तुतः संसद का विशेष सत्र आरंभ होने के पहले ही विपक्ष ने अविश्वसनीय रूप से विरोधी रख अपनाकर अपने संसदीय व्यवहार का संकेत दे दिया था। विपक्ष के सभी नेताओं ने, जिनमें महिला सांसद भी शामिल हैं नारी शक्ति वंदन अधिनियम संशोधन संबंधी विधेयकों का जैसा विरोध किया उसमें साफ हो गया कि इनका पारित होना संभव नहीं है। भाजपा के मंत्रियों ने विपक्ष के नेताओं से बात करनी शुरू की। स्वयं प्रधानमंत्री ने दो पोस्ट से अपील की। इसके पहले वे अपने भाषण में अपील कर चुके थे कि श्रेय आप लोग ले लीजिए लेकिन महिला आरक्षण में बाधा मत बनिए। उन्होंने यहां तक कहा कि मैं इसके लिए तैयार हूं कि कल आप सबकी तस्वीर समाचार पत्रों में छपवाकर श्रेय दूंगा। लेकिन विपक्ष पहले से मन बनकर बैठा था। उन्होंने अपनी अपील में लिखा कि अपने घर में मां-बहन- बेटी -पत्नी सबको देखिए और उनके अधिकार के लिए विचार कर मतदान करिए।

निष्पक्ष होकर विवेक, तथ्य और तर्क के साथ विचार करनेवालों का निष्कर्ष है कि पूरा विरोध एकपक्षीय अतिवाद से ग्रस्त रहा। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने तो इसे देश विरोधी और देश को बांटने वाला विधायक तक करार दिया। उन्होंने कहा कि ये देश का भूगोल बदलना चाहते हैं जो हम कभी नहीं होने देंगे। इससे अधिक अतिवादी वक्तव्य और कुछ नहीं हो सकता। उनका भाषण भाजपा के वरिष्ठ सांसदों को भी इतना आपत्तिजनक लगा कि राजनाथ सिंह जैसे नेताओं को लोकसभा अध्यक्ष से अपील करनी पड़ी कि इन्हें रिकॉर्ड से हटाया जाए। राहुल गांधी के भाषण के एक बड़े अंश को असंसदीय करार देकर हटा दिया गया। सदन में विपक्ष के नेता के भाषण के अंशों को असंसदीय श्रेणी में ला दिया जाए इससे दुखद स्थिति कुछ नहीं हो सकती। अगर इरादा विधेयक पर बहस कर इसमें उचित संशोधन करना हो तो आपके भाषण में उससे संबंधित सुझाव होते हैं। सरकार की राजनीतिक आलोचना में समस्या नहीं है। किंतु पूरी बहस सामान्य आलोचना ही नहीं विधेयक के विषय वस्तु से भी काफी दूर चला गया था। प्रश्न उठाया जा रहा था कि आखिर 850 सीटों का आपका आधार क्या है? इसी तरह के दक्षिण के राज्यों को इसमें नजरअंदाज किया जा रहा ? बजट सत्र में गृह मंत्री अमित शाह ने विपक्ष के नेताओं से बातचीत शुरू की तो बताया होगा कि हर राज्य की 50 प्रतिशत लोकसभा एवं विधानसभा की सीटें बढ़ाने का फार्मूला तय हुआ है। सोचा गया कि आज परिसीमन हो तो लोकसभा एवं विधानसभाओं की कितनी सीटें बढ़ सकतीं हैं। गृह मंत्री ने स्पष्ट किया कि अगर उत्तर प्रदेश की सीट 80 से 120 हो रही है तो तमिलनाडु की 39 से 59। इसी तरह अन्य राज्यों के भी विवरण दिए गए। हंगामा इस पर भी था कि 2011 की जनगणना को आधार क्यों बनाया गया? गृह मंत्री का उत्तर था कि 2011 की जनगणना का आधार बनाते तो तमिलनाडु की सुट केवल 49 होती। यही सच है।

यहां दो बातें समझने की है। एक, वर्तमान 543 सीटों में 33 प्रतिशत आरक्षण क्यों नहीं दिया गया? 2023 में जब विधेयक पारित हुआ तभी उसमें जनगणना और परिसीमन का प्रावधान था। विपक्ष ने विरोध नहीं किया? 1996 से उसके विरोध के पीछे सबसे बड़ा कारण यही था कि आपसी बातचीत में नेता बोलते थे कि 543 में से 33 प्रतिशत महिलाओं को मिल गया तो अनेक पुरुष नेताओं को घर बैठ जाना पड़ेगा और राजनीति का नाश हो जाएगा। पिछड़ों के आरक्षण आदि का बहाना बनाया गया। तो पुराने अनुभवों का ध्यान रखते हुए मोदी सरकार ने रास्ता निकाला कि 543 सीटें जस की तस रहें और बढ़ी 272 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होश सहमति हुई तभी 2023 में कानून बन सका। आज यह तर्क देने वाले अपनी सरकारों में इसके लिए तैयार नहीं थे। 1996 में विरोध करने वाले उस संयुक्त मोर्चा सरकार के साथी थे तो 2008 से 2010 तक विरोध करने वाले संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के साथी। इनमें समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल और कुछ समय तक जनता दल यूनाइटेड अग्रणी रहे। दूसरे दलों के सांसद भी साथ देते रहे। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने 1998 और 1999 में महिला आरक्षण विधेयक चलाया किंतु आम सभमति नहीं बन सकी। 2010 में राज्यसभा में भाजपा के समर्थन से विधेयक पारित हुआ किंतु उनके साथी दलों ने विरोध किया और लोकसभा में पारित करना मुश्किल था। इस पृष्ठभूमि को जानने वाले यह प्रश्न नहीं उठाएंगे। दूसरे, हर 10 वर्ष पर संविधान लोकसभा एवं विधानसभा क्षेत्रों के जनसंख्या के आधार पर परिसीमन का प्रावधान करता है। 1971 तक नियमित होता रहा। 1976 में आपातकाल के समय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी सरकार ने 42वां संशोधन कर 2001 तक लोकसभा एवं विधानसभाओं की सीटें न बढ़ाने का प्रावधान कर दिया। इस कारण 1981 और 91 में परिसीमन आयोग का गठन नहीं हुआ। 1976 में लगभग 57.5 करोड़ आबादी थी और आज 140 करोड़ से ऊपर। क्या उस आधार पर आज लोकसभा या विधानसभाओं की सीटें होनी चाहिए? 2001 में वाजपेयी सरकार ने भी परिसीमन आयोग तो बनाया लेकिन केवल क्षेत्र का समायोजन हुआ संख्या नहीं बढ़ाई। हर सरकार इस विषय को स्पर्श करने से घबराती रही, क्योंकि दक्षिणी राज्यों की आबादी उत्तर के अनुपात में कम होने के कारण उनको सीटें कम मिलती और विरोध होता। मोदी सरकार ने उसी का रास्ता निकाला। थोड़े शब्दों में कहें तो अगर दल वाकई महिला आरक्षण के पक्ष में होते तो विरोध जताते हुए कुछ संशोधन डालकर पारित कर देते। सीटों की संख्या की लिखित गारंटी के प्रश्न पर गृह मंत्री ने कहा कि आप विधेयक पारित करते हैं तो हम नया संशोधन सीटों की संख्या डालकर पेश करने को तैयार हैं। वास्तव में यह कहीं पे निशाना कहीं पे निगाहें वाली बात थी। कांग्रेस और कुछ विपक्षी दलों को दिखाना था कि हम संसद में नरेंद्र मोदी सरकार को पराजित कर सकते हैं। किसी नेता ने महिलाओं को आरक्षण न मिलने पर अफसोस प्रकट नहीं किया। श इसे लोकतंत्र की विजय बताते हुए नए दौर की शुरुआत बताया जा रहा है। प्रियंका वाड्रा ने इसे ऐतिहासिक दिन जताया। थोड़े शब्दों में कहें तो महिलाओं के आरक्षण पर विरोधियों का जो रुख हमने 1996 से देखा लगभग वही अलग रूपों में फिर संसद में था और इसी की परिणति विधेयक के गिरने के रूप में सामने आई।

विश्व पृथ्वी दिवस पर विशेष

राज कुमार सिन्हा

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

असंतुलित विकास और पारिस्थितिकी विनाश

पृथ्वी मनुष्य जाति का निवास स्थान है।यह एक ऐसा ग्रह है जहां जीवन है। यही पृथ्वी प्रकृति है। प्रकृति ही मनुष्य जाति के लिए जीने की चीजें जुटाती है। किन्तु आज पृथ्वी का पर्यावरण खतरे में है। हम एक ऐसे समय में रह रहे हैं जब संपूर्ण पारिस्थितिकी विनाश की संभावना के बारे में चर्चा करना जरूरी है। हमारी वर्तमान सामाजिक व्यवस्था, मानव स्वतंत्रता और प्रकृति के साथ मानवीय संबंध यांत्रिक दृष्टिकोण में उलझी हुई है, जो सीधे तौर पर पारिस्थितिक अनिवार्यता के विपरीत है। हम जीवित हैं क्योंकि प्रकृति जीवित है। पृथ्वी हमें जीवन देती है। हम पृथ्वी का अभिन्न अंग हैं क्योंकि हम सांस, पानी और पोषण जैसी जीवनदायी चीजों के माध्यम से गहराई से जुड़े हुए हैं। चूंकि हम जीवनयापन के लिए प्रकृति पर निर्भर हैं, इसलिए प्रकृति का विनाश भोजन और पानी, जीवन और आजीविका के मानव अधिकारों का उल्लंघन है। हम प्रकृति को अधिकार नहीं देते। धरती माता के अपने अधिकार हैं। हमें उनके नियमों को पहचानना और उनके अनुसार जीवन जीना होगा। वैश्विक प्रकृति संरक्षण सूचकांक 2024' की रिपोर्ट में 180 देशों में भारत को 176 वें स्थान पर रखा गया है। भारत का सबसे निचले स्थान पर होना मुख्य रूप से अकुशल भूमि-प्रबंधन और जैव-विविधता पर बढ़ते खतरों के कारण है।

वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि पृथ्वी की जीवन-सहायक प्रणालियां इतनी क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं कि यह ग्रह अब असुरक्षित होता जा रहा है। वैज्ञानिकों के आकलन के अनुसार, मानव-जनित प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के विनाश के कारण नौ में से छह 'ग्रहीय सीमाएं' टूट चुकी हैं। ये सीमाएं जलवायु, जल और जैव-विविधता जैसी प्रमुख वैश्विक प्रणालियों से जुड़ी हैं, जो पृथ्वी को स्वस्थ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

इन सीमाओं के टूटने का अर्थ है कि पृथ्वी उस सुरक्षित और स्थिर अवस्था से बहुत दूर जा चुकी है, जो लगभग 10,000 वर्ष पूर्व अंतिम हिमयुग के अंत से लेकर औद्योगिक क्रांति के प्रारंभ तक विद्यमान थी। पिछले 50 वर्षों में पृथ्वी से आधे से अधिक पक्षी, स्तनधारी, सरीसृप, उभयचर और मछलियां लुप्त हो चुकी हैं। वर्तमान में विलुप्त होने की दर मानव-पूर्व काल की तुलना में 100 से 1000 गुना अधिक है, जो डायनासोर के विलुप्त होने के बाद से सबसे बड़ी विलुप्ति घटना मानी जा रही है। इसका सीधा प्रभाव हमारी खाद्य और जल सुरक्षा पर पड़ रहा है, साथ ही यह हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी खतरा बनता जा रहा है।स्टेट ऑफ द ग्लोबल क्लाइमेट रिपोर्ट 2025 के अनुसार पृथ्वी का मौसम अब तक के देखे गए इतिहास में किसी भी समय की तुलना में कहीं ज्यादा असंतुलित हो गया है, ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती मात्रा के कारण वायुमंडल और महासागर लगातार गर्म हो रहे हैं और बर्फ पिघल रही है। इस रिपोर्ट में पहली बार, पृथ्वी के 'ऊर्जा असंतुलन' को जलवायु के प्रमुख संकेतकों में से एक के रूप में शामिल किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, अब पृथ्वी की ऊर्जा में असंतुलन पिछले 65 सालों के रिकॉर्ड में सबसे ज्यादा है।

पारिस्थितिकी विज्ञान और प्राचीन ज्ञान दोनों ही हमें सिखाते हैं कि समस्त जीवन मिट्टी पर निर्भर करता है। जीवित मिट्टी एक जटिल खाद्य श्रृंखला है जो जीवन से भरपूर है। मिट्टी में मौजूद यही जीवन मिट्टी की उर्वरता को पुनर्जीवित करता है और पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराता है, जिससे हमारी कृषि को सहारा मिलता है। कृषि क्षेत्र 'ग्रीनहाउस गैसों' का एक प्रमुख स्रोत बन चुका है, जिससे भविष्य में खाद्य सुरक्षा पर गंभीर संकट उत्पन्न हो सकता है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग को कम या बंद करने से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को घटाया जा सकता है। इसके विकल्प के रूप में 'प्राकृतिक खेती' एक प्रभावी समाधान प्रस्तुत करती है। प्राकृतिक खेती से मिट्टी की जल-धारण क्षमता बढ़ती है, जिससे जल-संरक्षण होता है और सूखा व बाढ़ जैसी चरम मौसमी घटनाओं के प्रति लचीलापन भी बढ़ता है। यह जैव-विविधता को बढ़ावा देती है और फसलों को जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक प्रतिरोधी बनाती है। विविध फसलों की खेती मिट्टी के स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है तथा कीटों और बीमारियों को नियंत्रित करने में सहायक होती है। धरती की 'किडनी' कहे जाने वाले वेटलैंड (आर्द्रभूमि) आज उपेक्षा का शिकार हैं। गांवों और शहरों में इन आर्द्रभूमियों को पाटकर खेती और आवास के लिए उपयोग किया जा रहा है। जबकि ताल-तलैया, जलाशय और तटीय क्षेत्र न केवल हजारों जैविक इकाइयों का आश्रय हैं, बल्कि जलवायु परिवर्तन से निपटने में भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। आर्द्रभूमियां कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर तापमान को कम करने और प्रदूषण घटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। दलदली भूमि की कार्बन अवशोषण क्षमता जंगलों की तुलना में लगभग दोगुनी होती है। पृथ्वी की अर्थव्यवस्था पर भी इस संकट का गहरा प्रभाव पड़ रहा है। धरती को बर्बाद करता प्लास्टिक का 99 प्रतिशत से अधिक उत्पादन जीवाश्म ईंधनों जैसे तेल और गैस से किया जाता है, जिससे हमारे रोजमर्रा के प्लास्टिक उपयोग का सीधा संबंध खनन एवं उत्खनन उद्योगों, बढ़ते उत्सर्जन, प्रदूषण और पर्यावरणीय अन्याय से जुड़ जाता है। प्लास्टिक के पूरे जीवनचक्र कच्चे संसाधनों के उत्खनन और उत्पादन से लेकर उपयोग के बाद निपटान तक का अध्ययन यह दर्शाता है कि औद्योगिक और नीतिगत निर्णय इन प्रभावों को किस प्रकार आकार देते हैं। समुद्र पृथ्वी की सतह का 71 प्रतिशत भाग घेरते हैं, जबकि मात्र एक चौथाई भूमि ही हमारे प्रत्यक्ष उपयोग में आती है। इसके बावजूद हम प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक और असंतुलित दोहन कर रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया के फ्लिंडर्स विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक कोरी ब्रैडशॉ के नेतृत्व में किए गए एक अध्ययन में पाया गया है कि मानव आबादी पृथ्वी की दीर्घकालिक वहन क्षमता से अधिक हो चुकी है। इस अध्ययन में दो शताब्दियों के जनसंख्या आंकड़ों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि वर्तमान उपभोग स्तरों के साथ पृथ्वी मानवता को स्थायी रूप से सहारा नहीं दे सकती। पृथ्वी प्रणाली की स्थिरता, लचीलापन और मानव कल्याण आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं, लेकिन इस परस्पर निर्भरता को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है। यदि संसाधनों का न्यायपूर्ण और संतुलित उपयोग किया जाए, तो सभी के लिए गरीबी उन्मूलन और पर्यावरणीय सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

सभी के लिए संसाधनों की उपलब्धता और पृथ्वी की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि आर्थिक और तकनीकी बदलावों के साथ-साथ जल और पोषक तत्वों जैसे महत्वपूर्ण संसाधनों तक पहुंच में असमानताओं को कम किया जाए। ÷सुरक्षित और न्यायसंगत स्थान÷ की अवधारणा इसी दिशा में एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है।

महात्मा गांधी के विचार आज भी इस संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनका मानना था कि मनुष्य को प्रकृति से केवल अपनी आवश्यकताओं के अनुसार ही लेना चाहिए, न कि लालच या अति-उपभोग के आधार पर। उन्होंने सादगी, आत्मसंयम और संतुलित जीवनशैली को महत्व दिया। गांधी ने अंधाधुंध औद्योगिकीकरण और मशीनों पर अत्यधिक निर्भरता के प्रति चेतावनी दी थी। वे 'स्वदेशी' और 'ग्राम स्वराज' के समर्थक थे, जहां स्थानीय संसाधनों का टिकाऊ उपयोग ही समाज और पर्यावरण दोनों के लिए हितकारी होता है। ÷कम से कम लेना और ज्यादा से ज्यादा देना÷ सतत विकास का मूल मंत्र है–ऐसा विकास जिसमें पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन बना रहे। प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीवन जीना कोई नया विचार नहीं है। आदिवासी समुदाय सदियों से इस जीवनशैली का पालन करते आए हैं। वे प्रकृति के चक्रों और संतुलन को समझते हैं और केवल उतना ही लेते हैं जितना आवश्यक होता है, बाकी प्रकृति के लिए छोड़ देते हैं। परिस्थितियां यह सोचने पर मजबूर करता है कि पृथ्वी को बचाने के लिए हमें अपने जीवन के तरीके, उपभोग के पैटर्न और विकास की दिशा में तत्काल बदलाव लाने होंगे। प्रकृति के विरुद्ध हिंसा और पारिस्थितिक न्याय के सिद्धांतों के उल्लंघन को अंतर्राष्ट्रीय कानून में पारिस्थितिक विनाश के अपराध के रूप में परिभाषित करने के लिए एक आंदोलन जोर पकड़ रहा है। दुनिया भर में लोग पारिस्थितिक तंत्रों को होने वाले नुकसान और विनाश को रोकने के लिए कदम उठा रहे हैं, जो मनुष्यों सहित प्रजातियों के स्वास्थ्य और कल्याण को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

पृथ्वी बचाओ, जीवन बचाओ

पृथ्वी दिवस पर विशेष

डॉ. रामेश्वर मिश्र

युवा लेखक

'पृथ्वी बचाओ, जीवन बचाओ' केवल एक नारा नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के अस्तित्व का मूल सिद्धांत है, जिसे समझना और अपनाना आज अत्यंत आवश्यक हो गया है। पृथ्वी हमारे लिए केवल एक ग्रह नहीं, बल्कि वह आधार है जिस पर समस्त जीवन टिका हुआ है। भारतीय वैदिक परंपरा में इसे माता के रूप में स्वीकार किया गया है-'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः', जो मनुष्य और प्रकृति के बीच गहरे आत्मीय और उत्तरदायित्वपूर्ण संबंध को दर्शाता है। यह संबंध केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि नैतिक और दार्शनिक भी है, जिसमें मनुष्य को प्रकृति का संरक्षक माना गया है, न कि उसका स्वामी।

इसी संदर्भ में हर वर्ष 22 अप्रैल को मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस हमें प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारियों की याद दिलाता है। वर्ष 2026 की थीम 'हमारी शक्ति, हमारी पृथ्वी' इस बात पर बल देती है कि पृथ्वी की रक्षा की शक्ति हमारे अपने हाथों में है। यह थीम हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से हम पर्यावरणीय संकटों को कम कर सकते हैं। पृथ्वी दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाना, प्राकृतिक संसाधनों के महत्व को समझाना और सतत विकास की दिशा में ठोस कदम उठाने के लिए प्रेरित करना है।

प्राचीन भारतीय चिंतन में प्रकृति और मानव के बीच संतुलन को अत्यंत महत्व दिया गया है। पंचमहाभूत-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को सृष्टि का आधार माना गया है। इन तत्वों का संतुलन ही जीवन की निरंतरता सुनिश्चित करता है। यजुर्वेद का शांति मंत्र इस संतुलन की आवश्यकता को स्पष्ट करता है- 'द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।' यह मंत्र हमें यह संदेश देता है कि आकाश, वायु, पृथ्वी, जल और वनस्पतियों में संतुलन और शांति बनी रहनी चाहिए। जब इन तत्वों में असंतुलन उत्पन्न होता है, तब उसका प्रभाव समस्त जीवन पर पड़ता है।

वर्तमान समय में मानव ने अपनी भौतिक आवश्यकताओं और इच्छाओं को इतना बढ़ा लिया है कि वह प्रकृति के साथ अपने संबंध को भूल गया है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और तकनीकी प्रगति ने जहाँ जीवन को सुविधाजनक बनाया है, वहीं दूसरी ओर उन्होंने पर्यावरण पर अत्यधिक दबाव भी डाला है। जंगलों की अंधाधुंध कटाई, नदियों का प्रदूषण, वायु में विषाक्त गैसों की वृद्धि और भूमि की उर्वरता में कमी जैसे संकट आज वैश्विक स्तर पर चिंता का विषय बन चुके हैं। जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, समुद्र स्तर में वृद्धि और अनियमित मौसम चक्र इसके प्रत्यक्ष परिणाम हैं।

वेदों और उपनिषदों में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्रकृति के प्रत्येक तत्व में दिव्यता का वास है 'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।' (ईशोपनिषद् 1) अर्थात् इस जगत में जो कुछ भी है, वह ईश्वर से व्याप्त है। इस दृष्टिकोण से प्रकृति के साथ हमारा व्यवहार अत्यंत संवेदनशील और सम्मानपूर्ण होना चाहिए। जब हम प्रकृति का शोषण करते हैं, तो हम वस्तुतः उस दिव्यता का अनादर करते हैं जो उसमें विद्यमान है।

आज के समय में पर्यावरणीय संकट केवल प्राकृतिक समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और नैतिक संकट भी है। वायु प्रदूषण के कारण श्वसन संबंधी बीमारियाँ बढ़ रही हैं, जल प्रदूषण के कारण स्वच्छ जल की कमी हो रही है और भूमि के क्षरण से कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। इससे न केवल मानव जीवन संकट में पड़ रहा है, बल्कि समस्त जैव विविधता भी खतरे में है। अनेक जीव-जंतु और वनस्पतियाँ विलुप्ति के कगार पर हैं, जो पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन को और अधिक कमजोर कर रहा है।

भारतीय संस्कृति में वृक्षों और प्रकृति को विशेष सम्मान दिया गया है। वृक्षों को देवतुल्य माना गया है, क्योंकि वे न केवल जीवनदायिनी ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, बल्कि वर्षा, जल संरक्षण और पर्यावरण संतुलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है-'वनस्पतयः शान्तिः' अर्थात् वनस्पतियों में शांति बनी रहे। यह शांति तभी संभव है जब हम उन्हें सुरक्षित रखें और उनका संरक्षण करें।

अंततः, 'पृथ्वी बचाओ, जीवन बचाओ' केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भविष्य के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। हमें यह समझना होगा कि हम पृथ्वी के स्वामी नहीं, बल्कि उसके संरक्षक हैं। यदि हम आज जागरूक होकर अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे, तो हम एक सुरक्षित, स्वच्छ और संतुलित पर्यावरण आने वाली पीढ़ियों को दे सकेंगे।

इस संदर्भ में ऋग्वेद का यह संदेश अत्यंत प्रेरणादायक है-'सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।' अर्थात् हम सब मिलकर चलें, मिलकर विचार करें और मिलकर कार्य करें। यही सामूहिक चेतना और प्रयास पृथ्वी के संरक्षण और जीवन की रक्षा का सच्चा मार्ग है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

शशांक दुबे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मतलब निकल गया है तो पहचानते नहीं

आज दो दिन पहले की बात है। सुबह-सुबह चाय पीते हुए लोकल अखबार में एक प्रोग्राम की लंबी रिपोर्ट में उपस्थित लोगों की सूची में अपना नाम ढूँढने की असफल कोशिश कर ही रहा था कि अचानक मोबाइल की रिंग टोन बज उठी। डिस्प्ले में कोई नाम नहीं था, सिर्फ नंबर आ रहा था। निश्चित ही अजनबी या किसी कम परिचित का होगा। सामने से आवाज आई, 'पहचाना?', रोज रात को आईपीएल और ओटीटी पर गाली छाप प्रोग्राम देख के साबुन की बट्टी की तरह घिस चुके दिमाग पर जोर डालने के बाद भी याद नहीं आया। माफी माँगनी पड़ी। अब उसने दूसरा दांव चला, 'अरे शशांक्या स्कूल के दोस्त को नहीं पहचाना?' मुझे फिर माफी माँगनी पड़ी, क्योंकि बचपन के लगभग सभी दोस्तों को मैं भूल चुका हूँ। अब उसने तुरुप का इक्का खोला, 'अबे भूल गया, स्कूल से तड़ी मारकर भतवाल टॉकीज में हाथ की सफाई फिल्म किसके साथ देखी थी'? दिमाग की बत्ती घनघना के जली, चाय ढुलते ढुलते बची, 'अरे कमल्या तू!', दोनों यार गदगद हुए। घर आने को कहा।

वह आज ही आ गया। उसने पीले पड़ चुके मनी-प्लांट के पत्तों, किसी लोकल क्लब द्वारा बरसों पहले भेंट की गई जंगलगी शील्ड और कमजोर कील के कारण झुकने को आतुर पुरानी पेंटिंग को देख-देख घर की शान में खूब कसीदे कढ़े। मेरी जिस आवाज़ को पत्नी 'दिन खाली-खाली बर्तन' की तरह भूपिंदरनुमा करार कर चुकी है, उसे मुहम्मद रफी की तरह सुरीली बताया, भले ही मैं कवियों का सूर्या (फॉर्म के नज़रिये से) हूँ, उसने मेरी प्रतिभा पर पूरा 'विश्वास' कर 'कुमार' जैसा कुछ तो बड़े नाम वाला बताया। फिर उसने गला खखारकर धीमे से एक काम का कहा। काम था तो बड़ा और मेरी औकात भी हिंदी के लेखक जैसी ही थी, लेकिन संयोग से वह तीसरा आदमी मेरे कॉलेज का दोस्त था, इसलिए फोन पर ही काम हो गया। कमल्या भावुक हो गया। सत्तर के दशक की पति-पत्नी के तनावमयी रिश्तोंवाली फिल्मों के किसी नायक की तरह 'यार कुछ गलती मेरी थी, कुछ तुम्हारी भी थी, मगर अब मिलते रहना' टाइप का कुछ बोलने लगा। विदा लेने से पहले उसने अखबार के कान को उमेठकर उसे एक पर्ची की शक्ल देते हुए उस पर अपने घर का पता लिखा, जिसे मैंने श्रद्धापूर्वक पर्स में रख लिया।

पतों की ऐसी पर्चियाँ आए दिन हम सभी के पर्स में एंटर होती रहती हैं। फिर दो साल बाद जब नया पर्स खरीदते हैं और पुराने कागजों की सफाई करते हैं, तो दिमाग पर ज़ोर लगाना पड़ता है कि भाई यह बिना नाम वाला पता किसका है। हम बेदर्दी से इसे रेल्वे की पुरानी टिकट और एटीएम की धुँधलाई पर्ची के साथ डस्टबिन के हवाले कर देते हैं। लेकिन हाँ बाज़ मौकों पर उसे याद कर-करके यह गुनगुनाना नहीं भूलते कि मतलब निकल गया है तो पहचानते नहीं। दरअसल हम चाहते हैं कि ज़िंदगी में हमने एक बार किसी का काम किया हो या उसके किसी काम आए हों या काम के आशय की सफल-असफल कोशिश ही की हो, वह हमेशा हमें याद रखे, दशहरे, दिवाली, होली, ईद, क्रिसमस, बैसाखी की लख-लख बधाइयाँ दे, शादी-समारोह में कहीं मिले तो चार लोगों के सामने गरज कर कहे कि इन भाई साहब ने मेरा काम किया था, फिर हम खिसियाते हुए 'अरे नहीं नहीं हम कौन होते हैं, वह तो ऊपर वाला करता है' या 'भाभीजी के भाग्य से ऐसा हुआ है' या 'ये तो वक़्त वक़्त की बात है' टाइप का कुछ कहते हुए मन ही मन गदगदाएँ।

लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा होता नहीं है, क्योंकि वह भी हमारे जैसा ही है। अब जब हमारा काम हुआ था, तो हमने कहाँ अखबार में इश्तिहार देकर यह खबर छपवाई थी? यह तो हमारा ही किया कराया है कि आज रेल्वे, पुलिस, इन्कम टेक्स, पत्रकार, कस्टम वाले या इन जैसे ही काम के लोग हम जैसे कार्य-निपटानाकांक्षी लोगों से मिलते ही पहली बात यही कहते हैं- साब हमारे पेशे का तो एक ही उसूल है, 'हम सब को जानते तो हैं, मगर पहचानते नहीं।'

पृथ्वी को स्वच्छ सुंदर सुवासित बनाना ही होगा

मानव के अविवेकी और असंयमित आचरण से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। अन्तरराष्ट्रीय संस्था आईपीसीसी के एक अध्ययन के अनुसार, पिछली सदी में धरती का औसत तापमान 1.4 फारनेहाइट बढ़ा है। यह वृद्धि मौसम और जलवायु के विनाशकारी परिवर्तन का कारण बनी है। तीव्र औद्यौगिकीकरण, ग्रीन हाउस गैसों, जंगलों की कटान और भौतिकवादी भोगप्रधान जीवन शैली के कारण ध्रुवों, हिमनदों और पहाड़ी चोटियों की बर्फ पिघल रही है। अंटार्कटिका क्षेत्र से प्रति वर्ष 148 अरब टन बर्फ पिघल रही है। इस कारण समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। यह बढ़ता जल स्तर तटीय और द्वीपीय छोटे देशों को एक दिन लील लेगा। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने के लिए दिसम्बर 1997 में क्योटो प्रोटोकाल लाया गया था जिसे 160 देशों ने स्वीकार करते हुए कमी करने का संकल्प लिया। लेकिन अकेले 80 प्रतिशत ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन करने वाले अमेरिका ने इसे स्वीकार नहीं किया। सर्वसुख सम्पदा प्रदायिनी यह धरती एक तप्त भट्टी में तब्दील हो रही है।

पृथ्वी दिवस पर विशेष

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शिक्षक एवं शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।

नव जीवन में अगर कोई सम्बंध सर्वाधिक उदात्त, गरिमामय, पावन और प्रेमपूर्ण है तो वह है मां और पुत्र का सम्बंध। एक मां कभी भी अपनी संतान को भूखा-प्यासा, निर्बल और कष्ट का जीवन जीते नहीं देख सकती और ऐसा कोई पुत्र भी नहीं होगा जो मां की कराह सुन व्याकुल और व्यथित न हो। यही कारण है कि ऋषियों ने पृथ्वी की वन्दना माता के रूप में की। 'माता भूमिः पुत्रोहं पृथिव्याः' अथर्ववेद का यह सूत्र वाक्य धरती और मानव के सम्बंधों की न केवल गरिमामय व्याख्या करता है बल्कि धरती के प्रति मानवीय कर्तव्यों का निर्धारण भी। न केवल मानव के जीवन यापन के लिए बल्कि पशु-पक्षियों सहित लाखों-करोड़ों छोटे-बड़े जीवों के लिए धरती ने उपहार दिये हैं। लेकिन आज वह धरती अपने कुपुत्रों की करनी से घायल हो रुदन कर रही है। धरती से अधिकाधिक दोहन कर लेने की होड़ ने मनुष्य को अंधा बना दिया है और वह अपने ही पैरों में स्वयं कुल्हाड़ी मार रहा है। धरती संकट में है, धरती कराह रही है पर हम मौन हैं, क्यों?

मानव के अविवेकी और असंयमित आचरण से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। अन्तरराष्ट्रीय संस्था आईपीसीसी के एक अध्ययन के अनुसार, पिछली सदी में धरती का औसत तापमान 1.4 फारनेहाइट बढ़ा है। यह वृद्धि मौसम और जलवायु के विनाशकारी परिवर्तन का कारण बनी है। तीव्र औद्यौगिकीकरण, ग्रीन हाउस गैसों, जंगलों की कटान और भौतिकवादी भोगप्रधान जीवन शैली के कारण ध्रुवों, हिमनदों और पहाड़ी चोटियों की बर्फ पिघल रही है। अंटार्कटिका क्षेत्र से प्रति वर्ष 148 अरब टन बर्फ पिघल रही है। इस कारण समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। यह बढ़ता जल स्तर तटीय और द्वीपीय छोटे देशों को एक दिन लील लेगा। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने के लिए दिसम्बर 1997 में क्योटो प्रोटोकाल लाया गया था जिसे 160 देशों ने स्वीकार करते हुए कमी करने का संकल्प लिया। लेकिन अकेले 80 प्रतिशत ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन करने वाले अमेरिका ने इसे स्वीकार नहीं किया। सर्वसुख सम्पदा प्रदायिनी यह धरती एक तप्त भट्टी में तब्दील हो रही है।

यह प्लास्टिक युग है। भारतीय समाज भी अति आधुनिकता के व्यामोह में 'यूज एण्ड थ्रो' जीवन शैली के भंवरजाल में फंसा प्लास्टिक कचरा के रूप में हजारों टन कूड़ा प्रतिदिन घरों से बाहर फेंक रहा है। इस प्लास्टिक में से अधिकांश रिसायकिल नहीं हो पाता। यह गलता नहीं है और अपने अवयवों में टूटने में 1000 साल लगाता हैं। एक आंकड़े के मुताबिक भारत में प्रतिवर्ष 50 मीट्रिक टन प्लास्टिक का निर्माण होता है। विश्व में 10 करोड़ टन प्लास्टिक का उत्पादन अकेले अमेरिका प्रतिवर्ष करता है और एक करोड़ किलोग्राम प्लास्टिक कूड़े का उत्सर्जन भी। वहीं इटली द्वारा सर्वाधिक प्लास्टिक थैलियों की खपत की जाती है जो एक खरब प्रतिवर्ष है। पॉलीथीन थैलियों को जलाने से निकली कार्बन और कार्बन मोनो ऑक्साइड, रिफ्रिजरेटर और शीत भंडारण केन्द्रों से उत्सर्जित क्लोरो फलोरो कार्बन से सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणों से पृथ्वी की रक्षा करने वाली ओजोन परत में बड़े-बड़े छेद हो गये है। वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा एक अनुमान के अनुसार 37.16 गीगा टन हो गई है। प्रति एकड़ पैदावार बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अधाधुंध प्रयोग से मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरा शक्ति तो नष्ट हुई ही है बल्कि माटी भी जहरीली हो गई है। इस जहर के कारण मिट्टी को खाकर उसे खाद में बदलने वाले किसानों के मित्र केचुआ और अन्य छोटे कीट अब नहीं दिखते। दूध, अन्न, सब्जियां और भूगर्भ जल प्रदूषित हुआ है। परिणाम त्वचा रोग, टायफायड, मस्तिष्क ज्वर, फाइलेरिया,

दमा, कैंसर जैसे रोग जडें जमा रहे हैं और महामारी जैसा रूप ले रहे हैं। कल-कारखानों से निकलने वाला दूषित जल बिना किसी ट्रीटमेंट के सीधे नदियों में डाला जा रहा है। यमुना आज दिल्ली-आगरा में गंदे नाले का रूप ले चुकी है। गंगा का जल अपना औषधीय गुण खो चुका है। गंगाजल पीने और नहाने लायक नहीं बचा। गोमती अस्तित्व बचाये रखने को जूझ रही है। यही हाल कमोबेश अन्य नदियों का भी है। वरुणा और असी नदियों के चतुर्दिक बसी होने के कारण काशी नगरी वाराणसी कहलाई लेकिन आज दोनों नदियां शहर का मल-मूत्र और कचरा ढोने को विवश हैं। नदियां कारखानों का अपशिष्ट बहाने के माध्यम बन कर रह गई हैं।

तथाकथित विकास के नाम पर बडें बांध बनाकर नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को बांधा गया। बड़े बांधों के बनने से जैव विविधता खत्म हुई है। पहाड़ के सीने में उग आए कंक्रीट के जंगल ने प्राकृतिक परिवेश पर आघात किया है। धरती को बचाये रखने के लिए ही सितम्बर 1969 में सिएटल में अमेरिकी सीनेटर जेराल्ड नेल्सन ने 1970 के बसन्त में पर्यावरण को लेकर राष्ट्रव्यापी प्रदर्शन की घोषणा की ताकि लोग पर्यावरण की हो रही क्षति को समझ सकें। 1990 में पहली बार अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इसे मनाने का निश्चय किया जिसमें 141 देशों के 20 करोड़ लोगों की सहभागिता रही। हालांकि, 21 मार्च 1970 को संघ के तत्कालीन महासचिव यू थॉट ने 'पृथ्वी दिवस' को अन्तरराष्ट्रीय समारोह स्वीकार किया था। 1992 में रियो डी जिनेरियों में संयुक्त राष्ट्र पृथ्वी सम्मेलन हुआ। ग्लोबल वार्मिंग के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए स्वच्छ ऊर्जा के प्रयोग को बढावा देने का संकल्प लिया गया। 2009 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाने का का निर्णय लिया। प्रत्येक वर्ष वैश्विक आयोजन की एक थीम तय की जाती है। वर्ष की थीम है- हमारी शक्ति, हमारा ग्रह। चीन, पाकिस्तान, भारत और अमेरिका सहित कई देशों ने पृथ्वी दिवस के सन्दर्भ में पर्यावरण के महत्व को स्वीकारते हुए विभिन्न मूल्य वर्ग के डाक टिकट जारी किए हैं। यदि हम धरती को बचाना चाहते हैं और चाहते हैं कि आने वाली पीढ़ी के हाथों में एक हरी-भरी सुंदर, स्वच्छ, सदानीरा और सुवासित वसुन्धरा सौपें तो हमें अपनी दैनन्दिन जीवनचर्या पूर्णरूपेण बदलनी होगी। हमें प्रकृति की ओर लौटना होगा। बाजार से सामान लाने के लिए घर से जूट या कपड़े के बने थैले उपयोग में लाएं। अनाज भण्डारण के लिए प्लास्टिक बोरियों की बजाय जूट के बोरे इस्तेमाल करें। रोजमर्रा के काम जैसे किराना, शाक-भाजी की खरीददारी में कागज के लिफाफों का प्रयोग करें जो किसी को रोजगार देगा और हमें संतुष्टि। किसानों को रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों की बजाय जैविका खाद और इको फ्रेंडली देशी कीटनाशकों के इस्तेमाल के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित करें। पहल खुद से शुरू करनी होगी। विश्वास करिए, एक चलना आरम्भ करेगा तो साथ में लोग जुड़ते चलें जायेंगे। केवल एक दिन पृथ्वी दिवस मनाये जाने भर से परिवर्तन होन वाला नहीं है। हमें हर दिन पृथ्वी दिवस मनाना होगा और प्रकृति के साथ चलना होगा, जीना होगा। तभी यह धरा बचेगी और हम भी।

अस्तित्व के लिए सामूहिक संकल्प

पृथ्वी दिवस

प्रो. रवीन्द्र नाथ तिवारी

लेखक प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय रीवा के प्राचार्य हैं।

सौरमंडल के अनंत विस्तार में पृथ्वी ही वह एकमात्र ग्रह है जहाँ जीवन अपनी संपूर्ण विविधता और सौंदर्य के साथ स्पंदित होता है। यह जीवंतता पृथ्वी की अनूठी भौगोलिक स्थिति, संतुलित जलवायु और जटिल पारिस्थितिक तंत्रों का परिणाम है किंतु 21वीं सदी के तीसरे दशक में पहुँचते-पहुँचते, मानव की 'विकास' की अतृप्त पिपासा और प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन ने इस नीले ग्रह के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया है। आज हमारे जल चक्र, कार्बन चक्र और वायुमंडलीय संतुलन में इतना अधिक व्यवधान आ चुका है कि प्रकृति अब चेतावनी नहीं, अपितु आपदाओं के रूप में प्रतिकार कर रही है। इसी वैश्विक संकट के प्रति चेतना जाग्रत करने के लिए प्रतिवर्ष 22 अप्रैल को 'पृथ्वी दिवस' मनाया जाता है। वर्ष 2026 के लिए पृथ्वी दिवस की थीम 'हमारी शक्ति, हमारा ग्रह' रखी गई है। अथर्ववेद के काण्ड 12, सूक्त 1, श्लोक 35 'यत्ते भूमे विखणामि क्षिप्रं तदपि रोहतु। मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्॥' में पृथ्वी के प्रति अत्यंत संवेदनशील और दूरदर्शी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। इस मंत्र का भाव यह है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पृथ्वी से जो भी संसाधन ग्रहण करे, वह इस प्रकार हो कि प्रकृति स्वयं को पुनः शीघ्र पुनर्जीवित कर सके। साथ ही, यह चेतावनी भी दी गई है कि पृथ्वी के मर्मस्थलों को क्षति न पहुँचाई जाए और उसके संतुलन को बनाए रखा जाए। वर्तमान संदर्भ में यह श्लोक 'सतत विकास' की अवधारणा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है, जिसमें संसाधनों का उपयोग संतुलित और जिम्मेदारीपूर्वक किया जाता है। यह हमें पुनर्भरण, पुनर्चक्रण तथा पर्यावरण संरक्षण की नैतिक जिम्मेदारी का बोध कराता है। यह श्लोक आधुनिक पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु मार्गदर्शक है।

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन का सबसे क्रूर चेहरा महासागरों के बढ़ते तापमान में दिखाई दे रहा है। वर्ष 2025 के अंत तक के आंकड़े बताते हैं कि वैश्विक औसत सतही तापमान पूर्व-औद्योगिक स्तर (1850-1900) की तुलना में 1.62 डिग्री सेल्सियस अधिक दर्ज किया गया, जिसने 2024 के रिकॉर्ड को भी पीछे छोड़ दिया। यह निरंतर वृद्धि दर्शाती है कि पेरिस समझौते का 1.5 डिग्री सेल्सियस का लक्ष्य अब हमारे हाथों से फिसलता जा रहा है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, 2025 में 'समुद्री हीटवेव्स' ने वैश्विक महासागरों के 40 प्रतिशत हिस्से को प्रभावित किया। इससे न केवल कोरल रीफ (मूँगा चट्टानें) सामूहिक रूप से नष्ट हो रही हैं, अपितु समुद्री जैव विविधता में भी भारी गिरावट आई है। गर्म होते महासागर चक्रवातों को अधिक ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं, जिससे तटीय क्षेत्रों में आने वाले तूफानों की तीव्रता में 25 प्रतिशत तक की वृद्धि देखी गई है।

भारत अपनी विशाल जनसंख्या और तीव्र शहरीकरण के कारण इन पर्यावरणीय झटकों को अधिक तीव्रता से महसूस कर रहा है। 'प्लास्टिक ओवरशूट डे' की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, भारत में प्रति व्यक्ति प्लास्टिक कचरा उत्पादन भले ही वैश्विक औसत से कम हो, लेकिन कुप्रबंधित प्लास्टिक कचरे के मामले में भारत अभी भी शीर्ष देशों की सूची में बना हुआ है। वायु प्रदूषण की स्थिति भी चिंताजनक बनी हुई है। यद्यपि भारत के 'राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम' के तहत कुछ सुधार दर्ज किए गए हैं, लेकिन पीएम 2.5 का स्तर अभी भी विश्व स्वास्थ्य संगठन के सुरक्षित मानकों से कई गुना अधिक है। 2025 की 'वर्ल्ड एयर क्वालिटी रिपोर्ट' के अनुसार, विश्व के 100 सबसे प्रदूषित शहरों में भारत के शहरों की संख्या अब भी 80 से ऊपर है, जो हमारे स्वास्थ्य ढांचे पर भारी दबाव डाल रही है। भारत के लिए सबसे बड़ी चिंता का विषय उसका गहराता जल संकट है। संयुक्त राष्ट्र की 'विश्व जल विकास रिपोर्ट 2026' के अनुमानों के अनुसार, भारत की लगभग 45 प्रतिशत जनसंख्या 2030 तक गंभीर जल संकट की चपेट में होगी। भारत के पास वैश्विक जनसंख्या का 18 प्रतिशत हिस्सा है, जबकि ताजे जल के संसाधन मात्र 4 प्रतिशत हैं। भारत दुनिया में भूजल का सबसे बड़ा निष्कर्षक बना हुआ है। केन्द्रीय भूजल बोर्ड की 2025 की रिपोर्ट एक चिंताजनक स्थिति पेश करती है: देश के लगभग 22 प्रतिशत भूजल ब्लॉकों में पानी का स्तर 'अति-दोहित' श्रेणी में है। इसके अतिरिक्त, भूजल की गुणवत्ता में भारी गिरावट आई है। गंगा के मैदानी इलाकों से लेकर दक्षिण भारत के पठारों तक, पानी में यूरेनियम, आर्सेनिक और फ्लोराइड की मात्रा अनुमेय सीमा से कहीं अधिक पाई गई है, जो कई बीमारियों का कारण बन रही है। भारत में नदियाँ केवल जल का स्रोत नहीं बल्कि 'पारिस्थितिकी की जीवन रेखा' हैं, किंतु कई रिपोर्टों के अनुसार, देश की 600 से अधिक नदियों के खंड गंभीर रूप से प्रदूषित हैं, जहाँ गंगा और यमुना जैसी प्रमुख नदियों में फीकल कोलीफॉर्म का स्तर सुरक्षित सीमा से कई गुना अधिक पाया गया है। भारतीय वन सर्वेक्षण की 2025 की प्रारंभिक रिपोर्ट के अनुसार, भारत का कुल वन और वृक्ष आवरण बढ़कर भौगोलिक क्षेत्र का 25.40 प्रतिशत हो गया है। यद्यपि यह वृद्धि सकारात्मक है, लेकिन 'सघन वनों' की गुणवत्ता में कमी और 'खुले वनों' में वृद्धि पारिस्थितिक दृष्टिकोण से चिंताजनक है। इसके साथ ही, भारत का लगभग 30 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र वर्तमान में मरुस्थलीकरण या भूमि क्षरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है।

इन जटिल समस्याओं का समाधान केवल सरकार या अंतरराष्ट्रीय संधियों के पास नहीं है। इसके लिए 'हरित नवाचार' को अपनाना अनिवार्य है। आज हमें ऐसी तकनीकों की आवश्यकता है जो कार्बन कैप्चर कर सकें, कम पानी में अधिक फसल दे सकें और कचरे को ऊर्जा में बदल सकें। भारत का 'मिशन लाइफ' (लाइफ स्टाइल फॉर एनवायर्नमेंट) इसी दिशा में एक वैश्विक पहल है, जो व्यक्ति को अपनी आदतों में छोटे बदलाव करने के लिए प्रेरित करता है। गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों को स्वच्छ, निर्मल और अविरल बनाए रखने के लिए समर्पित एक 'गंगा समग्र' जन-अभियान चलाया जा रहा है। वर्तमान वैश्विक संकट का मूल कारण यह है कि हमने पृथ्वी को एक 'उपभोग की वस्तु' मान लिया है, जबकि वह एक 'जीवंत इकाई' है। आज हमें यह समझना होगा कि पृथ्वी को हमारी रक्षा की आवश्यकता नहीं है, अपितु हमें अपने स्वयं के अस्तित्व के लिए पृथ्वी की रक्षा की आवश्यकता है। हमें सामूहिक प्रयासों, नवीन सोच और नैतिक उत्तरदायित्व के साथ आगे बढ़ना होगा। यदि हम अभी सचेत नहीं हुए, तो आने वाली पीढ़ियों को विरासत में केवल बंजर धरती और प्रदूषित आकाश ही मिलेगा। हमारी वास्तविक शक्ति इस ग्रह की रक्षा करने में है, न कि उसके विनाश में। इसलिए आवश्यक है कि हम अपनी जीवनशैली और सोच को प्रकृति के अनुकूल ढालें, ताकि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और संवर्धन संतुलित रूप से संभव हो सके।

संकट के मुहाने पर खड़ी पृथ्वी

पृथ्वी दिवस पर विशेष

संध्या राजपुरोहित

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

22 अप्रैल को मनाया जाने वाला विश्व पृथ्वी दिवस हर वर्ष हमें एक ठहराव देता है सोचने का, समझने का और स्वयं से प्रश्न करने का। यह दिन मानो हमसे पूछता है कि जिस पृथ्वी ने हमें जन्म दिया, पाला-पोसा और अपने संसाधनों से जीवन को संभव बनाया, क्या हम उसके प्रति उतने ही संवेदनशील और उत्तरदायी हैं? आज जब हम विकास, आधुनिकता और उपभोग की चमक में डूबे हुए हैं, उसी समय पृथ्वी चुपचाप अपने भीतर एक गहरा संकट समेटे हुए है। यह संकट अब दूर का कोई खतरा नहीं, बल्कि हमारे वर्तमान का यथार्थ बन चुका है।

पृथ्वी पर जीवन की यह सुंदर संरचना, जो करोड़ों वर्षों में विकसित हुई, आज कुछ ही दशकों में असंतुलन की कगार पर खड़ी दिखाई देती है। इसका सबसे बड़ा कारण है मानव की अनियंत्रित विकास यात्रा, जिसमें प्रकृति को संसाधन मानकर उसका दोहन किया गया, न कि सहचर मानकर उसके साथ संतुलन बनाया गया। परिणामस्वरूप आज हम ऐसे दौर में खड़े हैं, जहाँ प्रकृति का धैर्य जवाब देने लगा है और उसके संकेत पहले से अधिक स्पष्ट और तीखे होते जा रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन इस संकट का सबसे व्यापक और चिंताजनक रूप है। जलवायु परिवर्तन केवल एक वैज्ञानिक शब्द नहीं, बल्कि हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौती है। जलवायु परिवर्तन से संबंधित अंतर- सरकारी पैनल की रिपोर्टों के अनुसार, पृथ्वी का औसत तापमान औद्योगिक काल से अब तक लगभग 1.1 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। यह वृद्धि भले ही मामूली प्रतीत हो, किंतु इसके परिणाम भयावह हैं। पहाड़ों पर जमी बर्फ का पिघलना, समुद्र का बढ़ता जलस्तर, शहरों में झुलसाती गर्मी और गाँवों में सूखते खेत ये सब उसी परिवर्तन के संकेत हैं।

भारत में बीते कुछ वर्षों में तापमान के नए रिकॉर्ड, असमय वर्षा और बार-बार आने वाली बाढ़-सूखे की स्थितियाँ यह दर्शाती हैं कि जलवायु परिवर्तन अब भविष्य की नहीं, वर्तमान की समस्या है। किसान, जो धरती के सबसे करीब होता है, इस बदलाव को सबसे पहले और सबसे गहराई से महसूस करता है। उसके खेतों में उगती फसलें अब मौसम की अनिश्चितताओं के भरोसे हैं, जो कभी भी उसका श्रम और उम्मीद दोनों छीन सकती हैं।

वनों का क्षरण इस संकट को और अधिक गहरा कर रहा है। जंगल केवल हरियाली का प्रतीक नहीं, बल्कि जीवन के संतुलन का आधार हैं। खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार, हर वर्ष लगभग एक करोड़ हेक्टेयर वन क्षेत्र समाप्त हो रहा है। यह आँकड़ा केवल भूमि के नुकसान का नहीं, बल्कि उन असंख्य जीवों के घर उजड़ने का है, जिनका अस्तित्व इन वनों पर निर्भर है। प्रकृति के लिए विश्वव्यापी कोष की 'लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट 2022' बताती है कि 1970 के बाद से वन्यजीवों की संख्या में औसतन 69 प्रतिशत की गिरावट आई है। यह गिरावट केवल जैव विविधता का संकट नहीं, बल्कि उस प्राकृतिक संतुलन के टूटने का संकेत है, जिस पर मानव जीवन भी टिका हुआ है।

जल संकट भी एक ऐसी चुनौती बनकर उभर रहा है, जिसे अब नजरअंदाज करना संभव नहीं। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार, विश्व की दो अरब से अधिक आबादी को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध नहीं है। भारत में भी स्थिति चिंताजनक है, जहाँ कई शहर और गाँव धीरे-धीरे जल संकट की ओर बढ़ रहे हैं। नदियाँ सिकुड़ रही हैं, भूजल स्तर गिरता जा रहा है और वर्षा का स्वरूप अनिश्चित होता जा रहा है। पानी, जो कभी जीवन का सहज हिस्सा था, अब संघर्ष का कारण बनता जा रहा है।

प्रदूषण इस पूरी स्थिति को और अधिक जटिल बना देता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, हर वर्ष लगभग 70 लाख लोगों की मृत्यु वायु प्रदूषण के कारण होती है। यह आँकड़ा बताता है कि हम जिस हवा में सांस ले रहे हैं, वही हमारे लिए खतरा बन चुकी है। जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण और प्लास्टिक कचरे का बढ़ता अंबार पृथ्वी को धीरे-धीरे बीमार बना रहा है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार, हर वर्ष करोड़ों टन प्लास्टिक समुद्रों में पहुँचता है, जिससे समुद्री जीवन पर गहरा संकट उत्पन्न हो रहा है।

इन सभी समस्याओं की जड़ में यदि कोई एक तत्व है, तो वह है मानव की बढ़ती आवश्यकताएँ और अनियंत्रित उपभोग। विश्व की जनसंख्या 8 अरब से अधिक हो चुकी है और इसके साथ ही संसाधनों पर दबाव भी बढ़ता जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष का अनुमान है कि यदि संसाधनों का संतुलित उपयोग नहीं किया गया, तो आने वाले समय में यह असंतुलन और गंभीर हो सकता है।

इस पूरी परिस्थिति का सबसे अधिक प्रभाव उन समुदायों पर पड़ता है, जो प्रकृति के साथ सहअस्तित्व में जीवन जीते हैं विशेष रूप से आदिवासी समाज। उनके लिए जंगल केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन, संस्कृति और पहचान का आधार हैं। जब जंगल कटते हैं, तो केवल पेड़ नहीं गिरते, बल्कि उनके साथ एक संपूर्ण जीवन पद्धति भी बिखर जाती है।

इन गंभीर चुनौतियों के बीच आशा की किरण भी मौजूद है। समाधान असंभव नहीं है, बशर्ते हम अपनी सोच में परिवर्तन लाएँ। सतत विकास की दिशा में उठाए गए छोटे-छोटे कदम भी बड़े बदलाव ला सकते हैं। जब हम ऊर्जा की बचत करते हैं, पानी को सहेजते हैं, पेड़ लगाते हैं या प्लास्टिक के उपयोग को कम करते हैं, तो हम केवल एक आदत नहीं बदलते, बल्कि पृथ्वी के भविष्य को सुरक्षित बनाने में योगदान देते हैं।

सरकारों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों की नीतियाँ तभी प्रभावी होंगी, जब आम नागरिक उनका हिस्सा बनेंगे। पर्यावरण संरक्षण केवल नीतियों का विषय नहीं, बल्कि जीवनशैली का हिस्सा बनना चाहिए। अंततः, यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि पृथ्वी कोई बाहरी तत्व नहीं, बल्कि हमारा अपना विस्तार है। यदि यह बीमार होगी, तो हम स्वस्थ नहीं रह सकते। अभी भी समय है अपने कदमों को रोककर, अपनी दिशा को बदलने का।

प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों का द्वितीय सत्र का प्रशिक्षण संपन्न

बैतूल। जिले में जनगणना 2027 के प्रथम चरण यथा मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों का द्वितीय सत्र का प्रशिक्षण कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के नेतृत्व तथा अपर कलेक्टर व जिला जनगणना अधिकारी वंदना जाट के मार्गदर्शन के नगरीय एवं ग्रामीण चार्ज मुख्यालयों पर सुव्यवस्थित रूप से सम्पन्न हुआ। जिला योजना अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला जनगणना अधिकारी नरेंद्र कुमार गौतम ने बताया कि 19 से 21 अप्रैल 2026 तक आयोजित जनगणना प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला बैतूल के 10 ग्रामीण और 04 नगरीय चार्जों में द्वितीय सत्र अंतर्गत उत्साहपूर्वक सहभागिता की। उन्होंने बताया कि 26 बैचों के माध्यम से 10 ग्रामीण एवं 4 नगरीय चार्जों के कुल 937 प्रगणक एवं 159 पर्यवेक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। प्रशिक्षण के प्रथम दिवस में प्रतिभागियों को जनगणना की आधारभूत जानकारी, विधिक प्रावधानों एवं दायित्वों के साथ एचएलडी मोबाईल एप की उपयोगिता से परिचित कराया गया था। द्वितीय दिवस में एप के 33 प्रश्नों के संकलन, डेटा प्रविष्टि एवं सत्यापन की प्रकिया पर विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण के अंतिम दिवस प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए स्वयं तहसीलदार एवं चार्ज अधिकारियों द्वारा फील्ड स्तर पर रोल प्ले के माध्यम से प्रतिभागियों को हैंड्स ऑन कराया गया। प्रशिक्षण उपरांत सभी प्रगणक एप पर्यवेक्षकों में जनगणना कार्य के लिए उत्साह और आत्म विश्वास दिखाई दिया।

वरिष्ठ जनगणना अधिकारियों ने की मॉनिटरिंग- जनगणना 2027 प्रशिक्षण में प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों के विभिन्न चार्जों में आयोजित हो रहे इन प्रशिक्षण सत्रों की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए अपर कलेक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी वंदना जाट द्वारा स्वयं मॉनिटरिंग की जा रही है। प्रशिक्षण को प्रभावी बनाए रखने के लिये अनुविभागीय जनगणना चार्ज अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण सत्रों में स्वयं उपस्थित रहकर प्रशिक्षणार्थीयों का उत्साहवर्धन किया गया। अनुविभागीय जनगणना चार्ज अधिकारी आमला शैलेन्द्र बडोनियां द्वारा आमला तहसील में आयोजित प्रशिक्षण में फील्ड में अभ्यास के लिए जाने से पूर्व प्रगणक एवं प्रशिक्षकों को एचएलओ मोबाईल एप में जानकारी, फीडिंग सर्तकता और जानकारी की शुद्धता का महत्व बताया गया। इसी प्रकार आठनेर में आयोजित प्रशिक्षण में निदेशालय से नियुक्त जिला प्रभारी श्री भरत गौर और जिले के मास्टर ट्रेनर श्री विनोद अडलक द्वारा स्वयं की उपस्थिति प्रशिक्षण के महत्व को सिद्ध करती है।

अंतिम दिवस रोल प्ले और अभ्यास

प्रशिक्षण के अंतिम दिवस सभी 10 ग्रामीण और 04 नगरीय चार्ज के प्रशिक्षणार्थी फील्ड अभ्यास करके एचएलओ एपलीकेशन का संचालन आने वाली तकनीकी बाधाएं, उनका निराकरण और प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करके एप में फीड करने का अभ्यास किया गया। तहसील मुलताई के प्रशिक्षणार्थी द्वारा ग्राम-चन्दोरा खुर्द, चार्ज-आठनेर में वार्ड क्रमांक-08 एवं 09, चार्ज आमला, के ग्राम-तोरणवाडा, अंधारिया, इसी प्रकार फील्ड में जाकर टेस्टिंग ऐप पर अभ्यास किया गया।

स्वगणना पोर्टल के अधिकतम उपयोग की अपील

चिचोली में चल रहे प्रशिक्षण सत्र में अभ्यास के लिए प्रगणक एवं प्रशिक्षकों द्वारा ग्राम गोडूमंडई का विजिट किया गया। विजिट के ठीक पूर्व प्रशिक्षण सत्र को जिला योजना एवं अतिरिक्त जनगणना अधिकारी द्वारा संबोधित करके जनगणना निदेशालय और कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी के दिशा निर्देशों से अवगत कराया गया। एचएलओ एप की तकनीकी समस्या का निराकरण किया गया और सभी प्रशिक्षण ले रहे प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों से जिले में अधिक से अधिक नागरिकों द्वारा स्वगणना पोर्टल का अधिकतम उपयोग करने का आव्हान किया गया। अतिरिक्त जनगणना अधिकारी ने प्रशिक्षण सत्र में जनगणना कार्य की नीति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होने संबंधी संवाद करके प्रशिक्षण ले रहे सभी सम्मानीय प्रगणक एवं पर्यवेक्षकों से अनुरोध किया कि राष्ट्र हित के इस कार्य में अपना श्रेष्ठतम योगदान दे।

एसडीओपी को पिछोर विधायक द्वारा दी गई धमकी की निंदा

भोपाल। विगत दिनों पिछोर विधायक का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ जिसमें वे करैरा जिला शिवपुरी में पदस्थ एसडीओपी जाखड़ को धमकी देते हुए और अपमानजनक आपत्तिजनक बातें करने पर मंत्रालय कर्मचारी संघ ने चिंता जताई है। संघ के अध्यक्ष सुधीर नायकने यहां जारी बयान में उन्होंने कहा कि इससे नौकरशाही का मनोबल गिरेगा है और उनके अंदर निर्भीकता और निष्पक्षता से शासकीय दायित्व निभाने में हिचकिचाहट पैदा होगी जो कि कल्याणकारी राज्य तथा सुशासन की अवधारणाओं के लिए प्रतिगामी कदम सिद्ध होगा। संघ ने पिछोर विधायक द्वारा एसडीओपी करैरा के प्रति कहे गए कथनों की घोर भर्त्सना की है और पिछोर विधायक के प्रति इस कृत्य के लिए समुचित कार्रवाई की मांग की है।

विश्व पृथ्वी दिवस पर नृत्य नाटिका का आयोजन आज

भोपाल। चाइल्ड राइट्स ऑब्जर्वेटरी द्वारा विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर बुधवार को नृत्य नाटिका 'हमारी पृथ्वी' का मंचन इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के सभागार में किया जा रहा है। कार्यक्रम सायंकाल 5:30 बजे से 7:30 बजे तक होगा। इस नृत्य नाटिका में सेवन हिल्स और अंकुर स्कूलों के 50 बच्चे भाग ले रहे हैं। नृत्य नाटिका का निर्देशन राहुल शर्मा ने किया है और नृत्य व संगीत का संयोजन संगीतकार और सितारवादक स्मिता नागदेव का है । यह कार्यक्रम इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के सहयोग से किया जा रहा है।

सरस्वती शिशु मंदिर की छात्रा महिमा सराठे को कलेक्टर ने किया सम्मानित

सोहागपुर। विगत दिवस सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्रा महिमा सराठे ने माध्यमिक शिक्षा मंडल की कक्षा दसवीं की परीक्षा में 96.8 प्रतिशत अंक प्राप्त करके सरस्वती शिशु मंदिर का नाम रोशन किया है। महिमा सराठे ने जिले की मेरिट सूची में पांचवा स्थान प्राप्त किया। छात्रा की इस उपलब्धि पर जिला कलेक्टर नर्मदापुरम सोमेश मिश्रा ने शील्ड एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं विधायक सीताशरण शर्मा भी उपस्थित थे।प्राचार्य अशोककुमार दुबे , सरस्वती शिशु मंदिर संचालन समिति, आचार्य एवं दीदियों एवं स्नेहियो ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

बेटे की शादी के एक दिन बाद पिता की मौत, परिवार में पसरा मातम

बैतूल। नागपुर नेशनल हाईवे पर मंगलवार दोपहर एक दर्दनाक सडक़ हादसे में एक युवक की जान चली गई। मृतक की पहचान गुरुसाहब वार्ड मुलताई निवासी संजू बरमासे के रूप में हुई है। इस हृदयविदारक घटना ने पूरे क्षेत्र को स्तब्ध कर दिया है, वहीं परिवार में खुशियों का माहौल पलभर में मातम में बदल गया। जानकारी के अनुसार, संजू बरमासे अपने बेटे की शादी से ठीक एक दिन बाद पारिवारिक परंपरा के तहत देव पहुंचाने के लिए अपने बड़े भाई राजू बरमासे के साथ बाइक से बैतूल जा रहे थे। यह हादसा मंगलवार दोपहर करीब 1 से 1.30 बजे के बीच एनस के पास हुआ। बताया जा रहा है कि बाइक संजू स्वयं चला रहे थे और दोनों भाई शादी के मांगलिक कार्यक्रमों के बाद धार्मिक परंपरा निभाने के लिए निकले थे। इसी दौरान मुलताई से बैतूल की ओर जा रही गुप्ता ट्रेवल्स की एक बस के चालक ने एनस के पास अचानक सवारी उतारने के लिए हाईवे पर बस रोक दी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, बस के अचानक रुकने से पीछे आ रही बाइक को संभलने का कोई मौका नहीं मिला और वह सीधे बस के पिछले हिस्से से जा टकराई। टक्कर इतनी भीषण थी कि संजू के सिर और चेहरे पर गंभीर चोटें आईं, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के तुरंत बाद बस चालक और कंडक्टर मौके से फरार हो गए, जिससे लोगों में आक्रोश फैल गया। गंभीर रूप से घायल संजू को तत्काल मुलताई अस्पताल पहुंचाया। हालांकि, डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की खबर फैलते ही अस्पताल परिसर में बड़ी संख्या में लोग एकत्र हो गए। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। जिस घर में शादी की खुशियां मनाई जा रही थीं, वहां अचानक शोक का माहौल छा गया। स्थानीय नागरिकों ने इस घटना को लेकर गहरा आक्रोश जताते हुए गुप्ता ट्रेवल्स के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। लोगों का कहना है कि हाईवे पर इस तरह लापरवाहीपूर्वक बस रोकना गंभीर अपराध है और ऐसे लापरवाह चालकों के खिलाफ कठोर कार्रवाई होनी चाहिए, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

अपर कलेक्टर व जिला जनगणना अधिकारी ने जनगणना प्रशिक्षण स्थलों का किया निरीक्षण

बैतूल। जिले में जनगणना 2027 के प्रथम चरण अंतर्गत मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों का प्रशिक्षण कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के नेतृत्व तथा अपर कलेक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी वंदना जाट के मार्गदर्शन में नगरीय एवं ग्रामीण चार्ज मुख्यालयों पर सुव्यवस्थित रूप से संचालित किया जा रहा है। जिला योजना अधिकारी एवं अतिरिक्त जनगणना अधिकारी नरेन्द्र कुमार गौतम ने बताया कि द्वितीय सत्र अंतर्गत 19 से 21 अप्रैल 2026 तक आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत 26 बैचों में 10 ग्रामीण एवं 4 नगरीय चार्यो के कुल 937 प्रगणक एवं 159 पर्यवेक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। प्रशिक्षण के द्वितीय दिवस में एचएलओ एचएलओ एप के 33 प्रश्नों के संकलन की शैली, अवधारणाओं एवं परिभाषाओं पर गहन प्रशिक्षण दिया गया तथा एप के माध्यम से डेटा संकलन एवं सत्यापन की प्रक्रिया बताई गई। प्रशिक्षण में किसी प्रकार की कोई कमी न रहे इसके लिए कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी श्री डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के निर्देश पर सभी चार्ज कार्यालय जहां प्रशिक्षण सत्र संचालित हो रहे है नियमित निरीक्षण पर्यवेक्षण भी किया जा रहा है। प्रशिक्षण के द्वितीय दिवस अपर कलेक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी श्रीमती वंदना जाट द्वारा भैंसदेही में चल रहे प्रशिक्षण का निरीक्षण किया गया और प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रगणक तथा पर्यवेक्षकों को जनगणना सम्बन्धी आवश्यक निर्देश देकर जनगणना कार्य में सटीकता और शुद्धता की अनिवर्यता बताई गई। साथ ही उनका उत्साहवर्धन किया गया। इसी क्रम में जिले के जनगणना प्रभारी अधिकारी श्री भरत गौर द्वारा जिले के मास्टर ट्रेनर विनोद अड़लक के साथ शाहपुर ग्रामीण चार्ज का निरीक्षण किया गया, वहीं अतिरिक्त जनगणना अधिकारी नरेंद्र कुमार गौतम द्वारा घोड़ाडोंगरी और सारनी चार्ज का निरीक्षण किया गया। अनुविभागीय जनगणना अधिकारियों द्वारा भी प्रशिक्षण सत्रों की नियमित मॉनिटरिंग की जा रही है। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी के जनगणना प्रशिक्षण को लेकर स्पष्ट निर्देश है कि प्रशिक्षण की उत्कृष्टता अनिवार्य है। अतः सभी प्रशिक्षण सत्रों में जिम्मेदार अधिकारी स्वयं भ्रमण कर प्रशिक्षण की गुणवत्ता सुनिश्चित करेंगे।

बैतूल में निजी नलकूप खनन पर पूर्ण प्रतिबंध, उल्लंघन पर कड़ी कार्रवाई

बैतूल। जिले में पेयजल स्रोतों के तेजी से गिरते जल स्तर को देखते हुए कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए जिले की सम्पूर्ण राजस्व सीमा में 20 अप्रैल 2026 से 30 जून 2026 तक सभी अशासकीय एवं निजी नलकूपों के खनन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया है। आदेश के अनुसार, जिले में कोई भी नलकूप बोरिंग मशीन संबंधित अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) की अनुमति के बिना प्रवेश नहीं करेगी और न ही नए नलकूप का खनन किया जा सकेगा। हालांकि, सार्वजनिक सडक़ों से गुजरने वाली मशीनों को इस प्रतिबंध से छूट दी गई है। राजस्व एवं पुलिस अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि वे प्रतिबंधित क्षेत्रों में अवैध रूप से प्रवेश करने या नलकूप खनन का प्रयास करने वाली मशीनों को जप्त कर संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज करें। वहीं, अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) को आवश्यक एवं अपरिहार्य प्रकरणों में उचित जांच के बाद अनुमति प्रदान करने के लिए अधिकृत किया गया है।

पेयजल सम्बंधी समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिए जिला स्तरीय कंट्रोल रूम स्थापित

बैतूल। कलेक्टर डॉ.सौरभ संजय सोनवणे के निर्देशानुसार ग्रीष्मकाल में जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में शुद्ध पेयजल की सतत आपूर्ति सुनिश्चित करने एवं पेयजल संबंधी शिकायतों के त्वरित निराकरण के लिए जिला स्तर पर नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है। यह कंट्रोल रूम 21 अप्रैल से 31 जुलाई 2026 तक संचालित रहेगा। नियंत्रण कक्ष प्रकोष्ठ के प्रभारी संजय यादव, परियोजना अधिकारी मनरेगा जिला पंचायत बैतूल मोबाइल नंबर 9300093582 को नियुक्त किया गया है। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय खंड बैतूल के कार्यपालन यंत्री मनोज कुमार बघेल ने बताया कि नियंत्रण कक्ष में सोमवार से बुधवार, सुबह 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक स.ग्रेड-3, राजस्व विभाग अजीत सिंह उपस्थित रहेंगे। इसी प्रकार सोमवार से बुधवार दोपहर 2 से शाम 8 बजे तक नगर पालिका कार्यालय भृत्य संदीप राठौर, गुरुवार से शनिवार, सुबह 8 से दोपहर 2 बजे तक जिला पंचायत बैतूल कार्यालय भृत्य मिश्री नरवरे, गुरुवार से शनिवार दोपहर 2 से शाम 8 बजे तक जनपद पंचायत कार्यालय के श्रवण सोनी, रविवार, सुबह 8 से दोपहर 2 बजे तक लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग बैतूल भृत्य राहुल बसोड, रविवार दोपहर 2 बजे से रात्रि 8 बजे तक लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग का.भा. गंगाराम सोलंकी तथा दिलीप बंजारे पीएमयू आउटसोर्स रिजर्व रहेगे। पेयजल संबंधी शिकायतों के लिए दूरभाष क्रमांक 07141-230338 एवं मोबाइल नंबर 9300093582 जारी किया गया है। उन्होंने बताया कि कंट्रोल रूम में प्राप्त शिकायतों का विधिवत पंजीयन किया जाएगा तथा संबंधित विभागों के अधिकारियों को दूरभाष एवं व्हाट्सएप के माध्यम से तत्काल सूचना देकर निराकरण कराया जाएगा।

भावी पीढ़ी हेतु जल बचाने करने होंगे सार्थक प्रयास : सतीश ठाकरे

जल संरक्षण हो हमारी सर्वोपरि प्राथमिकता : मधु चौहान

बैतूल। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद, विकासखंड आठनेर के निर्देशन में शनिवार को सेक्टर कांवला की नवांकुर संस्था सतपुड़ा पर्यावरण समिति आठनेर के तत्वाधान में ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति धारूल के सहयोग से जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत धार्मिक स्थल गायमुख धारुल में एक प्रभावशाली एवं प्रेरणादायक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम अंतर्गत नवांकुर संस्था एवं प्रस्फुटन समिति सदस्यो एवं मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम आठनेर के छात्र-छात्राओं ने मिलकर श्रमदान करते हुए नदी के किनारे एवं पानी में फैली झाडिय़ां,प्लास्टिक बॉटल, पन्नियां,कपड़े,काई एवं पूजन सामग्री को हटाकर नदी के जल को स्वच्छ एवं निर्मल बनाया।इस सामूहिक प्रयास से न केवल नदी की सुंदरता बढ़ी,बल्कि पर्यावरण संरक्षण का मजबूत संदेश भी दिया गया।इसके साथ ही छात्र-छात्राओं द्वारा नदी किनारों पर जल संरक्षण एवं स्वच्छता से जुड़े प्रेरणादायी स्लोगन लिखे गए जिससे गौमुख पहुंचने वाले ग्रामीणों में स्वच्छता एवं जल संरक्षण का संदेश जाए।कार्यक्रम में मानव श्रृंखला बनाकर सभी प्रतिभागियों ने एकजुट होकर जल संरक्षण के महत्व को रेखांकित किया।नवांकुर संस्था सतपुड़ा पर्यावरण समिति के अध्यक्ष सतीश ठाकरे ने ने इस पहल को समाज के लिए अत्यंत आवश्यक बताते हुए कहा कि ऐसे सार्थक प्रयास आने वाली पीढिय़ों के लिए जल सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।जल का बुद्धिमानीपूर्वक उपयोग एवं इसका संरक्षण हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है।मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद की विकासखंड समन्वयक मधु चौहान ने जानकारी देते हुए बताया कि सभी पांचों नवांकुर संस्थाओं एवं सभी ग्राम विकास प्रस्फुटन समितियो द्वारा सी एम सी एल डी पी के छात्र-छात्राओं के सहयोग से गांव-गांव में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जल स्रोतों की स्वच्छता एवं जल संरक्षण हेतु जनभागीदारी से पूरे आठनेर विकासखंड में कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं।इसी कड़ी में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है।उन्होंने कहा कि जब हम आज जल बचाएंगे तभी आने वाली पीढय़िों को कल जल मिल पाएगा।जल धरती का अनमोल उपहार है।इसका संरक्षण हमारी प्राथमिकता होना चाहिए।इसके पश्चात सभी के द्वारा जल संरक्षण का सामूहिक संकल्प लिया।भोजन प्रसादी के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।कार्यक्रम में मुख्य रूप से परामर्शदाता एवं नगर मंडल अध्यक्ष आठनेर गोवर्धन राने,सामाजिक कार्यकर्ता आशुतोष सिंह चौहान,नवांकुर संस्था सावंगी के अध्यक्ष दिनेश माकोड़े,प्रस्फुटन समिति धारुल के अध्यक्ष पप्पू कुमरे,मेंटर दिनेश साकरे,दीपाली पातुलकर,राधिका बरपेटे,अंकित सातपुते, छात्र-छात्राओं में सरस्वती कुमरे, गीतांजलि धाकड़े,बबीता कुमरे,दुर्गा आहके उमेश कसडेकर, रामकिशोर दहिकर संध्या ठाकरे, प्रतीक घोरसे सहित बड़ी संख्या में ग्रामवासी एवं सी एम सी एल डी पी के छात्र-छात्राए उपस्थित रहे।

शहर में बड़े वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध

ट्रैफिक पुलिस ने जारी किया नया डायवर्जन प्लान

बैतूल। शहर में यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए पुलिस प्रशासन ने भारी और मध्यम वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है। थाना यातायात द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, यह व्यवस्था 21 अप्रैल से प्रभावी होगी। कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी के आदेशानुसार, सुबह 8 बजे से दोपहर 12 बजे तक और शाम 5 बजे से रात 10 बजे तक शहर की सीमा में भारी, मध्यम एवं ट्रैक्टर-ट्रॉली जैसे वाहनों का प्रवेश पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगा। यह प्रतिबंध विशेष रूप से आमला रोड से 7 किलोमीटर के दायरे में एलआईसी ऑफिस, तितली चौक, भारत भारती, गंज क्षेत्र और हम्मालपुर चौक की ओर आने वाले मार्गों पर लागू होगा। रेलवे रैक परिवहन में लगे भारी वाहनों को भी शाम 5 बजे से रात 10 बजे तक शहर में प्रवेश की अनुमति नहीं होगी। यातायात पुलिस ने वाहनों के लिए डायवर्जन प्लान भी जारी किया है। रामबोली चौक और तितली चौराहा से नागपुर, मुलताई, बैतूल बाजार, आठनेर और चिचोली की ओर जाने वाले वाहनों को एनएच-47 कोसमी-सोनाघाटी, भारत भारती मार्ग से डायवर्ट किया जाएगा। गंज क्षेत्र और रामनगर की ओर आने वाले हल्के वाहनों को सदर ओवरब्रिज का उपयोग करने से रोका गया है। उन्हें वैकल्पिक मार्ग तितली चौक, एनएच-47 और सोनाघाटी होते हुए अपने गंतव्य तक पहुंचने के निर्देश दिए गए हैं। हालांकि, एम्बुलेंस, फायर ब्रिगेड और पुलिस जैसे आपातकालीन सेवा वाहनों को इस प्रतिबंध से छूट प्रदान की गई है। प्रशासन ने नागरिकों से इस व्यवस्था का पालन कर शहर की यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने में सहयोग की अपील की है।

फिल्टर प्लांट में बिजली सप्लाई सामान्य और मानक के अनुरूप है

बैतूल। बिजली कंपनी ने शहर के सीएमओ फिल्टर प्लांट में लो वोल्टेज के कारण मोटर नहीं चल पाने की खबरों के संबंध में वस्तु स्थिति स्पष्ट की है। मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड बैतूल शहर जोन- 1 के सहायक यंत्री ने बताया कि विभाग द्वारा मौके पर जांच और तकनीकी परीक्षण में यह स्पष्ट हुआ कि 33 के.वि. सप्लाई पूरी तरह मानक के अनुरूप है और कहीं भी लो वोल्टेज की स्थिति नहीं है। निरीक्षण के दौरान फिल्टर प्लांट पर उपस्थित कर्मचारी की उपस्थिति में वोल्टेज मापा गया, जिसमें तीनों फेज पर क्रमशः आरवाय -417 वोल्ट, आरवाय - 418 वोल्ट एवं बीआर -420 वोल्ट पाया गया। यह वोल्टेज विद्युत सप्लाई कोड की कंडिका 3.3 के अनुसार मानक के अनुरूप है। साथ ही मीटर की एमआरआई द्वारा विगत तीन माह के वोल्टेज का परीक्षण किया गया, जिसमें 33 के.वि. साइड पर वोल्टेज सामान्य पाया गया। उल्लेखनीय है कि इसी 33 के.वि. फीडर से 33/11 के.वि. हमलापुर एवं खंडारा उपकेंद्रों को भी विद्युत आपूर्ति की जा रही है, जहां किसी प्रकार की वोल्टेज समस्या नहीं है। उन्होंने बताया कि फिल्टर प्लांट परिसर में स्थापित ट्रांसफार्मर का रखरखाव नगर पालिका के तकनीकी कर्मचारियों द्वारा किया जाता है। इस संबंध में नगर पालिका के अमले को ट्रांसफर में टैपिंग और कंडेंसर को लेकर उचित मार्गदर्शन भी दिया गया है, ताकि सप्लाई सुचारू रहें। उन्होंने बताया कि कुछ समाचार पत्रों में 33 के.वि. लाइन में फॉल्ट होने की सूचना प्रकाशित की गई है।

संक्षिप्त समाचार

ग्राम करैया में चौपाल: ग्रामीणों व किसानों की समस्याएं सुनी, नरवाई न जलाने की अपील

विदिशा (निप्र)। ग्राम करैया में प्रशासन द्वारा चौपाल का आयोजन कर ग्रामीणों एवं कृषकों की समस्याओं को गंभीरता से सुना गया। इस दौरान उपस्थित अधिकारियों ने ग्रामीणों से संवाद स्थापित करते हुए उनकी व्यक्तिगत एवं सामूहिक समस्याओं की जानकारी ली तथा उनके निराकरण के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश संबंधित विभागों को दिए। चौपाल में किसानों ने सिंचाई, बिजली आपूर्ति, फसल बीमा, राजस्व प्रकरणों सहित अन्य मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। अधिकारियों ने आश्वस्त किया कि प्राप्त शिकायतों का शीघ्र निराकरण सुनिश्चित किया जाएगा तथा संबंधित विभागों को समयबद्ध कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं। इस अवसर पर किसानों को फसल अवशेष (नरवाई) न जलाने के प्रति जागरूक किया गया। अधिकारियों ने बताया कि नरवाई जलाने से भूमि की उर्वरता प्रभावित होती है तथा पर्यावरण को भी गंभीर नुकसान पहुंचता है। साथ ही यह कानूनी रूप से भी दंडनीय है। किसानों से अपील की गई कि वे वैकल्पिक उपाय अपनाते हुए फसल अवशेषों का वैज्ञानिक तरीके से प्रबंधन करें। चौपाल में ग्रामीणों को शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी भी दी गई तथा उनका लाभ लेने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधि, संबंधित विभागों के अधिकारी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

ग्राम चैनपुर में जनभागीदारी से किया जा रहा है पुरातात्विक तलाव की साफ-सफाई और मरम्मत कार्य

रायसेन (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान एवं जल संचय जन भागीदारी अभियान-2026 अंतर्गत 18 अप्रैल को जनपद पंचायत बाड़ी की ग्राम पंचायत चैनपुर में जनभागीदारी से स्थानीय जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों-कर्मचारियों और ग्रामीणों द्वारा सामूहिक श्रमदान कर तालाब की गाद निकासी, साफ-सफाई एवं झाड़ी साफ-सफाई का कार्य प्रारंभ किया गया। साथ ही सभी के द्वारा जल संरक्षण की शपथ भी ली गई। विगत वर्षों में तालाब में गाद जमा हो जाने से एवं अन्य कारणों से जल भराव क्षमता कम हो रही थी, जिसके दृष्टिगत ग्रामीणों द्वारा तालाब को जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत श्रमदान के माध्यम से 30 जून तक कार्य पूर्ण करने की शपथ ली गई। इस दौरान ग्राम पंचायत सरपंच श्री बिलाल खान, जनपद पंचायत बाड़ी के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री दानिश अहमद खान, श्री खुलेश ईवने सहायक यंत्री, अन्य कर्मचारी और ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत बच्चों को बताया गया जल का महत्व

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिले में अनेक जल संरक्षण गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इसी क्रम में बुधनी के एकलव्य स्कूल में पेंटिंग एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यक्रम में बच्चों को जल की उपयोगिता एवं उसके संरक्षण के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लेने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन स्वरूप पानी की बोतलें वितरित की गईं। इस अवसर पर बच्चों को जल संरक्षण की शपथ भी दिलाई गई। इसी प्रकार अभियान के अंतर्गत नगर परिषद की टीम द्वारा वार्डों में भ्रमण कर नागरिकों की समस्याएं सुनी गईं तथा उनका त्वरित निराकरण किया गया। साथ ही नागरिकों को जल का अपव्यय न करने एवं जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया।

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित

बैतूल (निप्र)। एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय में सत्र 2026-27 के लिए रिक्त सीटों पर अस्थायी प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय के प्राचार्य ने बताया कि विद्यालय पूर्णतः आवासीय है तथा जनजातीय वर्ग के विद्यार्थियों के लिए 100 प्रतिशत आरक्षित है। परीक्षा एवं मेरिट के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा। आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 4 मई 2026 निर्धारित की गई है। इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन पत्र विद्यालय से कार्यालयीन समय सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि विद्यालय में कक्षा 7वीं में 4 सीटें है, जिसमें 1 बालक, 1 बालिका, 2 दिव्यांग शामिल है। कक्षा 8वीं में 1 सीट बालिका तथा कक्षा 11वीं में 30 सीटें 15 बालक और 15 बालिका उपलब्ध हैं। यह विद्यालय भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय के अंतर्गत संचालित होता है, जिसका संचालन राष्ट्रीय आदिवासी छात्र शिक्षा समिति नई दिल्ली एवं म.प्र. स्पेशल एंड रेजीडेंशियल एकेडमिक सोसायटी भोपाल द्वारा किया जाता है। उन्होंने बताया कि विद्यालय सीबीएसई से संबद्ध है और कक्षा 6वीं से 12वीं तक हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा प्रदान की जाती है। विद्यार्थियों को गणवेश, जूते, ट्रैक सूट, टी-शर्ट, लोअर, भोजन, पाठ्य पुस्तकें एवं लेखन सामग्री निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती हैं। इसके साथ ही आधुनिक सुविधाओं से युक्त कंप्यूटर लैब, एआई लैब, रिटेल लैब एवं विज्ञान प्रयोगशालाएं उपलब्ध हैं। विद्यार्थियों के शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों का भी आयोजन किया जाता है।

ग्रीष्मकाल में पेयजल व्यवस्था दुरुस्त रखें, सार्वजनिक प्याऊ तथा पशु पक्षियों के लिए सकोरे करें स्थापित: कलेक्टर

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने रआयोजित समय सीमा बैठक में विभिन्न विभागीय योजनाओं, अभियानों एवं अन्य प्रशासनिक कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में उपस्थित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कलेक्टर ने कार्यों में गति लाने एवं समयबद्ध निष्पादन पर विशेष फोकस करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री मिश्रा ने सभी विभाग प्रमुखों को निर्देशित किया कि आगामी 10 दिवस के भीतर समय सीमा के अंतर्गत लंबित सभी प्रकरणों का अनिवार्य रूप से निराकरण सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि प्रत्येक अधिकारी अपने-अपने विभाग के लंबित मामलों में समय पर जवाब दर्ज करें, जिससे प्रकरणों के निराकरण में अनावश्यक विलंब न हो।

उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि जिन प्रकरणों में न्यायालयीन प्रकरण (कोर्ट केस) या सतत रूप से चलने वाली प्रक्रिया शामिल है, उन मामलों में संबंधित स्थिति को स्पष्ट रूप से दर्ज किया जाए। उन्होंने स्पष्ट एवं सख्त निर्देश दिए हैं कि सीएम हेल्पलाइन के माध्यम से प्राप्त शिकायतों को नॉन अटेंडेड पाए जाने पर संबंधित अधिकारी के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए जुर्माना अधिरोपित किया जाएगा। उन्होंने निर्देशित किया कि सभी अधिकारी सीएम हेल्पलाइन शिकायतों के संतुष्टि पूर्ण डिस्पोजल पर फोकस करें। कलेक्टर श्री मिश्रा ने कहा कि सभी अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि कोई भी सीएम हेल्पलाइन शिकायत निम्न गुणवत्ता के साथ बंद ना हो।

उन्होंने यह निर्देश भी दिए कि सी और डी कैटेगरी में स्थान प्राप्त करने वाले विभागों तथा उनसे संबंधित अधिकारियों पर भी नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई संपादित की जाएगी। कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देशित किया कि नागरिक सेवा एवं सुशासन से किसी भी प्रकार का समझौता स्वीकार्य नहीं किया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को सीएम हेल्पलाइन से संबंधित आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कहा कि कोई भी अधिकारी अंतिम दिवस के लिए कोई भी प्रकरण पेंडिंग ना रखें समय पूर्व ही शिकायतों में आवश्यक रूप से कंप्लायंस दर्ज करें। इसी प्रकार उन्होंने सीएम एवं सीएस मोनिट से जुड़े समस्त मामलों को श्रेणीवार विभाजित करते हुए उनमें आवश्यक कार्यवाही किए जाने के निर्देश भी दिए।

कलेक्टर श्री मिश्रा ने समय सीमा की बैठक के दौरान निर्देशित किया कि कलेक्टर- कमिश्नर कॉन्फ्रेंस से संबंधित सभी इंडिकेटर्स की विभागीय स्तर पर नियमित एवं गंभीरता से समीक्षा की जाए, ताकि प्रगति में किसी प्रकार की कमी न रहे। उन्होंने हाई कोर्ट एवं विभिन्न आयोगों से संबंधित प्रकरणों में समयानुसार जवाब प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी स्थिति में न्यायालयीन प्रकरणों को अनावश्यक रूप से लंबित न रखा जाए और समयबद्ध तरीके से उनका निराकरण सुनिश्चित किया जाए। इसके साथ ही कलेक्टर ने विभागीय बैठकों के नियमित आयोजन के लिए भी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने निर्देशित किया कि सभी विभागीय अधिकारी अपने-अपने विभागों की बैठकें समय पर आयोजित करें तथा किसी भी प्रकार की बैठक लंबित न रखें। उन्होंने कहा कि विभागीय बैठकों का आयोजन नियमानुसार एवं निर्धारित समय पर होना सुनिश्चित किया जाए, जिससे कार्यों की सतत समीक्षा और बेहतर क्रियान्वयन संभव हो सके। कलेक्टर ने समय सीमा की बैठक के दौरान लोक स्वास्थ्य एवं यांत्रिकी विभाग को निर्देश दिए की जल जीवन मिशन के तहत नल जल योजना अंतर्गत सभी पूर्ण हो चुकी योजनाओं के माध्यम से पानी की आपूर्ति की जाए। सभी घरों में पानी पहुंचे विभाग यह सुनिश्चित करें। हैंड पंप चालू स्थिति में रहे तथा जिस किसी भी हैंडपंप में समस्या आ रही हो ऐसे हैंड पंप को विभाग द्वारा त्वरित रूप से कार्रवाई करते हुए सुधरवाया जाए। उन्होंने कहा कि एमपीईबी द्वारा ग्राम पंचायत आदि पर विद्युत कनेक्शन न काटे जाए जिससे पानी की सप्लाई बाधित हो।

साथ ही अगर इस प्रकार से कहीं भी विद्युत कनेक्शन काटे गए हैं तो उन्हें आगामी दो दिवस में जांचते हुए उन्हें पुनः सुचारू करें। कलेक्टर ने कहा कि ग्रीष्मकाल में पानी आपूर्ति शासन एवं प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसी के साथ उन्होंने ईई एमपीईबी को निर्देश दिए कि जिले में विद्युत सप्लाई, ट्रांसफार्मर, अनियमित विद्युत आपूर्ति आदि की शिकायतों पर तत्परता से संज्ञान लें। कलेक्टर श्री मिश्रा ने जिले में संचालित एचपीवी वैक्सीनेशन की वर्तमान प्रगति की समीक्षा की। समीक्षा के दौरान सीएमएचओ द्वारा जानकारी दी गई कि अब तक जिले में 96त्न से अधिक वैक्सीनेशन किया जा चुका है। जिस पर कलेक्टर द्वारा निर्देशित किया गया कि वैक्सीनेशन को शत प्रतिशत पूर्ण किया जाए। जिले के विकासखंड सिवनी मालवा में सर्वाधिक 11त्न वैक्सीनेशन शेष पाए जाने पर कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देश दिए की सिवनी मालवा एसडीएम के साथ समन्वय स्थापित कर संबंधित बीएमओ द्वारा वैक्सीनेशन में गति लाई जाए तथा आगामी तीन दिवस में शत प्रतिशत वैक्सीनेशन का लक्ष्य हासिल करें। समय सीमा की बैठक के दौरान कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने मानवीय संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण जिले में सार्वजनिक एवं निःशुल्क पेयजल व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि नागरिकों के लिए सार्वजनिक प्याऊ की व्यवस्था के साथ-साथ पशु-पक्षियों के लिए भी पानी के सकोरे आदि स्थापित किए जाएं, ताकि गर्मी के मौसम में सभी को राहत मिल सके। कलेक्टर श्री मिश्रा ने निर्देशित किया कि समस्त अनु विभागों में आगामी दो दिवसों के भीतर 'नीर-पखेरू अभियान' के अंतर्गत सभी आवश्यक तैयारियां पूर्ण कर ली जाएं। उन्होंने एसडीएम को इस संबंध में निरंतर मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए, ताकि अभियान का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित हो सके।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भैंसदेही में आयोजित स्वास्थ्य शिविर में 884 मरीजों की हुई जांच

बैतूल (निप्र)। जनजातीय कार्य मंत्रालय भारत सरकार के माध्यम से जिले में 20 स्वास्थ्य शिविर लगाने की प्राप्त स्वीकृति के परिपालन में 18 अप्रैल को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भैंसदेही में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ श्री देवीसिंह ठाकुर, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष श्री अनिल सिंह ठाकुर एवं श्री दिलीप घोरे द्वारा किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि शिविर में कुल 884 मरीजों का पंजीकरण किया गया, शिविर में जिला चिकित्सालय से स्त्री रोग शिशु रोग दंत रोग, मानसिक रोग विशेषज्ञों द्वारा मरीजों का परीक्षण कर उपचार किया गया। जिसमें स्त्री रोग 73, शिशु रोग 19, मानसिक रोग 5, दंत रोग 7 एवं अन्य सामान्य मरीजों का उपचार किया गया। इस दौरान दो मरीजों को फुड बास्केट वितरित किये गये। शिविर में जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश परिहार, खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ दीपक निगवाल, स्त्री रोग चिकित्सक व्योमा वर्मा, जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ विनोद शाक्य, अन्य चिकित्सा स्टाफ, बीईई, बीसीएम, बीपीएम, स्वास्थ्य स्टाफ, आशा कार्यकर्ता एवं महिला एवं बाल विकास विभाग उपस्थित रहे।

गांव की बेटी एवं प्रतिभा किरण योजना के लाभ से वंचित बेटियां अब दोबारा कर सकेंगी आवेदन

सीहोर (निप्र)। उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार के निर्देश पर, उच्च शिक्षा विभाग ने गांव की बेटी एवं प्रतिभा किरण योजना के लिए स्कॉलरशिप पोर्टल दोबारा खोले जाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए हैं। ज्ञातव्य है कि उच्च शिक्षा मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने, शैक्षणिक सत्र 2025-26 में गांव की बेटी एवं प्रतिभा किरण योजना का लाभ पाने से किसी कारणवश वंचित रह गई बेटियों को, उक्त योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए शीघ्र कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए विभाग को निर्देशित किया था। मंत्री श्री परमार के निर्देशों के अनुपालन में, उच्च शिक्षा विभाग ने गांव की बेटी एवं प्रतिभा किरण योजना के लिए स्कॉलरशिप पोर्टल 2.0 पुनः खोला है। शैक्षणिक सत्र 2025-26 में गांव की बेटी एवं प्रतिभा किरण योजना का लाभ पाने से वंचित रह गई बेटियां, अब स्कॉलशिप पाने के लिए दोबारा आवेदन कर सकेंगी।

उच्च शिक्षा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार, शैक्षणिक सत्र 2025-26 में उक्त दोनों योजनाओं का लाभ पाने से वंचित छात्राएं, छात्रवृत्ति के लिए दोबारा आवेदन कर सकेंगी। छात्राओं को गांव की बेटी योजना एवं प्रतिभा किरण योजना के नवीन एवं नवीनीकरण के लिए, स्कॉलरशिप पोर्टल 2.0 पर आवेदन करना होगा। पोर्टल पर आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 15 मई 2026 हैं। उल्लेखनीय है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की बेटियों को बेहतर उच्च शिक्षा मिले, इसके लिए उच्च शिक्षा विभाग द्वारा गांव की बेटी एवं प्रतिभा किरण योजना चलाई जा रही है। गांव की बेटी योजना से ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों एवं प्रतिभा किरण योजना से शहरी क्षेत्र की बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहन सहायता राशि उपलब्ध कराई जाती है। विभाग का उद्देश्य, अधिक से अधिक छात्राओं को योजनाओं का लाभ दिलाना और उन्हें उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना है।

प्रदेश में पहली बार विद्यार्थियों को मिल रहा द्वितीय परीक्षा का अवसर -मुख्यमंत्री डॉ. यादव

सीहोर (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में 10वीं और 12वीं के अनुपस्थित, अनुत्तीर्ण और अंक सुधार के इच्छुक परीक्षार्थीयों के लिए पूरक परीक्षा के स्थान पर पहली बार द्वितीय परीक्षा देने का अवसर प्रदान किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एक्स पर विद्यार्थियों से कहा कि आपको इस द्वितीय अवसर का भरपूर लाभ उठाना है। विद्यार्थियों को रुकना नहीं, अब और भी बेहतर करना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 10वीं व 12वीं के विद्यार्थियों के लिये पूरक परीक्षा के स्थान पर द्वितीय अवसर परीक्षा के इच्छुक परीक्षार्थी 22 अप्रैल तक mponline पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

विदिशा में जनगणना को लेकर उत्साह, स्व-गणना फॉर्म भरने की लगी होड़

विदिशा (निप्र)। जनगणना कार्य के तहत विदिशा जिले में इन दिनों स्व-गणना फॉर्म भरने को लेकर लोगों में खासा उत्साह देखा जा रहा है। जिलेभर में नागरिक बढ़-चढ़कर इस प्रक्रिया में भाग ले रहे हैं, जिससे जनगणना कार्य को गति मिल रही है। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता की विशेष पहल पर जिले के सभी शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के साथ-साथ विभिन्न व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों में जनगणना संबंधी कार्यों का व्यापक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इन संस्थानों में विद्यार्थियों और संबंधित कर्मियों को स्व-गणना फॉर्म भरने की प्रक्रिया, आवश्यक सावधानियां और तकनीकी पहलुओं की जानकारी दी जा रही है।

प्रशिक्षण के माध्यम से युवाओं को जनगणना के महत्व से अवगत कराया जा रहा है, ताकि वे स्वयं भी सही जानकारी दर्ज करें और अपने परिवार व आसपास के लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

किसानों की सुविधा के लिए उपार्जन केंद्रों में तौल कांटे 4 से बढ़ाकर 6 किए गए

रायसेन (निप्र)। एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि किसानों की सुविधा के लिए उपार्जन केंद्रों पर तौल कांटों की संख्या चार से बढ़कर 6 कर दी गई है। इससे समय पर किसानों द्वारा लाये गए गेहूं की तुलाई हो सकेगी। न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अभी तक एक लाख 36 हज़ार 237 किसानों से 59 लाख 48 हजार 980 क्विंटल गेहूँ की खरीदी की जा चुकी है। किसानों को 575 करोड़ 86 लाख रुपए का भुगतान उनके बैंक खाते में किया जा चुका है। अभी तक 4 लाख 62 हजार 19 किसानों द्वारा 1 करोड़ 97 लाख 29 हजार 339 क्विंटल गेहूँ के विक्रय के लिये स्लॉट बुक किये जा चुके हैं। खरीदी के लिये 3171 उपार्जन केन्द्र बनाये गये हैं। गेहूँ की खरीदी कार्यालयीन दिवसों में होती है। सेटेलाइट ई-मेल में मिलान नहीं पाए गए खसरों को छोड़कर उसी किसान के शेष खसरों पर गेहूँ की फसल विक्रय के लिये स्लॉट बुकिंग की सुविधा दी गई है। उपार्जन केन्द्र की क्षमता अनुसार उपज की तौल की जा सके एवं अधिक से अधिक किसानों से उपार्जन किया जा सके, इसके लिये प्रतिदिन प्रति उपार्जन केन्द्र पर गेहूँ विक्रय के लिये स्लॉट बुकिंग की क्षमता 1000 क्विंटल से बढ़ाकर 1500 क्विंटल की गई है।

उपार्जन केंद्र में किसानों के लिये गेहूँ बिक्री की सभी सुविधाएं : मंत्री श्री राजपूत ने बताया है कि उपार्जन केंद्रों में गेहूँ विक्रय की सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। उपार्जन केन्द्रों में छायादार स्थान में बैठने और पेय जल की समुचित सुविधा उपलब्ध कराई गई है। केंद्र में बारदाने, तौल कांटे सिलाई मशीन, कंप्यूटर, इंटरनेट, गुणवत्ता परीक्षण उपकरण और उपज की साफ सफाई के लिए पंखा, छनना आदि की व्यवस्थाएं भी सुनिश्चित की गई हैं। मंत्री श्री राजपूत ने बताया है कि रबी विपणन वर्ष 2026-27 में किसानों से 2585 रूपये प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य एवं राज्य सरकार द्वारा घोषित 40 रूपये प्रति क्विंटल बोनस राशि सहित 2625 रूपये प्रति क्विंटल की दर से गेहूँ का उपार्जन किया जा रहा है। गेहूँ के उपार्जन के लिये आवश्यक बारदानों की व्यवस्था की जा चुकी है। उपार्जित गेहूँ को रखने के लिये जूट बारदानों के साथ ही पीपी/एचडीपी बैग एवं जूट के भर्ती बारदाने का उपयोग किया जा रहा है। समर्थन मूल्य पर उपार्जित गेहूँ के सुरक्षित भंडारण की पर्याप्त व्यवस्था की गई है। उपार्जित गेहूँ में से 49 लाख 47 हजार 190 क्विंटल गेहूँ का परिवहन किया जा चुका है। प्रदेश में गेहूँ उपार्जन के लिये इस वर्ष रिकार्ड 19 लाख 4 हजार किसानों ने पंजीयन कराया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 3 लाख 60 हजार अधिक है। विगत वर्ष समर्थन मूल्य पर लगभग 77 लाख मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन किया गया था। इस वर्ष युद्ध की विपरीत परिस्थितियों के बावजूद किसानों के हित में सरकार द्वारा 78 लाख मीट्रिक टन गेहूँ के उपार्जन का लक्ष्य रखा गया है, जो कि पिछले वर्ष से एक लाख मीट्रिक टन अधिक है।

जल गंगा संवर्धन अभियान: नारा एवं दीवार लेखन गतिविधियों से दिया जल संरक्षण का संदेश

बैतूल (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में पानी की प्रत्येक बूंद को सहेजने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत प्रदेश में बड़ी संख्या में खेत तालाब, अमृत सरोवर, रैन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम और सूखे कुँओं को नया जीवन देने का कार्य किया जा रहा है। साथ ही नागरिकों को जल संरक्षण के लिये प्रेरित करने हेतु विभिन्न जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद जिला बैतूल द्वारा संचालित जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जल स्रोत सेवा समागम कार्यक्रम द्वितीय चरण में जिले के सभी विकासखण्डों में व्यापक जनजागरूकता गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। इस अभियान के अंतर्गत 19 मार्च से नवांकुर स्वयंसेवी संस्थाओं, प्रस्फुटन समितियों एवं मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के सहयोग से विभिन्न ग्रामों में 'सुरक्षित जल समृद्ध कल 'विषय पर नारा लेखन एवं दीवार लेखन किया जा रहा है। इन गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य समुदाय को जल संरक्षण एवं जल स्रोतों के संवर्धन के प्रति जागरूक करना तथा समाज और सरकार की सहभागिता से इसे एक जन-आंदोलन का रूप देना है। दीवार लेखन के माध्यम से जल की महत्ता, वर्षा जल संचयन, जल स्रोतों की स्वच्छता एवं संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण संदेश आमजन तक सरल एवं प्रभावी तरीके से पहुँचाए जा रहे हैं। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा इस प्रकार की जनजागरूकता गतिविधियों को निरंतर गति प्रदान की जा रही है, जिससे आमजन में जल एवं जल स्रोतों के संरक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके।

शंभू का चयन मध्य प्रदेश पुलिस में होना उनके परिश्रम की सार्थकता और दृढ़ निश्चय का प्रतीक

विदिशा (निप्र)। मध्य प्रदेश के विदिशा जिले की तहसील कुरवाई से उभरकर आए आईटीआई के प्रशिक्षणरत छात्र शंभू रैकवार की सफलता केवल एक उपलब्धि नहीं, बल्कि अथक परिश्रम और अटूट संकल्प की प्रेरक गाथा है। शंभू एक साधारण परिवार से संबंध रखते हुए भी असाधारण सपनों को अपने हृदय में संजोए हुए थे। सीमित संसाधनों और अनेक चुनौतियों के बावजूद उन्होंने कभी अपने लक्ष्य से ध्यान नहीं भटकने दिया। उनके मन में एक ही सपना था वर्दी पहनकर समाज और राष्ट्र की सेवा करना। आईटीआई कुरवाई में प्रशिक्षणरत शंभू ने, न केवल तकनीकी दक्षता, बल्कि अनुशासन और आत्मविश्वास को अपने व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बना लिया। कठिनाइयाँ उनके मार्ग में बार-बार आईं, परंतु हर बाधा ने उन्हें और अधिक दृढ़ बनाया।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत अबगांवखुर्द, टिमरनी व खिरकिया में सामूहिक विवाह कार्यक्रम सम्पन्न

हरदा (निप्र)। प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी 'मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना' के तहत सोमवार को जिले के विभिन्न स्थानों पर आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन में कुल 200 जोड़े परिणय सुत्र में बंधे। इस दौरान जनपद पंचायत हरदा द्वारा ग्राम अबगांवखुर्द में 29 जोड़े व नगर पालिका परिषद टिमरनी द्वारा कृषि उपज मण्डी टिमरनी में 151 जोड़ों का सामूहिक विवाह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसी प्रकार नगर परिषद खिरकिया द्वारा 20 जोड़ों को सामूहिक निकाह कार्यक्रम आयोजित किया गया। टिमरनी के कृषि उपज मंडी प्रांगण में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना अंतर्गत 151 जोड़ो का सामूहिक विवाह समारोह पूरी रीति नीति एवं विधि विधान से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में रैन बसेरा रोड़ से घोड़े, बग्गी पर सवार होकर निकले दूल्हे राजाओं एवं उनके परिजनों ने बारात में हर्षोल्लास के साथ सामूहिक नृत्य किया तथा कार्यक्रम स्थल के मुख्य द्वार पर विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारीयो ने बारातियों का पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से पूर्व विधायक श्री संजय शाह, नगर परिषद अध्यक्ष श्री देवेंद्र भारद्वाज एवं पार्षद सुनील दुबे ने कार्यक्रम को संबोधित किया तथा नवविवाहित दंपत्तियों को सफल दांपत्य जीवन की शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में समाज सेवियों व जनप्रतिनिधियों ने नवविवाहित दंपत्तियों को उपहार भी वितरित किये। इस दौरान अतिथियों ने वर-वधु को विवाह प्रमाण पत्र एवं राशि के स्वीकृति पत्र प्रदान किए गए।

इस अवसर पर समाजसेविका श्रीमती शैलजा शाह, नगर परिषद उपाध्यक्ष श्री राजा कौशल, भाजपा जिला उपाध्यक्ष श्री विनीत गीते, भाजपा जिला मंत्री श्रीमति निशा दुबे, भाजपा मंडल अध्यक्ष श्री अतुल बारंगे, श्री बलराम डूडी, एसडीएम श्री संजीव कुमार नागू, तहसीलदार, थाना प्रभारी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी, पार्षदगण एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। नगर परिषद खिरकिया द्वारा आयोजित सामूहिक निकाह समारोह में 20 जोड़े परिणय सुत्र में बंधे। इस दौरान विधायक डॉ. आर.के. दोगने, पूर्व कृषि मंत्री श्री कमल पटेल तथा जनपद अध्यक्ष श्रीमती रानू दशरथ पटेल सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने नव दम्पत्तियों को आशीर्वाद प्रदान किया। इस दौरान अतिथियों ने वर-वधु को विवाह प्रमाण-पत्र तथा राशि के स्वीकृति पत्र भी प्रदान किये। जनपद पंचायत हरदा द्वारा ग्राम अबगांव खुर्द में आयोजित सामूहिक विवाह कार्यक्रम में 29 जोड़े परिणय सुत्र में बंधे। इस अवसर पर जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों ने नवदम्पत्तियों को आशीर्वाद प्रदान किया तथा विवाह प्रमाण-पत्र व राशि के स्वीकृति पत्र प्रदान किये।

9 प्रकार के नवाचारों को मिला मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार

लोक सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए नवाचार जरूरी : मंत्री कश्यप

भोपाल (नप्र)। सिविल सेवा दिवस समारोह-सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री श्री चैतन्य काश्यप ने कहा है कि लोकहित कार्यों के बेहतर परिणामों के लिए लोक सेवाओं की गुणवत्ता में निरंतर सुधार होते रहना चाहिए। जिन्होने लोक सेवा का संकल्प लिया है उन्हें गहन चिंतन और निरंतर आत्मविश्लेषण की आवश्यकता होती है। मंत्री श्री काश्यप मंगलवार को आसीवीपी नरोन्हा प्रशासन अकादमी में आयोजित सिविल सेवा दिवस समारोह को संबोधित कर रहे थे।

● मप्र के ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉडल को अन्य राज्यों ने अपनाया

मंत्री श्री काश्यप ने कहा कि लोक सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए नवाचार की आवश्यकता होती है। लोक महत्व की सेवाओं तक सभी हितग्राही लोगों की पहुंच आसान होना चाहिए। उन्होने भारतीय सिविल सेवा की स्थापना में सरदार वल्लभ भाई पटेल के योगदान का स्मरण करते हुए कहा कि भारत जैसे विविधताओं वाले देश में सिविल सेवा की स्थापना एक अभूतपूर्व कार्य था। उन्होने कहा कि भारत की सिविल सेवा हर प्रकार से मजबूत है। वास्तविक अर्थ में इसका स्टील फ्रेम है। उन्होने कहा कि कोरोना संकट में कई देशों में प्रशासनिक सेवाओं के तंत्र चरमरा गये थे लेकिन भारत में पूरी दक्षता और क्षमता से सिविल सेवा तंत्र ने काम किया और सेवाएं दी। उन्होने कहा कि योग्यता, संस्कार और समर्पण के संगम से यह संभव हो पाया।

मंत्री श्री काश्यप ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व और मार्गदर्शन में विकसित भारत के निर्माण में मध्यप्रदेश निरंतर अपना योगदान देने के लिए तैयार है। आज मध्यप्रदेश बीमारू राज्य की श्रेणी से बाहर आकर विकासशील प्रदेश बन चुका है और तेजी से विकास कर रहा है। उन्होंने कहा कि जन सुनवाई जैसी प्रशासनिक व्यवस्थाएं प्रभावी सिद्ध हुई हैं।

मंत्री श्री काश्यप ने वर्ष 2024-25 के लिए नागरिक सेवा, शिक्षा एवं मानव संसाधन, सामाजिक समावेश और स्वास्थ्य एवं पोषण सेवा श्रेणियों में नवाचार और उत्कृष्ट सेवाओं के लिये नौ विभागों के अधिकारी-कर्मचारी और मार्गदर्शी लोकसेवकों को मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया।

मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने लोक सेवकों को बधाई देते हुए कहा कि लोक सेवा दिवस आत्मपरीक्षण कर नये संकल्पों के साथ आगे बढ़ने का अवसर है। उन्होने कहा कि साढ़े नौ लाख अधिकारी-कर्मचारी आई गाट पोर्टल पर रजिस्टर हुए यह अत्यंत सराहनीय है। उन्होने कहा कि भूमिका आधारित प्रशासन प्रभावी होगा। मध्यप्रदेश 490 कोर्स के साथ अन्य प्रदेशों से आगे है। उन्होंने सभी अधिकारी-कर्मचारी को बधाई दी। लोक सेवाओं के प्रदाय की गारंटी जैसी मध्यप्रदेश की पहल को अन्य प्रदेशों ने लागू किया। प्रदेश में नीति निर्माण प्रक्रिया में प्रशासन तंत्र की भूमिका सहयोगकर्ता की है। मुख्य सचिव श्री जैन ने कहा कि प्रशासनिक नियमों और नीतियों के क्रियान्वयन में नवाचारी पहल से प्रभावी परिणाम मिलते हैं। समस्याओं के प्रभावी समाधान मिलते हैं जो लंबे समय तक प्रभावी रहते हैं। उन्होने लोक सेवकों से आग्रह किया कि वे अपने कार्यव्यवहार में लोकहित को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।

नवाचारों के लिए मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार

नवाचारों के लिए मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार में प्रत्येक को एक लाख रूपये की राशि और प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। नागरिक सेवा प्रदाय सूचना प्रौदयोगिकी एवं सुशासन श्रेणी में गैर वन भूमि एवं जंगल से दूरी के प्रमाण पत्र ऑनलाईन जारी करने हेतु सॉफ्टवेयर का विकास, नवीनीकृत राजस्व अभिलेखागार एवं डिजिटल रिकॉर्ड लोकेशन प्रणाली, सामुदायिक पुलिसिंग को सशक्त बनाने हेतु पुलिस चौपाल अभियान, बजट साहित्य के साथ नवाचार के रूप में वित्त विभाग द्वारा मेरा बजट पुस्तिका का प्रकाशन को पुरस्कृत किया गया। शिक्षा एवं मानव संसाधन विकास श्रेणी में रोचक सहायक अधिगम सामग्री के माध्यम से शिक्षण कार्य, सामाजिक समावेश एवं सशक्तीकरण श्रेणी में शक्ति दीदी योजना अंतर्गत आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को रोजगार दिलाने का कार्य, श्रम संबंधी अर्धन्यायिक प्रकरणों के निराकरण के लिये लेबर केसेस मैनेजमेंट सिस्टम पोर्टल, सुपर-100 योजना में विदयार्थियों का वृहद स्तर पर जेईई और नीट में चयन, स्वास्थ्य एवं पोषण श्रेणी में मातृ-मृत्यु एवं शिशु मृत्यु दर करने में परिणाममूलक कार्य के लिये पुरस्कार दिये गये ।

मप्र बना मॉडल- क्षमता विकास आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री आदिल जैनुलभाई ने कर्मचारी से कर्मयोगी विषय पर व्याख्यान देते हुए बताया कि अधिकारियों-कर्मचारियों की दक्षता बढ़ाने और क्षमता निर्माण में मध्यप्रदेश ने देश में प्रशंसनीय कार्य किया है। उन्होने कहा कि 50 से ज्यादा विभागों की क्षमता निर्माण कार्ययोजनाएं बन चुकी हैं और 490 से ज्यादा हिन्दी में कोर्स आईगाट पोर्टल पर उपलब्ध है। अब अन्य राज्य भी मध्यप्रदेश में ऑनलइन ट्रेनिंग मॉडल अपना रहे हैं। उन्होने कहा कि लोक सेवकों को निरंतर सीखते रहने की आवश्यकता है। उन्होने कहा कि टेक्नॉलाजी के आने और निरंतर परिवर्तनशील होने से कार्य की गति भी बढ़ गई है। इसके लिये एआई टूल्स का उपयोग अब जरूरी हो गया है। मंत्री श्री काश्यप ने कहा कि अब कार्य की आवश्यकता अनुसार प्रशिक्षण पाठयक्रम तैयार किए जा सकते हैं। इस प्रकार सीखने की प्रक्रिया भी तेज हो गई है। विकसित भारत के लिए सीखना जरूरी हो गया है। उन्होने कहा कि सभी शासकीय अधिकारी-कर्मचारी को रोजाना 15 मिनट आईगाट पोर्टल का उपयोग करना चाहिए। कार्यक्रम में साधना सप्ताह के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विभागों को पुरस्कृत किया गया। दस हजार से अधिक लोकसेवकों की श्रेणी में उत्कृष्ट प्रदर्शन में प्रथम स्थान पर जनजातीय कार्य विभाग, द्वितीय स्थान पर उच्च शिक्षा विभाग और तृतीय स्थान पर स्कूल शिक्षा विभाग को पुरस्कृत किया गया।

टैंकर ने कार को टक्कर मारी 4 लोगों की मौत, 3 घायल

बड़वानी (नप्र)। बड़वानी में जुलवानिया टोल प्लाजा के पास तेज रफ्तार टैंकर ने कार को सामने से टक्कर मार दी। हादसे में 3 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। एक ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया, 3 घायल हैं। सभी बारात में शामिल होने के बाद लौट रहे थे। हादसे में कार बुरी तरह टूट-फूट गई है। पुलिस इसमें फंसे लोगों को करीब एक घंटे की मशक्कत के बाद निकाल पाई।

इनकी गई जान

सचिन गोकुल वास्कले (25) निवासी पटेलपुरा साकड़, प्रद्युम्न पिता गुलीचंद सहते (25) निवासी सालखेड़ा, पप्पू पिता हीरालाल (29) निवासी लिम्बई, आकाश पिता दयाराम (25) निवासी रालामंडल

ये हुए घायल

सुरेश मांगीलाल (28) निवासी देवझिरी, सोहन झाबर (28) निवासी सालखेड़ा, यशवंत सुपड़िया (30) निवासी जलगौन।

डीजल लेकर जुलवानिया से लौट रही थी कार

प्राथमिक जानकारी के मुताबिक, जलगौन से एक बारात राजपुर आई थी। इसमें शामिल एक गाड़ी का डीजल खत्म हो गया। इसमें सवार युवक दूसरी कार से डीजल लेने जुलवानिया गए थे। लौटते समय टोल प्लाजा के पास खरगोन की तरफ से आ रहे तेज रफ्तार टैंकर ने उनकी कार को सामने से टक्कर मार दी। सूचना मिलते ही जुलवानिया थाना पुलिस मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों की मदद से कार में फंसे लोगों को बाहर निकाला। घायलों को एम्बुलेंस से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र जुलवानिया में भर्ती कराया गया।

टैंकर छोड़कर भागा ड्राइवर, तलाश रही पुलिस- हादसे में गंभीर रूप से घायल हुए तीन लोगों को प्राथमिक इलाज के बाद बड़वानी जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। जहां डॉक्टरों की टीम उनका इलाज जारी है।पुलिस ने बताया कि हादसे के बाद ड्राइवर टैंकर छोड़कर भाग गया। पुलिस ने टैंकर जब्त कर लिया है। फरार ड्राइवर की तलाश की जा रही है।

सिस्टम से नाराज भाजपा पार्षद ने भोपाल में उठाया कचरा

कहा-स्वास्थ्य अधिकारी से कई बार कहा, सुनवाई नहीं तो खुद ही फेंका

भोपाल (नप्र)। भोपाल के वार्ड-48 से भाजपा पार्षद अरविंद वर्मा ने सिस्टम से नाराज होकर मंगलवार को खुद कचरा फेंका। उन्होंने तगारी में कचरा उठाया और फिर उसे गाड़ी में डाला। उनका कहना था कि स्वास्थ्य अधिकारी को सुबह से दोपहर तक कई बार कहा, लेकिन सुनवाई नहीं हुई।

पार्षद वर्मा ने बताया, वार्ड के प्रमुख इलाके शाहपुरा स्थित अजय नगर में बीती रात एक शादी समारोह था। जिसका कचरा पड़ा था। इसे उठाने के लिए स्वास्थ्य अधिकारी भावना पटेरिया और सफाई दरोगा शेख उवैस को मंगलवार सुबह से कॉल करता रहा, लेकिन उन्होंने कोई सुनवाई नहीं की। मजबूरन दोपहर 2 बजे उन्हें ही मोर्चा संभालना पड़ा, क्योंकि कचरे की वजह से राहगीरों का गुजरना मुश्किल हो रहा था। उनकी परेशानी को देखते हुए खुद ही कचरा साफ करना तय किया।

रायसेन में चलती बस में लगी आग यात्रियों ने कूदकर बचाई जान

50 यात्रियों से भरी स्लीपर कोच में मच गई थी अफरा-तफरी

रायसेन (नप्र)। रायसेन में मंगलवार शाम करीब 4 बजे इंदौर से सागर जा रही एक स्लीपर कोच बस में अचानक आग लग गई। घटना सेहतगंज के पास हुई, जहां बस के अगले हिस्से से लपटें उठती देख यात्रियों में हड़कंप मच गया। चालक ने तुरंत बस को सड़क किनारे रोका, जिससे सभी यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकलने का मौका मिल गया। बस में करीब 50 यात्री सवार थे। आग लगते ही बस के अंदर तेजी से धुआं भर गया, जिससे यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। लोग दरवाजे खोलकर तुरंत बाहर निकले और संभावित धमाके के डर से करीब 200 मीटर दूर जाकर खड़े हो गए।

साधु ने वकील पर किया त्रिशूल से हमला

सिग्नल पर रुकी कार, गाली-गलौज के बाद वार, बचाव में हाथ आगे किया तो हथेली में लगा त्रिशूल

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बागसेवनिया इलाके में सोमवार दोपहर एक साधु ने जिला न्यायालय में पदस्थ अपर लोक अभियोजक नारायण सिंह ठाकुर पर त्रिशूल से हमला कर दिया। घटना मिसरोद स्थित बापू की कुटिया के सामने लाल सिग्नल पर उस वक्त हुई, जब वे परिवार के साथ कार से घर लौट रहे थे।

फरियादी के मुताबिक जैसे ही उन्होंने सिग्नल पर अपनी कार रोकी, तभी एक साधु वहां पहुंचा और गालियां देने लगा। विरोध करने पर आरोपी ने त्रिशूल से कार के सामने के कांच पर वार कर दिया। इसके बाद वह ड्राइवर साइड आया और साइड विंडो पर भी त्रिशूल मारकर कांच तोड़ दिया। घटना के दौरान आरोपी ने दोबारा हमला किया, जिसे रोकने के लिए वकील ने हाथ आगे किया। इस दौरान त्रिशूल उनकी दाहिनी हथेली में घुस गया, जिससे वे घायल हो गए और खून बहने लगा। आरोपी ने जान से मारने की धमकी भी दी। घटना के वक्त वकील की पत्नी, बेटा समेत मौके पर मौजूद अन्य लोगों ने बीच-बचाव किया। आरोपी भागने की कोशिश कर रहा था, तभी पुलिस को सूचना दी गई और मौके पर पहुंची पुलिस ने उसे पकड़ लिया। पुलिस पूछताछ में आरोपी ने अपना नाम अरविंद चौधरी बताया है। बागसेवनिया थाना पुलिस ने मामले में विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

ओले-बारिश से प्राकृतिक चक्र पर भी प्रभाव

समय से पहले आ रहीं पत्तियां, क्लाइमेट चेंज का असर, फूड सिक्योरिटी पर खतरा

भोपाल (नप्र)। क्लाइमेट चेंज के चलते मौसम का संतुलन तेजी से बिगड़ रहा है, जिसका सीधा असर अब प्रकृति और इंसानी जीवन पर दिखाई देने लगा है। सबसे बड़ा खतरा फूड सिक्योरिटी पर मंडरा रहा है, क्योंकि पेड़-पौधों का जीवन चक्र गड़बड़ा गया है। समय से पहले पत्तियां आना और मौसम के अनुसार पौधों का व्यवहार बदल जाना प्राकृतिक चक्र के साथ एक बड़ा 'धोखा' है।

विशेषज्ञों के अनुसार, यदि यह स्थिति जारी रही तो आने वाले समय में पौधों की वृद्धि और उत्पादन दोनों प्रभावित होंगे, जिसका असर खाद्यान्न उपलब्धता पर पड़ेगा। असर अब सिर्फ पर्यावरण ही नहीं बल्कि स्वास्थ्य और पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर भी साफ नजर आने लगा है।

पेड़-पौधों का बिगड़ा जीवन चक्र, समय से पहले आ रहीं पत्तियां

पर्यावरण के विशेषज्ञ सुभाष सी पांडे ने जंगलों का उदाहरण देते हुए बताया कि सागौन जैसे पेड़ गर्मियों में पत्तियां गिरा देते हैं, लेकिन हाल की बारिश के कारण उन्हें भ्रम हो गया कि मानसून आ गया है। इसके चलते उनमें समय से पहले नई पत्तियां और कलियां आ गईं।

यह प्राकृतिक चक्र के साथ बड़ा 'धोखा' है, जो आगे चलकर पौधों की वृद्धि और

उत्पादन को प्रभावित करेगा। उन्होंने बताया कि पास में ही खारी गांव के नजदीक उन्होंने कई सागौन के पेड़ों में उस समय नई पत्तियां देखीं जब वह पहले से ही पतझड़ हो चुके थे। यह असर अप्रैल माह में हुई बारिश के कारण ही देखा गया है।

फूड सिक्योरिटी पर मंडराता खतरा

पांडे के अनुसार, यदि यही स्थिति बनी रही तो आने वाले समय में सबसे बड़ा संकट 'फूड इनसिक्योरिटी' का होगा। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि अगर समय पर गर्मी नहीं पड़ेगी तो गेहूं की फसल प्रभावित होगी और अगर बारिश समय पर नहीं होगी तो अन्य फसलें भी प्रभावित होंगी।

ओलावृष्टि और बारिश से सब्जियों को नुकसान

पांडे ने हाल की घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि कुछ ही दिनों की तेज बारिश और ओलावृष्टि से सब्जियों की फसलें नष्ट हो गईं। कई जगहों पर सब्जियां गल गईं, जिससे बाजार में आपूर्ति कम हो गई और कीमतें बढ़ गईं।

ट्रांसमिशन लाइन मेंटेनेंस स्टॉफ अर्जुन कारले एवं आउटसोर्स कर्मी शिवपाल निकुम पुरस्कृत

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी छैगांव में पदस्थ ट्रांसमिशन लाइन मेंटेनेंस स्टॉफ अर्जुन कारले एवं आउटसोर्स कर्मी शिवपाल निकुम को उनके उत्कृष्ट एवं असाधारण कार्य के लिए मुख्यालय जबलपुर में सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। दीपावली के दिन 220 केवी छैगांव-खंडवा सर्किट क्रमांक-2 में अचानक ब्रेकडाउन हो गया था, जिसके कारण त्यौहार के अवसर पर खंडवा की विद्युत आपूर्ति बाधित होने की आशंका उत्पन्न हो गई थी। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए लाइन स्टॉफ अर्जुन कालरे एवं आउटसोर्स कर्मी शिवपाल निकुम ने तत्परता और दक्षता का परिचय देते हुए फेल हुई डिस्क इंसुलेटर को मात्र 1 घंटे 26 मिनट में बदलकर ब्रेकडाउन को शीघ्रता से दुरुस्त किया। दोनों के द्वारा जिम्मेदारी पूर्वक की गई कार्रवाई से लाइन को न्यूनतम संभव समय में पुनः ऊर्जीकृत किया जा सका और खंडवा क्षेत्र में दीपावली के दौरान विद्युत आपूर्ति निर्बाध बनी रही। श्री अर्जुन और श्री शिवपाल के इस सराहनीय एवं उल्लेखनीय कार्य के लिए मुख्यालय जबलपुर में आयोजित एक विशेष समारोह में सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता एवं ट्रांसमिशन लाइन विशेषज्ञ श्री एन. जी. टिकेकर, प्रबंध संचालक श्री सुनील तिवारी ने उन्हें सिल्वर मेडल, प्रशस्ति पत्र एवं नगद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री ने जगद्गुरु आदि शंकराचार्य की जयंती पर किया नमन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अद्वैत वेदांत के प्रणेता, सांस्कृतिक एकता के सूत्रधार, महान दार्शनिक एवं रचनाकार जगद्गुरु आदि शंकराचार्य की जयंती पर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि जगद्गुरु आदि शंकराचार्य ने भारत की चारों दिशाओं में पवित्र मठों की स्थापना कर सनातन धर्म को पुनर्जीवित किया। उन्होंने ज्ञान, तर्क और भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित कर राष्ट्र को एक नई चेतना प्रदान की। जगद्गुरु आदि शंकराचार्य का संपूर्ण जीवन लोक कल्याण और सत्य के लिए सदैव समर्पित रहने की प्रेरणा देता रहेगा।

मेरी बेटी बेटों से कम नहीं, राजगढ़ में पिता ने घोड़ी पर बिठाकर निकाली बेटी की बिंदौरी, दुल्हन बोली- रानी जैसी हो रही फीलिंग

राजगढ़ (नप्र)। मध्य प्रदेश के राजगढ़ में एक पिता ने अपनी बेटी की शादी मिसाल की है। साथ ही यह साबित कर दिया है कि मेरी बेटी बेटों से कम नहीं है। राजगढ़ में पिता ने घोड़ी पर बिठाकर दुल्हन बेटी की बिंदौरी निकाली है। दुल्हन को घोड़ी पर देखकर लोग हैरान रह गए हैं। अभी तक यह यह रस्म दूल्हों के लिए होती थी।

घोड़ी पर घुमाया जाता है गांव- दरअसल, आम तौर पर शादी से कुछ दिन पहले गांव में बिंदौरी निकाली जाती है। पहले ये रस्म अधिकत्तर दूल्हों के लिए होती थी। जिसमें सजे-धजे रूप में घोड़ी पर दूल्हों का जुलूस निकालकर रिश्तेदार और दोस्त नाचते हुए उसे गांव में घुमाते हैं। लेकिन अब समाज में आए बदलाव के बाद अब बेटियों को भी बेटों से कम नहीं माना जा रहा है।

पूरे इलाके में हो रही है चर्चा- बदलते समय में राजगढ़ जिले के माचलपुर के डूंगरी गांव निवासी महेश पाटीदार ने अपनी बेटी शिवानी के विवाह के दौरान बिंदौरी निकाला है। साथ ही पूरे गांव में घोड़ी पर बैठकार जुलूस निकाला है। इस

बिंदौरी की चर्चा गांव ही नहीं बल्कि पूरे जिले में हो रही है।

शिवानी पाटीदार, दुल्हन ने कहा कि मेरे पिता मेरा अभिमान हैं, उन्होंने मेरी शादी में कोई कमी नहीं रखी। उन्होंने दूल्हे की ही तरह घोड़ी, बैंड-बाजे का प्रबंध किया। साथ ही सभी तरह के पकवान बनवाए। मेरे पिता ने लाडो की तरह मुझे बड़ा किया है और लाडो ही तरह विदा किया है।

रानी जैसा हुआ अनुभव- दुल्हन शिवानी पाटीदार ने बताया कि मेरे-माता पिता से मैं बेहद प्यार करती हूं। उन्होंने कोई कमी मेरी शादी में नहीं रखी। घोड़ी पर बैठकर प्रोसेशन निकालना भी अपने आप में सुखद अनुभव रहा। रानी जैसी फिलिंग मुझे वहां बैठकर आई है।

मेरी बेटी बेटों से कम नहीं- दुल्हन के पिता महेश पाटीदार ने बताया कि पहले बेटियों को बेटों से कम माना जाता है। लेकिन अब समय में तेजी से बदलाव हो रहा है। आज की बेटियां कंधे से कंधे मिलाकर बेटों की तरह आगे बढ़ रही हैं। मेरी बेटी को भी मैंने बेटे की तरह ही पाला है। वो मेरे लिए बेटों से कम नहीं हैं।

जमकर किया नृत्य- बिंदौरी के दौरान दुल्हन शिवानी पाटीदार सजी-धजी घोड़ी पर सवार हुई। इस दौरान बिंदौरी में शामिल रिश्तेदारों और अन्य लोगों ने डीजे और ढोल की थाप पर जमकर नृत्य किया। इसके वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं।